BAOU
Education for All

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ओपन यूनिवर्सिटी

(गुजरात सरकार द्वारा स्थापित)

NAAC ACCREDITED A++ GRADE 3.55/4

बी. ए. (ऑनर्स)

हिंदी कौशल संवर्धन पाठ्यक्रम

(स्किल एन्हांसमेंट कोर्स)

(HNDSEC-101)

अनुवाद और उसकी प्रविधि

स्वाध्याय का उजास

भारत के संविधान के निर्माता भारतरत्न बाबासाहेब अंबेडकर जी की पुण्य स्मृति में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग और डिस्टेंस एजुकेशन काउन्सिल की मान्यता के साथ गुजरात सरकार ने सन् 1994 ई. में अहमदाबाद में गुजरात के एकमात्र मुक्त विश्वविद्यालय डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ओपन यूनिवर्सिटी की स्थापना की. स्थापना के क्रम में यह देश की सातवीं ओपन यूनिवर्सिटी है. गुजरात राज्य के शैक्षिक गतिविधियों को तीव्रता प्रदान करते हुए यूनिवर्सिटी आज सन् 2025 में सर्टिफिकेट से लेकर पीएच.डी. तक विभिन्न स्तरों के लगभग 90 पाठ्यक्रमों के लिए प्रवेश आमंत्रित कर रही है.

बाबासाहेब अंबेडकर जी की जन्म शताब्दी के अवसर पर गुजरात सरकार ने यूनिवर्सिटी को एक सुगम शांत स्थान उपलब्ध कराया और आधुनिक सुविधाओं से लैस इमारतों के साथ यूनिवर्सिटी का अपना परिसर – 'ज्योतिर्मय परिसर' विकसित करने में सहायता दी. यूनिवर्सिटी प्रबंध मंडल के प्रत्येक सदस्य ने संपूर्ण समर्पण और लगन के साथ इस यूनिवर्सिटी को उस मुकाम पर पहुँचाने में अपना पूरा पूरा योगदान दिया है और आगे भी देते रहेंगे.

कहते हैं, शिक्षा वह निवेश है, जो बिना व्यवधान के निरंतर लाभ प्रदान करता है और लोगों के जीवन में गुणवत्ता का आधान करता है, बढ़ाता है. मैं स्वामी विवेकानंद जी के शिक्षा दर्शन का मूल यहाँ उल्लेखित करना चाहूँगी :

"हम ऐसी शिक्षा चाहते हैं, जो चरित्र का निर्माण करे, बौद्धिक शक्ति का वर्धन करे, मेधा का विस्तार करे और जिसके माध्यम से प्राप्तकर्ता अपने पैरों पर खड़ा हो सके."

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ओपन यूनिवर्सिटी अपने विद्यार्थियों को उनके द्वार पर ऐसी ही गुणवत्तापूर्ण कौशल और वास्तविक जीवन संकेंद्रित शिक्षा देने के प्रति कटिबद्ध है. गुजरात राज्य के बृहत्तर जन समुदाय को उच्च शिक्षा उपलब्ध कराने की दिशा में यूनिवर्सिटी सतत कार्यलीन है, जिससे वे आने वाली नित नयी चुनौतियों का सफलतापूर्वक सामना कर सकें और अपनी पूरी क्षमता के साथ समाज और राष्ट्र की उन्नति के लिए सन्नद्ध हो सकें.

अपने मुख्य आदर्श वाक्य **"स्वाध्यायः परमं तपः"** का अनुसरण करते हुए यूनिवर्सिटी विद्यार्थियों को समृद्ध पाठ्यचर्या उपलब्ध कराने में विश्वास रखती है. इसी आवश्यकता की पूर्ति के क्रम में यूनिवर्सिटी यह नवीन, अधिक सुस्पष्ट पाठ्यसामग्री लेकर उपस्थित हुई है, जिससे विद्यार्थियों की उनके विषय में बेहतर समझ बन सके. इसके माध्यम से यूनिवर्सिटी ने उन विद्यार्थियों के लिए संभावनाओं का विस्तार किया है, जिनके लिए नियमित पारंपरिक शिक्षा पद्धति के द्वार बंद हो चुके हैं. सभी विषयों में विद्यार्थियों की आवश्यकता के अनुरूप स्वाध्याय सामग्री निर्माण के लिए पाठ्यक्रम सलाहकार समिति के सदस्यों से आरंभ करते हुए, स्वाध्याय सामग्री लेखकों, विषय और भाषा परामर्शकों का एक समर्पित दल गठित किया गया है.

आज की डिजिटल दुनिया की गति से एकरूपता रखते हुए यूनिवर्सिटी ने स्वयं का एक डिजिटल मंच – ओमकार-ई (OMKAR-E) विकसित किया है, जो ICT (इन्फॉर्मेशन एंड कम्युनिकेशन टेक्नोलॉजीज़) के माध्यम से शिक्षा प्रदान करता है. जल्द ही योग, प्राकृतिक चिकित्सा और भारतीय शास्त्रीय नृत्य जैसे विषयों पर ऑनलाइन सर्टिफिकेट और डिप्लोमा पाठ्यक्रम भी यूनिवर्सिटी के माध्यम से उपलब्ध होंगे, जो वैकल्पिक विषय के रूप में चयनित किये जा सकेंगे.

अपने सभी प्रयासों के साथ डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ओपन यूनिवर्सिटी ज्ञान और शिक्षा का प्रमुख केंद्र बनने की प्रक्रिया में है और हम आपको इस पवित्र यज्ञ में सम्मिलित होकर डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर जी के समरस समाज निर्माण के स्वप्न को साकार करने के लिए आमंत्रित करते हैं.

प्रो. (डॉ.) अमी उपाध्याय

कुलपति

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ओपन यूनिवर्सिटी

अहमदाबाद

HNDSEC-101 : अनुवाद और उसकी प्राविधि

प्रधान संपादक :

प्रो. (डॉ.) योगेंद्र पारेख — निदेशक, स्कूल ऑफ़ ह्यूमैनिटीज़ एंड सोशल साइंसेज़, डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ओपन यूनिवर्सिटी, अहमदाबाद.

संपादक :

डॉ. अर्चना मिश्रा — असिस्टेंट प्रोफ़ेसर हिंदी, डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ओपन यूनिवर्सिटी, अहमदाबाद.

विषय समिति :

प्रो. अलोक गुप्त — (सेवानिवृत) प्रोफ़ेसर, हिंदी भाषा एवं साहित्य अध्ययन केंद्र, भाषा, साहित्य एवं सांस्कृतिक अध्ययन संकाय, गुजरात केंद्रीय विश्वविद्यालय, गाँधीनगर.

डॉ. ओम प्रकाश शुक्ल — एसोसिएट प्रोफ़ेसर हिंदी, गुजरात कॉलेज ऑफ़ आर्ट्स एंड कॉमर्स, अहमदाबाद.

डॉ. अर्चना मिश्रा — असिस्टेंट प्रोफ़ेसर हिंदी, डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ओपन यूनिवर्सिटी, अहमदाबाद.

इकाई लेखक :

डॉ. पार्वती गोसाईं — असिस्टेंट प्रोफेसर हिंदी, हिंदी स्नातकोत्तर विभाग, सरदार पटेल विश्वविद्यालय, वल्लभ विद्यानगर, आणंद.

डॉ. अर्चना मिश्रा — असिस्टेंट प्रोफ़ेसर हिंदी, डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ओपन यूनिवर्सिटी, अहमदाबाद.

डॉ. सुनिल परमार — असिस्टेंट प्रोफेसर हिंदी, म्युनिसिपल आर्ट्स एंड अर्बन बैंक साइंस कॉलेज, महेसाना.

डॉ. महारुद्र प्रताप सिंह चौहान — असिस्टेंट प्रोफेसर हिंदी, डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ओपन यूनिवर्सिटी, अहमदाबाद.

परामर्शक :

प्रो. अलोक गुप्त — (सेवानिवृत) प्रोफ़ेसर, हिंदी भाषा एवं साहित्य अध्ययन केंद्र, भाषा, साहित्य एवं सांस्कृतिक अध्ययन संकाय, गुजरात केंद्रीय विश्वविद्यालय, गाँधीनगर.

प्रो. दयाशंकर त्रिपाठी

डॉ. गार्गी शाह

आवरण सज्जा :

सुश्री मार्मी मकवाणा — ग्राफिक डिजाइनर, डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ओपन यूनिवर्सिटी, अहमदाबाद.

प्रकाशक : कुलसचिव, डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ओपन यूनिवर्सिटी, अहमदाबाद.

मुद्रक : साहित्य मुद्रणालय, अहमदाबाद

ISBN :

© अप्रैल, 2025 डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ओपन यूनिवर्सिटी, अहमदाबाद

सर्वाधिकार सुरक्षित. यह स्वाध्याय सामग्री डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ओपन यूनिवर्सिटी द्वारा मुक्त दूरस्थ शिक्षा के उद्देश्यों को केंद्र में रखते हुए विद्यार्थियों के स्वाध्याय के लिए तैयार की गयी है, जिसका सर्वाधिकार यूनिवर्सिटी के पास सुरक्षित है. इस स्वाध्याय सामग्री का पूर्ण या आंशिक रूप से किसी भी प्रकार डिजिटली या इलेक्ट्रॉनिकली पुनरुत्पादन डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ओपन यूनिवर्सिटी की लिखित अनुमति के बिना अवैध माना जायेगा.

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ओपन यूनिवर्सिटी, अहमदाबाद
(गुजरात सरकार द्वारा स्थापित)

बी. ए. (ऑनर्स)
स्किल इन्हेंसमेंट कोर्स (SEC)
अनुवाद और उसकी प्रविधि
(HNDSEC–101)

विषय सूची

इकाई संख्या	इकाई का नाम	पृ. सं.
1	अनुवाद : अर्थ, स्वरूप, प्रकृति, आवश्यकता और महत्व	5-11
2	अनुवाद के प्रकार	12-23
3	अनुवाद का महत्व और चुनौतियाँ	24-37
4	अनुवाद प्रक्रिया	38-43
5	अनुवाद की शैलियाँ	44-49
6	अनुवादक की योग्यता और सफल अनुवाद	50-58
7	सर्जनात्मक अनुवाद का एक नमूना 'कंकू'	59-73

इकाई 1 अनुवाद : अर्थ, स्वरुप, प्रकृति, आवश्यकता और महत्त्व

इकाई की रुपरेखा

1.1 उद्देश्य

1.2 प्रस्तावना

1.3 अनुवाद का अर्थ और स्वरुप

1.4 अनुवाद की प्रकृति

1.5 अनुवाद की आवश्यकता

1.6 अनुवाद का महत्त्व

1.7 सारबिन्दु

1.8 परीक्षोपयोगी प्रश्नावली

1.9 उपयोगी पाठ्य सामग्री

1.1 उद्देश्य

इस इकाई में अनुवाद का अर्थ, स्वरुप, प्रकृति आवश्यकता और महत्त्व के बारे में बताया गया है । इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

– अनुवाद के अर्थ और स्वरुप से परिचित हो सकेंगे ।

– अनुवाद की प्रकृति को समझ सकेंगे

– अनुवाद की आवश्यकता और महत्व को जान सकेंगे ।

– अनुवाद के महत्त्व को जान सकेंगे ।

1.2 प्रस्तावना

मौलिक रचना की तरह अनुवाद भी किसी भी देश या समाज के साहित्य और संस्कृति का दपर्ण होता हैं । व्यक्ति - व्यक्ति में परस्पर विचार विनिमय हेतु भाषा का जन्म हुआ । एक ही क्षेत्र में रहेनेवाले लोगों की भाषा एक जैसी होती है, लेकिन भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में रहनेवाले व्यक्तियों की भाषा भिन्न-भिन्न होती है । दो भिन्न भाषा भाषी लोगों के बीच विचारों का आदान - प्रदान करने के लिए अनुवाद की आवश्यकता है । अनुवाद की परंपरा प्राचीन है, परंतु आधुनिक युग में वैज्ञानिक प्रवृत्ति के परिणाम स्वरुप विश्व में परस्पर देशों के संपर्क बढ़ गये है । शैक्षिक प्रगति के परिणाम स्वरुप व्यक्ति का बहुभाषी बनना अति आवश्यक है ।

1.3 अनुवाद का अर्थ और स्वरुप

‘अनुवाद’ शब्द की उत्पत्ति संस्कृत व्याकरण के अनुसार ‘वद्’ धातु से हुई है, जिसका अर्थ ‘बोलना’ या ‘कहना’ होता है । ‘वद्’ धातु के साथ ‘धग’ प्रत्यय जुडने से वह भाववाचक संज्ञा ‘वाद’ बन जाता है । ‘वाद’ का अर्थ ‘कहने की क्रिया’ अथवा ‘कही हुई बात’ होता है । ‘वाद’ से पहले ‘अनु’ उपसर्ग जोड़ने से ‘अनुवाद’ शब्द बनता है । ‘अनु’ का अर्थ है - बाद में या पीछे ।

हिन्दी भाषा में अनुवाद का अर्थ है - एक भाषा में कही हुई बात को दूसरी भाषा

में_ कहना_ ।_ अनुवाद_ शब्द_ के_ लिए_ अंग्रेजी_ में Translation और_ फारसी_ में_ ‘तर्जुमा’_ शब्द चलते_ हैं_ ।_ जिस_ भाषा_ से_ अनुवाद_ किया_ जाता_ है_ उसे_ स्रोत_ भाषा_ कहा_ जाता_ है_ और_ जिस भाषा_ में_ अनुवाद_ किया_ जाता_ है,_ उसे_ ‘लक्ष्य’_ भाषा_ कहते_ है_ ।_ ‘अनुवाद’_ भाषाओं_ के_ बीच सेतु_ का_ काम_ करता_ है_ ।

स्वरुप_ :

अनुवाद_ मूलतः_ एक_ सृजन_ क्रिया_ है_ ।_ अनुवादक_ पहले_ मूलकृति_ के_ भाव_ को_ आत्मसात करता_ है_ ।_ यहाँ_ तक_ मूल_ कृति_ की_ भूमिका_ होती_ है_ ।_ भाव_ एक_ बार_ आत्मसात_ कर_ लेने से_ वह_ भाव_ अनुवादक_ के_ हो_ जाते_ है_ ।

विद्वानों_ में_ अनुवाद_ के_ स्वरुप_ को_ लेकर_ वैचारिक_ मतभेद_ देखने_ मिलता_ है_ ।_ कुछ_ विद्वान अनुवाद_ के_ स्वरुप_ के_ अंतर्गत_ उसकी_ प्रकृति_ को_ अन्तः_ निहित_ मानते_ है_ तो_ भाषाविज्ञानी_ अनुवाद के_ प्रकार_ को_ उसका_ स्वरुप_ मानते_ हैं_ ।_ अनुवाद_ को_ हम_ अगर_ सही_ रुप_ में_ देखे_ तो डॉ._ रवीन्द्रनाथ_ श्रीवास्तव_ का_ जो_ मत_ है_ उससे_ सहमत_ हो_ सकते_ हैं_ ।_ उन्होंने_ अनुवाद_ के स्वरुप_ को_ स्पष्ट_ करने_ के_ लिए_ उसे_ दो_ वर्गों_ में_ बाँटा_ है_ :

(1) अनुवाद_ का_ सीमित_ स्वरुप

(2) अनुवाद_ का_ व्यापक_ स्वरुप

अनुवाद_ के_ सीमित_ स्वरुप_ के_ अंतर्गत_ दो_ आयाम_ है_ :_ (1)_ पाठधर्मी_ (2)_ प्रभावधर्मी । अनुवाद_ के_ सीमित_ रुप_ में_ एक_ भाषा_ में_ निहित_ अर्थ_ को_ लक्ष्य_ भाषा_ में_ प्रस्तुत_ किया_ जाता है_ ।_ ‘पाठधर्मी’_ अनुवाद_ के_ केन्द्र_ में_ स्रोत_ भाषा_ पाठ_ है_ ।_ इसप्रकार_ के_ अनुवादक_ से_ अपेक्षा की_ जाती_ है_ कि_ वह_ मूल_ कथ्य_ के_ प्रति_ ईमानदार_ रहे,_ और_ अनुवाद_ करते_ समय_ मूल_ कथ्य की_ आत्मा_ को_ सुरक्षित_ रखें_ ।_ इस_ प्रकार_ के_ अनुवाद_ के_ अंतर्गत_ कार्यालयी,_ तकनीकी,_ तथ्यात्मक विषय_ आते_ हैं_ ।_ ‘प्रभावधर्मी’_ अनुवाद_ में_ स्रोत_ भाषा_ पाठ_ के_ प्रभाव_ को_ पकड़ने_ का_ प्रयत्न किया_ जाता_ है_ ।_ साहित्यिक_ विषयों_ में_ इस_ प्रकार_ का_ अनुवाद_ होता_ है_ ।

अनुवाद_ के_ व्यापक_ स्वरुप_ के_ अंतगर्त_ अनुवाद_ के_ अर्थ_ का_ प्रतीकातरण_ होता_ है_ ।_ इसको तीन_ आधारों_ पर_ वर्गीकृत_ किया_ जाता_ है_-_ (1)_ अंतःभाषिक_ अनुवाद_ (2)_ अंतर_ भाषिक_ अनुवाद (3)_ अंतर_ प्रतीकात्मक_ अनुवाद_ ।_ अंतर्भाषिक_ अनुवाद_ एक_ ही_ भाषा_ का_ अनुवाद_ होता_ है । अंतरभाषिक_ अनुवाद_ एक_ भाषा_ से_ दूसरी_ भाषा_ में_ अनुवाद_ किया_ जाता_ है_ ।_ अंतर_ प्रतीकात्मक अनुवाद_ में_ भाषा_ के_ लिखित_ प्रतीकों_ को_ दृश्य_ माध्यम_ में_ प्रकट_ किया_ जाता_ है_ ।

अनुवाद_ दो_ भाषाओं_ के_ बीच_ सेतु_ निर्माण_ का_ कार्य_ करता_ है_ ।_ रूढ़_ अर्थ_ में_ कहे_ तो अनुवाद_ दो_ भाषाओं_ का_ संवाद_ है_ ।_ स्रोत_ भाषा_ के_ बाद_ लक्ष्य_ भाषा_ में_ संवाद_ है_ ।

1.4 अनुवाद_ की_ प्रकृति_ :

विद्वानों_ में_ अनुवाद_ की_ प्रकृति_ को_ लेकर_ पर्याप्त_ मतभेद_ देखने_ मिलता_ है_ ।_ विद्वानों का_ एक_ वर्ग_ अनुवाद_ को_ विज्ञान_ के_ रूप_ में_ देखता_ है,_ तो_ दूसरा_ कला_ के_ रूप_ में_ तो तीसरा_ वर्ग_ शिल्प_ के_ रूप_ में_ ।_ इसीलिए_ अनुवाद_ की_ प्रकृति_ को_ लेकर_ प्रश्न_ उठता_ है_ कि : (1) क्या_ अनुवाद_ विज्ञान_ है_ ? (2) क्या_ अनुवाद_ कला_ है_ ? (3) क्या_ अनुवाद_ शिल्प_ है ?

(1) **अनुवाद_ :_ विज्ञान_ के_ रूप_ में_ :**

अनुवाद_ को_ विज्ञान_ मानने_ वालों_ में_ महत्त्वपूर्ण_ योगदान_ नोइडा_ का_ है_ ।_ नोइडा_ के_ अनुसार अनुवाद_ प्रायोगिक_ भाषाविज्ञान_ के_ अन्तर्गत_ स्वीकृत_ है_ ।_ भाषा_ वैज्ञानिक_ के_ अनुवाद_ प्रक्रिया में_ पहले_ स्रोत_ भाषा_ के_ लक्ष्य_ का_ द्विकोडीकरण_ होता_ है_ ।_ उसके_ बाद_ उसका_ लक्ष्य भाषा_ में_ पुनः_ कोडीकरण_ किया_ जाता_ है_ ।_ यह_ प्रक्रिया_ वैज्ञानिक_ है_ ।_ इसमें_ नोइडा

ने_ अनुवाद_ कार्य_ के_ तीन_ चरण_ की_ बात_ की_ है_ - (1) अनुवाद_ द्वारा_ स्रोत_ भाषा_ के भावों_ का_ ग्रहण_ (2) उसका_ मानसिक_ रुप_ से_ विश्लषेण_ और_ भाषान्तरण_ (3) लक्ष्य_ भाषा में_ उसका_ समायोजन_ एवं_ उसकी_ अभिव्यक्ति_ अनुवाद_ को_ विज्ञान_ मानने_ में_ कुछ_ निश्चित नियमों_ को_ मानकर_ चलना_ पड़ता_ है_: (1) पहली_ बात_ यह_ है_ कि_ अनुवादक_ को_ तटस्थ होकर,_ ईर्ष्या_ द्वेष_ से_ मुक्त_ होकर,_ सत्यनिष्ठा_ के_ साथ_ अनुवाद_ करना_ चाहिए_।

(2) अनुवादक_ को_ स्रोत_ भाषा_ में_ व्यक्त_ विचारों_ को_ समझने_ के_ लिए_ कोश,_ व्याकरण आदि_ 'उपकरणों'_ का_ आधार_ लेना_ पड़ता_ है_।

(3) अनुवादक_ को_ स्रोत_ भाषा_ और_ लक्ष्य_ भाषा_ की_ ध्वनियों,_ शब्दों,_ रुपों_ और_ रचनाओं की_व्यवस्था_को_ध्यान_में_रखकर_ही_अनुवाद_करना_चाहिए_।_भाषा_वैज्ञानिक_भोलानाथ तिवारी_ का_ मानना_ है_ कि_ -_ "अनुवाद_ करने_ की_ पूर्व_ पीठिका,_ जो_ अनुवाद_ के मस्तिष्क_ में_ चिन्तन_ के_ रुप_ में_ होती_ है,_ वह_ पूर्णतः_ व्यवस्थित_ एवं_ वैज्ञानिक_ प्रक्रिया है,_ यदि_ ऐसा_ न_ होता,_ तो_ मशीनी_ अनुवाद_ सम्भव_ ही_ नहीं_ होता_।"

(2) **अनुवाद_ :_ कला_ के_ रूप_ में :**

कला_ का_ शाब्दिक_ अर्थ_ "कौशल"_ या_ "विद्या"_ होता_ है_।_ "नालंदा_ विशाल_ शब्द_ सागर" में_ कला_ का_ अर्थ_ "किसी_ कार्य_ को_ भलीभाँति_ करने_ का_ कौशल,_ किसी_ कार्य_ को_ नियम तथा_ व्यवस्था_ के_ अनुसार_ करने_ का_ कौशल_ अथवा_ विद्या"_ है_।

अनुवाद_ केवल_ वैज्ञानिक_ सिद्धान्त_ नहीं_ है,_ उसके_ लिए_ अनुवादक_ की_ कला_ भी_ आवश्यक है_।_ क्योंकि_ अनुवाद_ कलाकार_ की_ सर्जना_ का_ पुनः_ सर्जन_ है_।_ कलाकार_ के_ लिए_ प्रतिभा की_ आवश्यकता_ होती_ है_ और_ वह_ प्रतिभा_ सहज_ होती_ है_।_ अनुवादक_ भी_ कलाकार_ होता है_।_ मूल_ कलाकार_ अपने_ विचारों,_ भावों,_ कल्पनाओं_ की_ अपनी_ कला_ में_ अभिव्यक्त करता_ है_ और_ अनुवादक_ उसका_ पुनः_ सर्जन_ करता_ है_।_ पुनः_ सर्जन_ करना_ सरल_ कार्य नहीं_ है_।_ इसके_ लिए_ अनुवादक_ में_ प्रतिभा_ का_ होना_ आवश्यक_ हैं_।_ अनुवादक_ के_ व्यक्तित्व में_ अनुवाद-कला_ होती_ हैं_।_ यह_ कला_ सहज_ होती_ है_।_ डॉ._ रीतारानी_ पालीवालने_ कहा है_ कि_ "अनुवादक_ इस_ अर्थ_ में_ कलाकार_ है_ कि_ वह_ कलाकार_ की_ आत्माभिव्यक्ति_ को अपने_ में_ उतारता_ है,_ उससे_ पुनः_ आत्म_-_ साक्षात्कार_ करता_ है_ और_ तटस्थ_ भाव_ से_ उनको पुनः_ अभिव्यक्त_ कर_ देता_ है_।_ इस_ अर्थ_ में_ अनुवादक_ का_ व्यक्तित्व_ पुनरुत्पादक_ कलाकार का_ व्यक्तित्व_ हैं_।"

(3) **अनुवाद_ :_ शिल्प_ के_ रूप_ में_ :**

कुछ_ विद्वान_ अनुवाद_ को_ विज्ञान_ और_ कला_ के_ साथ-साथ_ शिल्प_ भी_ मानते_ हैं_।_ "नालंदा विशाल_ शब्दसागर"_ में_ शिल्प_ का_ कोशगत_ अर्थ_ है_ -_ "कोई_ वस्तु_ हाथ_ से_ बनाकर_ तैयार करने_ का_ काम,_ दस्तकारी,_ कारीगरी_ अथवा_ कला_ सम्बन्धी_ व्यवसाय_।"_ जिस_ प्रकार_ कोई भी_ कौशल_ अभ्यास_ से_ विकसित_ की_ जा_ सकती_ है_।_ इसका_ मूल_ भाव_ यह_ है_ कि_ अनुवाद कला_ नहीं_ है,_ उसमें_ प्रशिक्षण_ भी_ आवश्यक_ है_।_ वह_ उपयोगी_ कला_ है_।_ अनुवाद_ को शिल्प_ इसीलिए_ माना_ जाता_ है_ कि_ विद्या_ और_ विषय_ के_ अनुसार_ इसका_ शिल्प_ बदलता है_ और_ इसके_ लिए_ प्रशिक्षण_ जरुरी_ हो_ जाता_ है_।

निष्कर्षतः_ हम_ कह_ सकते_ हैं_ कि_ अनुवाद_ न_ पूर्णरुप_ से_ विज्ञान_ है,_ न_ कला_ और_ न शिल्प_।_ अनुवाद_ की_ पृष्ठभूमि_ की_ प्रक्रिया_ इसे_ विज्ञान_ बनाती_ है_।_ पुनः_ सर्जन_ की प्रक्रिया_ इसे_ कला_ और_ प्रयोग_ की_ जानकारी_ इसे_ शिल्प_।_ अनुवादक_ की_ विभिन्न_ चरणों पर_ वैज्ञानिक,_ कलाकार_ एवं_ शिल्प_ की_ विभिन्न_ भूमिकाएँ_ निभानी_ पड़ती_ है_।_ अनुवादक इन_ तीनों_ भूमिकाओं_ में_ समन्वय_ करता_ हुआ_ अपने_ कार्य_ में_ सफल_ होता_ है_।

- **बोध_ प्रश्न_ :**

रिक्तस्थानों_ की_ पूर्ति_ कीजिए_ ।

(1) अनुवाद_ के_ लिए_ फारसी_ में _______ शब्द_ चलता_ है_ ।

(भाषान्तर_ /_ तर्जुमा)

(2) अनुवाद_ को_ अंग्रेजी_ में _______ कहा_ जाता_ है_ ।

(Translation / Translatum)

(3) अनुवाद_ के_ स्वरूप_ को_ _______ वर्गो_ में_ बाँटा_ जाता_ हैं_ ।

(दो_ /_ तीन)

(4) अनुवाद_ दो_ भाषाओं_ के_ बीच_ _______ निर्माण_ का_ कार्य_ करता_ है_ ।

(सेतु_ /_ दूरी)

1.5 अनुवाद_ की_ आवश्यकता_ :

आज_ के_ युग_ में_ अनुवाद_ की_ आवश्यकता_ है_ ।_ विभिन्न_ भाषाओं_ में_ विविध_ व्यक्तियों के_ विचारों_ को_ समझने_ में_ अनुवाद_ सहायक_ होता_ है_ ।_ निम्नलिखित_ कारणों_ हेतु_ अनुवाद की_ आवश्यकता_ है_ :

(1) **भावनात्मक_ एकता_ :**

भावनात्मक_ एकता_ स्थापित_ होने_ से_ मनुष्य_ -_ मनुष्य_ के_ बीच_ दूरियाँ_ कम_ हो_ जाती हैं_ ।_ भिन्न-भिन्न_ भाषी_ लोग_ एक-दूसरे_ की_ भावनाएँ,_ सुखदु:ख_ समझ_ सकते_ है । मानवता_ का_ संवर्धन_ होता_ है_ ।

(2) **ज्ञानवृद्धि_ :**

अनुवाद_ से_ ज्ञान_ की_ वृद्धि_ होती_ है_ ।_ ज्ञान-विज्ञान_ की_ सभी_ जानकारी_ हमारी_ भाषा में_ प्राप्त_ नहीं_ है_ ।_ उसे_ हम_ अनुवाद_ के_ माध्यम_ से_ उपलब्ध_ कर_ सकते_ है_ ।_ आज के_ युग_ में_ अनुवाद_ का_ कार्य_ वरदान_ हैं_ ।

(3) **आपसी_ समन्वय_ :**

अनुवाद_ के_ माध्यम_ से_ एक_ भाषाभाषी_ समाज_ का_ दूसरे_ भाषाभाषी_ समाज_ के_ साथ समन्वय_ स्थापित_ किया_ जाता_ है_ ।_ बहुभाषी_ राष्ट्र_ में_ एक-दूसरे_ की_ सभ्यता_ और संस्कृति_ का_ परिचय_ अनुवाद_ से_ होता_ है_ ।_ समाज_ के_ आचार-विचार,_ पूजा-पाठ, वेशभूषा,_ व्रत-उपवास,_ सामाजिक-सांस्कृतिक_ विधि_ विधान_ आदि_ का_ परिचय_ अनुवाद से_ होता_ है_ ।

(4) **अन्य_ संस्कृतियों_ से_ परिचय_ :**

अनुवाद_ के_ माध्यम_ से_ विदेशी_ राष्ट्रों_ की_ सभ्यता_ और_ संस्कृति_ का_ परिचय_ होता है_ ।_ किसी_ भी_ राष्ट्र_ की_ सभ्यता_ एवं_ संस्कृति_ का_ परिचय_ उस_ राष्ट्र_ का_ साहित्य होता_ है_ ।_ भारत_ के_ रामायण,_ भगवद्गीता,_ महाभारत_ जैसे_ ग्रंथ_ भारत_ की_ प्राचीन सभ्यता_ का_ परिचायक_ है_ ।_ प्रेमचंद_ के_ 'गोदान'_ में_ अभिव्यक्त_ किसान_ जीवन_ का पता_ अनुवाद_ के_ कारण_ होता_ है_ ।

(5) **राष्ट्रीय_ एकात्मकता_ :**

भारत_ जैसे_ देश_ में_ अनेकता_ में_ एकता_ स्वाभाविक_ है_ ।_ जाति,_ धर्म,_ व्यवसाय,_ प्रदेश, भिन्न-भिन्न_ होने_ के_ कारण_ भारत_ में_ अनेकता_ देखने_ को_ मिलती_ है_ ।_ आज_ राष्ट्रीय एकात्मकता_ अनुवाद_ के_ माध्यम_ से_ सम्भव_ हैं_ ।

(6) **अन्य_ राष्ट्रों_ की_ जानकारी_ :**

अनुवाद_ के_ माध्यम_ से_ अन्य_ राष्ट्रों_ की_ जानकारी_ मिलती_ है_ ।_ विश्व_ में_ जितने_ राष्ट्र है_ उनकी_ सभ्यता,_ संस्कृति,_ वेश-भूषा,_ खान-पान,_ रहन-सहन,_ धर्म_ का_ परिचय_ हमें उनके_ साहित्य_ के_ अनुवाद_ से_ मिलता_ है_ ।

(7) **व्यापार_ वृद्धि_ :**

व्यापारियों_ को_ संप्रेषण_ के_ लिए_ अनुवाद_ का_ आश्रय_ लेना_ पड़ता_ है_ ।_ अंतर्राष्ट्रीय जगत_ में_ अनुवाद_ के_ कारण_ व्यापार_ में_ अभूतपूर्व_ वृद्धि_ देखने_ को_ मिलती_ है_ ।

1.6 अनुवाद_ का_ महत्त्व_ :

अनुवाद_ के_ महत्त्व_ को_ हम_ निम्नलिखित_ रूप_ में_ देख_ सकते_ हैं_ -

(1) **ज्ञान_ -_ विज्ञान_ की_ जानकारी_ के_ लिए_ अनुवाद_ :**

समय_ के_ अनुसार_ ज्ञान_ -_ विज्ञान_ की_ जानकारी_ होना_ आवश्यक_ है_ ।_ समस्त_ संसार को_ विज्ञान_ और_ टॅक्नोलॉजी_ ने_ छोटा_ बना_ दिया_ है,_ ऐसी_ स्थिति_ में_ अन्य_ देशों से_ जानकारी_ के_ लिए_ अनुवाद_ आवश्यक_ है_ ।

(2) **अनुवाद_ एक_ व्यवहार_ उपयोगी_ शास्त्र_ है_ :**

अनुवाद_ कला,_ विज्ञान,_ राजनीति_ -_ विज्ञान,_ चिकित्सा-विज्ञान_ आदि_ की_ तरह_ व्यवहार उपयोगी_ शास्त्र_ है_ ।_ इसका_ विकास_ मनुष्य_ की_ सामाजिक_ आवश्यकताओं_ के_ कारण हुआ_ है_ ।_ जिस_ प्रकार_ भाषा_ मनुष्य_ के_ बीच_ सामाजिक_ संपर्क_ का_ साधन_ है,_ उसी तरह_ विभिन्न_ भाषाभाषियों_ के_ बीच_ अनुवाद_ सेतु_ की_ भूमिका_ निभाता_ है_ ।

(3) **सांस्कृतिक_ -_ विनिमय_ की_ दृष्टि_ से_ अनुवाद_ :**

किसी_ भी_ देश_ की_ पहचान_ उसकी_ संस्कृति_ से_ होती_ है_ ।_ भारत_ बहुभाषी_ देश_ है । दो_ भिन्न_ देशों_ की_ संस्कृति_ समझने_ के_ लिए_ अनुवाद_ आवश्यक_ है_ ।_ अनुवाद_ से दो_ भिन्न_ भाषा-भाषी_ लोग_ एक_ -_ दूसरे_ की_ संस्कृति_ जान_ सकते_ है_ ।_ इसीलिए सांस्कृतिक_ -_ विनिमय_ की_ दृष्टि_ से_ अनुवाद_ का_ विशेष_ महत्त्व_ है_ ।

(4) **राजनैतिक_ आदान-प्रदान_ की_ जरूरत_ के_ लिए_ :**

राजनैतिक_ आदान-प्रदान_ के_ लिए_ अनुवाद_ महत्त्वपूर्ण_ भूमिका_ निभाता_ है_ ।_ आज का_ युग_ राजनैतिक_ संबंधों_ का_ युग_ है_ ।_ दो_ देशों_ के_ नेता_ आपस_ में_ जब_ मिलते है,_ तब_ उन_ दोनों_ को_ बातचीत_ करने_ के_ लिए_ दो_ भाषाओं_ का_ ज्ञान_ होना_ आवश्यक होता_ है_ ।_ इस_ दृष्टि_ से_ अनुवाद_ का_ राजनैतिक_ महत्त्व_ है_ ।

(5) **सभी_ भाषाओं_ का_ संपर्क_ स्थापित_ करने_ के_ लिए_ :**

युगों_ से_ अनुवादक_ अनुवाद_ करके_ सभ्यता_ और_ विकास_ में_ सृजनात्मक_ योगदान_ दे रहे_ हैं_ ।_ प्रत्येक_ संस्कृति_ की_ अपनी_ पहचान_ होती_ है_ ।_ अनुवाद_ के_ जरिये_ विभिन्न संस्कृति_ और_ संस्कृति_ के_ विकास_ में_ सहयोगी_ होते_ हैं_ ।

(6) **मानव_ जाति_ के_ विकास_ के_ लिए_ :**

मानव_ जाति_ के_ विकास_ के_ लिए_ अनुवाद_ जरूरी_ है_ ।_ अनुवाद_ के_ द्वारा_ एक-दूसरे देश_ की_ सभ्यता,_ संस्कृति_ से_ परिचय_ होता_ है_ ।_ अगर_ शेक्सपियर_ को_ जानना_ हो_ तो अंग्रेजी_ भाषा_ के_ अलावा_ उसके_ अनुवाद_ की_ भाषा_ से_ उसके_ साहित्य_ से_ परिचित_ हो सकते_ हैं_ ।_ इस_ तरह_ से_ मानव_ जाति_ के_ विकास_ के_ लिए_ अनुवाद_ आवश्यक_ है_ ।

(7) **तुलनात्मक_ अध्ययन_ के_ लिए_ :**

तुलनात्मक_ अध्ययन_ के_ लिए_ अनुवाद_ की_ आवश्यकता_ से_ इंकार_ नहीं_ किया_ जा सकता ।_ दो_ भाषाओं_ की_ तुलना_ से_ मानव_ मनोविज्ञान_ की_ अनेक_ अज्ञात_ तथ्यों_ का रहस्य_ उद्‌घाटन_ किया_ जा_ सकता_ है_ ।_ अलग-अलग_ विद्याओं_ में,_ अलग-अलग_ भाषाओं में_ कार्य_ हो_ रहा_ है_ ।_ ये_ हमें_ दुनिया_ के_ विविध_ विषयों_ का_ ज्ञान_ देता_ रहता_ है ।

(8) **विदेशी_ भाषा_ के_ अध्ययन_ के_ लिए_ :**

किसी_ भी_ विदेशी_ भाषा_ का_ अध्ययन_ अनुवाद_ के_ माध्यम_ से_ किया_ जा_ सकता_ है । आरंभ_ में_ विदेशी_ भाषा_ की_ बुनियादी_ शिक्षा_ अनुवाद_ के_ माध्यम_ से_ दी_ जाती_ है और_ अनुवाद_ के_ द्वारा_ ही_ फ्रेंच,_ जर्मन,_ चीनी,_ अंग्रेजी_ आदि_ भाषाओं_ को_ सीखा जा_ सकता_ है_ ।_ अनुवाद_ के_ द्वारा_ ही_ विदेशी_ भाषाओं_ के_ भाषा_ शास्त्र,_ भाषाविज्ञान एवं_ साहित्य_ से_ परिचय_ स्थापित_ किया_ जाता_ है_ ।

(9) जीविका_ (रोजी-रोटी)_ कमाने_ के_ साधन_ के_ रूप_ में_ :

अनुवाद_ जीविका_ कमाने_ के_ साधन_ बनने_ में_ उपयुक्त_ है_ ।_ केन्द्रीय_ कार्यालयों_ में हर_ साल_ अनुवाद_ के_ पद_ भरे_ जाते_ है_ ।_ कई_ विश्व_ विद्यालयों_ में_ अनुवाद_ डिप्लोमा या_ डिग्री_ कोर्स_ पढ़ाया_ जाता_ है_ ।_ समचार_ पत्रों,_ मीडिया,_ यात्रा_ में_ गाईड,_ सरकारी कार्यालय,_ शिक्षाक्षेत्र_ आदि_ में_ अनुवादक_ की_ जरूरत_ रहती_ है_ ।_ इस_ तरह_ अनुवाद नौकरी_ या_ पैसा_ कमाने_ में_ काम_ आता_ हैं_ ।

1.7 सारबिन्दु_ :

विद्यार्थी_ मित्रो_ !_ आपने_ इस_ इकाई_ में_ अनुवाद_ का_ अर्थ,_ स्वरूप,_ प्रकृति,_ आवश्यकता और_ महत्त्व_ का_ अध्ययन_ किया_ है_ ।_ आशा_ है,_ आप_ इन_ सभी_ बिन्दुओं_ से_ अच्छी तरह_ परिचित_ हो_ गये_ होगे,_ आइये_ !_ इकाई_ में_ आयी_ प्रमुख_ बातों_ को_ एक_ बार फिर_ से_ दोहरा_ ले_ ।

- अनुवाद'_ शब्द_ की_ व्युत्पत्ति_ 'वद'_ धातु_ में_ 'अनु'_ उपसर्ग_ जोड़कर_ हुई_ है,_ जिसका शाब्दिक_ अर्थ_ है_ -_ पुनः_ कथन_ ।
- 'अनुवाद'_ शब्द_ के_ लिए_ अंग्रेजी_ में_ Translation और_ फारसी_ में_ 'तर्जुमा'_ शब्द चलते_ है_ ।
- एक_ भाषा_ में_ कही_ हुई_ बात_ को_ दूसरी_ भाषा_ में_ संप्रेषित_ करने_ को_ अनुवाद कहा_ जाता_ है_ ।
- अनुवाद_ भावात्मक_ एकता,_ ज्ञानवृद्धि,_ आपसी_ समन्वय,_ अन्य_ संस्कृति_ के_ परिचय के_ लिए,_ राष्ट्रीय_ एकात्मकता,_ अन्य_ राष्ट्रों_ की_ जानकारी,_ व्यापार_ वृद्धि_ आदि के_ लिए_ आवश्यक_ है_ ।
- इक्कीसवी_ शताब्दी_ अन्तराष्ट्रीय_ शताब्दी_ है_ और_ इस_ विश्व_ संस्कृति_ के_ विकास में_ अनुवाद_ का_ योगदान_ महत्त्वपूर्ण_ रहा_ है_ ।

1.8 परीक्षोपयोगी_ प्रश्नावली_ :

(क)_ निबंधात्मक_ प्रश्न

(1) अनुवाद_ का_ अर्थ_ बताते_ हुए_ अनुवाद_ के_ स्वरूप_ पर_ प्रकाश_ डालिए_ ।

(2) अनुवाद_ की_ परिभाषा_ बताते_ हुए_ अनुवाद_ की_ प्रकृति_ पर_ विचार_ कीजिए_ ।

(3) अनुवाद_ की_ आवश्यकता_ और_ महत्व_ को_ समझाइए_ ।

(ख)_ टिप्पणी_ लिखिए_ :

(1) अनुवाद_ आवश्यकता

(2) अनुवाद_ का_ अर्थ

(3) अनुवाद_ का_ स्वरूप

(4) अनुवाद_ की_ प्रकृति

(ग)_ वस्तुनिष्ठ_ प्रश्न

(अ)_ सही_ /_ गलत_ बताइए_ ।

(1) भारत_ की_ अखंडता_ और_ एकता_ को_ बरकरार_ रखने_ के_ लिए_ अनुवादक_ की_ बहुत आवश्यकता_ है_ ।

(2) अनुवाद_ को_ विज्ञान_ मानने_ वालों_ में_ महत्त्वपूर्ण_ योगदान_ नाइडा_ का_ नहीं_ है ।

(3) अनुवाद_ से_ ज्ञान_ में_ वृद्धि_ होती_ है_ ।

(4) समाचारपत्रों_ मीडिया,_ सरकारी_ कार्यालय_ आदि_ में_ अनुवादक_ की_ जरुरत_ नहीं रहती_ है ।

(5) अनुवाद_ एक_ व्यवहार_ उपयोगी_ शास्त्र_ है_ ।

1.9 उपयोगी_ पाठ्य_ सामग्री_ :

---

(1) अनुवाद_सिद्धान्त_की_रूपरेखा,_डॉ._सुरेशकुमार,_वाणी_प्रकाशन,_दिल्ली,_आवृत्ति - 2011

(2) अनुवाद_ विमर्श_ सं._ प्रा._ राजेन्द्र_ इंगोले,_ सारंग_ प्रकाशन,_ वाराणसी,
प्रथम_ संस्करण - 2015.

(3) अनुवाद_ विज्ञान_ की_ भूमिका,_ कृष्ण_ कुमार_ गोस्वामी,_ राजकमल_ प्रकाशन,
दिल्ली-2008

इकाई_ 2 — अनुवाद_ के_ प्रकार

इकाई_ की_ रूपरेखा

2.1 उद्देश्य

2.2 प्रस्तावना

2.3 अनुवाद_ के_ प्रकार

10.3.1 माध्यम_ के_ आधार_ पर

10.3.2 प्रक्रिया_ के_ आधार_ पर

10.3.3 पाठ_ के_ आधार_ पर

10.3.4 विषयवस्तु_ एवं_ प्रकृति_ के_ आधार_ पर

2.4 सारबिन्दु

2.5 परीक्षोपयोगी_ प्रश्नावली

2.6 उपयोगी_ पाठ्य_ सामग्री

2.1 उद्देश्य

इस_ इकाई_ में_ अनुवाद_ के_ प्रकारों_ के_ बारे_ में_ बताया_ गया_ है_ ।_ इस_ इकाई_ को_ पढ़ने_ के बाद_ आप_ -

– माध्यम_ के_ आधार_ पर_ अनुवाद_ के_ प्रकार_ जान_ सकेंगे_ ।

– प्रक्रिया_ के_ आधार_ पर_ अनुवाद_ के_ प्रकार_ से_ अवगत_ होंगे_ ।

– पाठ_ के_ आधार_ पर_ अनुवाद_ के_ प्रकार_ की_ जानकारी_ प्राप्त_ कर_ सकेंगे_ ।

– विषयवस्तु_ एवं_ प्रकृति_ के_ आधार_ पर_ अनुवाद_ के_ प्रकार_ से_ परिचित_ हो_ सकेंगे_ ।

2.2 प्रस्तावना

इसके_ पहले_ की_ इकाई_ में_ आपने_ अनुवाद_ का_ अर्थ,_ स्वरूप,_ प्रकृति,_ आवश्यकता और_ महत्त्व_ के_ बारे_ में_ जाना_ ।_ इस_ इकाई_ में_ आप_ अनुवाद_ के_ प्रकारों_ का_ अध्ययन_ करेंगे । 'अनुवाद'_ भाषाओं_ के_ बीच_ संप्रेषण_ का_ काम_ करता_ है_ ।_ अनुवाद_ विशिष्ट_ प्रकार_ का_ भाषा व्यवहार_ है_ और_ उसके_ अनेक_ प्रकार_ या_ रूप_ हैं_ ।

2.3 अनुवाद_ के_ प्रकार

विभिन्न_ विद्वानों_ ने_ अनुवाद_ के_ प्रकारों_ की_ चर्चा_ अनेक_ आधारों_ पर_ की_ है_ ।_ डॉ. भोलानाथ_ तिवारी_ ने_ अनुवाद_ के_ प्रकारों_ पर_ विचार_ गद्यत्व-पद्यत्व_ के_ आधार_ पर_ किया_ है तो_ डॉ._ एन._ ई._ विश्वनाथन_ अय्यरने_ लिप्यंकन_ और_ लिप्यंतरण_ को_ अनुवाद_ के_ भेद_ के_ रूप में_ स्वीकार_ किया_ है_ ।_ अनुवाद_ के_ प्रकारों_ का_ वर्गीकरण_ मुख्यत:_ चार_ आधारों_ पर_ किया_ जाता है_ :

(1) माध्यम_ के_ आधार_ पर

(2) प्रक्रिया_ के_ आधार_ पर

(3) पाठ_ के_ आधार_ पर

(4) विषयवस्तु_ एवं_ प्रकृति_ के_ आधार_ पर

2.3.1 माध्यम_ के_ आधार_ पर

माध्यम_ के_ आधार_ पर_ अनुवाद_ के_ तीन_ प्रकार_ हैं_ :

(1) प्रतीक_ प्रकार

(2) भाषा_ प्रकार

(3) लेखन_ प्रकार

(1) **प्रतीक_ प्रकार_ :**

(I) अन्वयान्तर_ (अंतः_ भाषिक_ अनुवाद)

(II) भाषान्तर_ (अन्तरभाषिक_ अनुवाद)

(III) प्रतीकान्तर_ (अन्तरप्रतीकात्मक_ अनुवाद)

(I) **अन्वयान्तर_ अनुवाद_ :_ (अन्तः_ भाषिक_ अनुवाद)**

किसी_ एक_ भाषा_ की_ प्रतीक_ व्यवस्था_ द्वारा_ व्यक्त_ हुए_ अर्थ_ का,_ उसी_ भाषा_ की अन्य_ प्रतीक_ व्यवस्था_ द्वारा_ अन्तरण_ अन्तः_ भाषिक_ अनुवाद_ कहलाता_ है_ ।

उदा._ -_ दिनकर_ का_ खंडकाव्य_ 'रश्मिरथी'

इस_ खंडकाव्य_ को_ जब_ नाटक_ के_ रुप_ में_ व्यक्त_ किया_ जाता_ है_ तो_ उसे_ अन्तः_ भाषिक अनुवाद_ का_ प्रकार_ कहा_ जा_ सकता_ है ।

(II) **अन्तरभाषिक_ अनुवाद_ -_ (भाषान्तर)**

किसी_ एक_ भाषा_ की_ प्रतीक_ व्यवस्था_ द्वारा_ व्यक्त_ हुए_ अर्थ_ का,_ दूसरी_ भाषा_ की_ प्रतीक व्यवस्था_ द्वारा_ अन्तरण_ अन्तरभाषिक_ अनुवाद_ कहलाता_ है_ ।_ इस_ प्रकार_ के_ अनुवाद_ में अनुवादक_ का_ द्विभाषिक_ होना_ अनिवार्य_ हैं_ ।

उदा._ "कालिदास"_ के_ संस्कृत_ नाटकों_ का_ तेलगू_ में_ और_ तमिल_ भाषा_ के_ "तिरुक्करल" का_ हिन्दी_ में_ अनुवाद_ अन्तरभाषिक_ अनुवाद_ का_ उदाहरण_ है_ ।

(III) **प्रतीकान्तर_ -_ (अन्तर_ प्रतीकात्मक_ अनुवाद)**

प्रतीकान्तर_ अनुवाद_ में_ प्रतीक_ की_ व्यवस्था_ का_ आधार_ तो_ भाषा_ होता_ है,_ लेकिन_ प्रतीक (2) भाषान्तर_ व्यवस्था_ की_ अपेक्षा_ रखती_ है_ ।

(2) भाषा_ प्रकार_ :

(1) उपादान_ सापेक्ष

(2) रूप_ सापेक्ष

(1) **उपादान_ सापेक्ष_ :** उपादान_ सापेक्ष_ के_ अन्तरगत_ दो_ भेद_ आते_ हैं_ - (1) अनुवाद_ (2) आशु_ अनुवाद_ ।_ अनुवाद_ का_ उपादान_ लेखन_ होता_ है_ और_ आशु_ अनुवाद_ का_ उपादान ध्वनि_ होता_ है_ ।_ दूसरे_ शब्दों_ में_ कहें_ तो_ अनुवाद_ लिखित_ होता_ है_ और_ आशु_ अनुवाद मौखिक_ होता_ है_ ।

(2) **रूप_ सापेक्ष_ :** रूप_ सापेक्ष_ के_ अन्तरगत_ दो_ भेद_ हैं_ :

(1) पद्यानुवाद

(2) गद्यानुवाद

पद्य_ का_ पद्य_ में_ अनुवाद_ पद्यानुवाद_ है_ और_ गद्य_ का_ गद्य_ में_ अनुवाद_ गद्यानुवाद_ है_ ।

(3) **लेखन_ प्रकार_ :**

(1) लिप्यंकन

(2) लिप्यन्तरण

(1) लिप्यंकन_ :_ (Transcription)

लिप्यंकन_ में_ स्रोत_ भाषा_ के_ शब्द_ की_ वर्तनी_ पर_ ध्यान_ न_ देकर_ उसके_ उच्चारण को_ आधार_ मानकर_ लक्ष्य_ भाषा_ में_ शब्द_ लिखा_ जाता_ है_ ।

(2) लिप्यन्तर_ :_ (Transliteration)

लिप्यन्तरण_ में_ स्रोत_ भाषा_ की_ वर्तनी_ में_ प्रयुक्त_ लिपिचिह्नों_ के_ स्थान_ पर_ लक्ष्य भाषा_ में_ प्राप्त_ लिपिचिह्नों_ को_ प्रतिस्थापित_ किया_ जाता_ है_ ।

2.3.2 **प्रक्रिया_ के_ आधार_ पर_ :**

प्रक्रिया_ के_ आधार_ पर_ अनुवाद_ के_ दो_ प्रकार_ है_ :

(1) पाठधर्मी_ अनुवाद

(2) प्रभावधर्मी_ अनुवाद

(1) **पाठधर्मी_ अनुवाद_ :** पाठधर्मी_ अनुवाद_ का_ आयाम_ अपनी_ प्रकृति_ और_ प्रयोजन_ में वाक्य_ के_ विन्यास_ और_ अर्थ_ विज्ञान_ पर_ आधारित_ है_ ।

(2) **प्रभावधर्मी_ अनुवाद_ :** प्रभावधर्मी_ अनुवाद,_ पाठ_ को_ लेखक_ और_ पाठक_ के_ बीच सम्बन्ध_ स्थापना_ का_ एक_ उपकरण_ मानता_ है,_ जिसका_ वह_ पाठक_ पर_ पड़े_ प्रभाव के_ आधार_ पर_ मूल्यांकन_ करता_ है_ ।

2.3.3 **पाठ_ के_ आधार_ पर_ अनुवाद_ के_ प्रकार_ :**

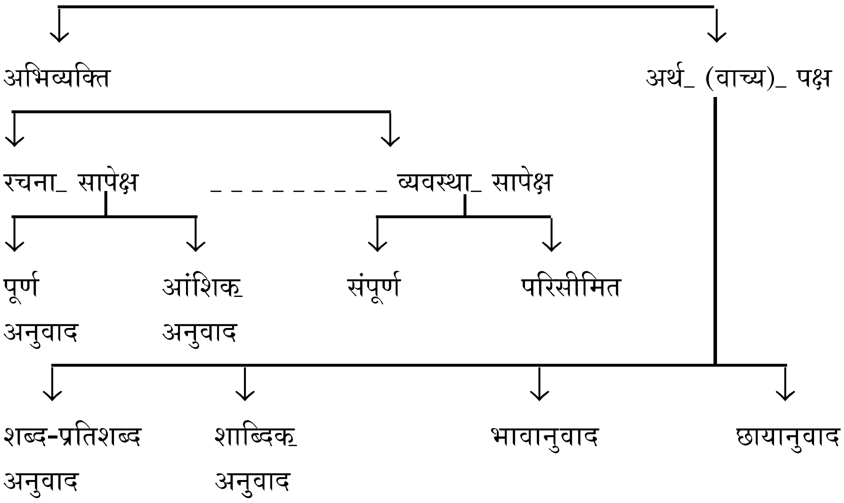

जेरसी_ केटफोर्ड_ Linguistic Theory of Transtation में_ अनुवाद_ को_ निम्नलिखित रूप_ में_ वर्गीकृत_ किया_ है_ :

(1) पाठ्य_ -_ विस्तार_ : (1) पूर्णानुवाद

(2) आंशिक_ अनुवाद

(2) भाषास्तर_ : (1) समस्त

(2) सीमित

(3) भाषा_ -_ शैली_ : (1) मुक्त_ अनुवाद

(2) शाब्दिक_ अनुवाद

(3) शब्दशः_ अनुवाद

10.3.4 विषयवस्तु_ या_ प्रकृति_ के_ आधार_ पर_ :

विषयवस्तु_ एवं_ प्रकृति_ के_ आधार_ पर_ अनुवाद_ का_ दो_ तरह_ से_ विभाजन किया_ जाता_ है_ ।

(1) साहित्यिक_ अनुवाद

(2) साहित्येत्तर_ अनुवाद

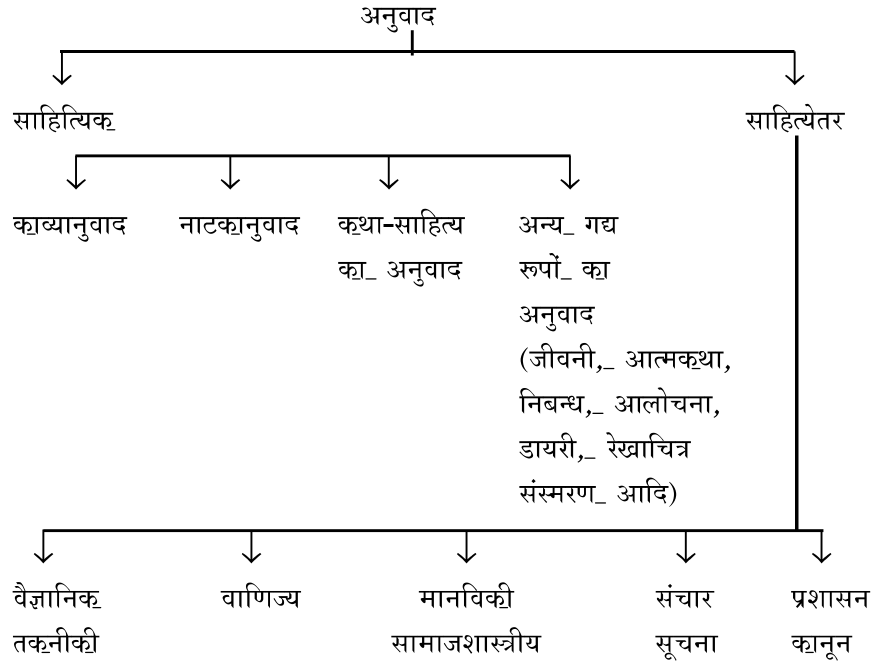

(1) साहित्यिक_ अनुवाद_ :

साहित्यिक_ अनुवाद_ को_ शैली_ प्रधान_ अनुवाद_ कहा_ जाता_ है_ ।

(1) **काव्यानुवाद_:** पद्यनुवाद_का_ही_पर्याय_शब्द_काव्यानुवाद_है_।_कविता_साहित्य_की_सर्वाधिक भावपूर्ण_ विद्या_ है_ ।_ पद्यानुवाद_ से_ तात्पर्य_ केवल_ कविता_ का_ ही_ अनुवाद_ नहीं_ है,_ परंतु पद्य_ में_ आनेवाली_ तमाम_ विधाएँ_ उन_ सबका_ अनुवाद_ पद्यानुवाद_ है ।_ कुछ_ विद्वानों_ का मत_ है_ कि_ काव्यानुवाद_ असंभव_ है,_ किन्तु_ इतना_ कह_ देने_ भर_ से_ यह_ सत्य_ नहीं_ होता। काव्यानुवाद_ हुए_ हैं_ ।_ काव्य_ का_ अनुवाद_ करने_ के_ लिए_ मूल_ के_ सृजन_ की_ मनोभूमि को_ पकड़ना_ आवश्यक_ होता_ है_ ।_ इसके_ लिए_ अनुवादक_ को_ कवि_ की_ आत्मा_ में_ प्रवेश करना_ पड़ता_ है,_ और_ यह_ काम_ एक_ संवेदनशील_ अनुवादक_ ही_ कर_ सकता_ है_ ।_ जो स्वयं_ कवि_ हो_ या_ कम_ से_ कम_ कवि_ ह्रदय_ रखता_ हो ।_ इसीलिए_ कहा_ जाता_ है_ कि "काव्य_ का_ सफल_ अनुवाद_ कवि_ द्वारा_ ही_ हो_ सकता_ है_ ।"_ अनुवादक_ को_ ध्यान_ रखना होता_है_कि_काव्यानुवाद_केवल_शब्दों_का_अनुवाद_न_हो_।_उसमें_भाव_या_नवीन_सृजनात्मकता

आवश्यक_ है_ ।_ हिन्दी_ के_ प्रसिद्ध_ कवि_ और_ अनुवादक_ हरिवंशराय_ बच्चन_ 'उमर_ खय्याम की_ रुबाइयाँ'_ की_ भूमिका_ में_ अनुवाद_ के_ बारे_ में_ लिखते_ हैं,_ "अपने_ अनुवाद_ के_ विषय में_ मुझे_ केवल_ यह_ कहना_ है_ कि_ मैं_ शब्दानुवाद_ करने_ के_ फेर_ में_ नहीं_ पड़ा ।_ भावों को_ ही_ मैंने_ प्रधानता_ दी_ ।"

काव्यानुवाद_ करते_ समय_ काव्य_ के_ रूप_ को_ लेकर_ भिन्न-भिन्न_ मत_ देखने_ को_ मिलते हैं_ ।_ कुछ_ विद्वानों_ के_ अनुसार_ मूल_ रचना_ के_ अनुसार_ ही_ छंदो_ का_ प्रयोग_ होना_ चाहिए तो_ कुछ_ अनुवादक_ का_ मानना_ है_ कि_ -_ लयात्मक_ गद्य_ का_ प्रयोग_ किया_ जाना_ चाहिए तो_ कुछ_ विद्वानों_ के_ अनुसार_ मुक्त_ छंद_ में_ अनुवाद_ किया_ जाना_ चाहिए_ ।_ काव्यानुवाद की_ आदर्श_ स्थिति_ यह_ है_ कि_ मूल_ रचना_ के_ सूक्ष्म,_ लय,_ संगीत_ को_ लक्ष्य_ रचना_ में लाने_ का_ प्रयास_ करना_ चाहिए_ ।

(2) **नाटकानुवाद_ :** काव्य_ के_ अभिनेय_ प्रकार_ को_ नाटक_ कहा_ जाता_ है_ ।_ सामान्य_ रूप_ से नाटकानुवाद_ के_ दो_ भेद_ होते_ हैं_ :

(1) पाठ्यानुवाद

(2) मंचीय_ अनुवाद

पाठ्यानुवाद_ में_ नाटक_ के_ पाठ_ का_ शब्दानुसार_ या_ वाक्यानुसार_ अनुवाद_ किया_ जाता_ है । मंचीय_ अनुवाद_ एक_ तरह_ से_ पुनः_ सृजन_ है_ ।_ मंचीय_ अनुवाद_ अभिनय,_ रस_ एवं_ प्रभाव को_ ध्यान_ में_ रखकर_ किये_ जाते_ हैं_ ।_ मंचीय_ अनुवाद_ वही_ कर_ सकता_ है_ जिसमें_ नाट्य लेखन_ और_ रंगमंच_ दोनों_ का_ ज्ञान_ हो_ ।

मूल_ नाटक_ कभी-कभी_ रंगमंच_ की_ दृष्टि_ से_ पूर्ण_ सहज_ होता_ है,_ किन्तु_ अनूदित_ होने पर_ असफल_ रहता_ है_ ।_ इसका_ कारण_ है_ कि_ व्यंजित_ अर्थ,_ हास्य–व्यंग_ आदि_ सांस्कृतिक परिवेश_ से_ अभिन्न_ रूप_ से_ जुडे_ रहते_ हैं_ जो_ अनुवाद_ करते_ समय_ स्पष्ट_ नहीं_ हो_ पाते । इस_ संदर्भ_ में_ अनुवाद_ की_ दो_ प्रवृत्तियाँ_ देखने_ को_ मिलती_ हैं_ ।_ भारतेन्दु_ और_ जी.पी. श्रीवास्तव_ जैसे_ पुराने_ नाटककारों_ ने_ स्रोतभाषा_ के_ सांस्कृतिक_ परिवेश_ को_ लक्ष्य_ भाषा_ के सांस्कृतिक_ परिवेश_ से_ परिवर्तित_ कर_ दिया_ गया_ ।_ भारतेन्दु_ ने_ शेक्सपियर_ के_ नाटक_ 'मर्चेन्ट ऑफ_ वेनिस'_ का_ अनुवाद_ 'दुर्लभ_ बंधु'_ नाम_ से_ किया_ और_ भारतीय_ वातावरण_ प्रस्तुत किया ।_ नाटकानुवाद_ का_ दूसरा_ दृष्टिकोण_ मूल_ नाटक_ के_ सांस्कृतिक_ परिवेश_ की_ रक्षा करते_ हुए_ अनुवाद_ को_ प्रस्तुत_ करना_ है_ ।

हिन्दी_ में_ अनेक_ सफल_ नाटकानुवाद_ हुए_ हैं_ ।_ राजा_ लक्ष्मणसिंह_ ने_ शंकुतला,_ भारतेन्दु ने_ बंगला_ नाटकों_ के_ अनुवाद_ किये_ हैं_ ।_ प्रेमचंद_ ने_ 'गाल्स_ वर्दी',_ राजेन्द्र_ यादव_ ने चेखव_ के_ नाटकों_ का_ अनुवाद_ करके_ राष्ट्रीय_ रंगमंच_ की_ संभावनाओं_ को_ विकसित_ किया है ।

(3) **कथा-साहित्य_ का_ अनुवाद_ :**

कथा_ साहित्य_ के_ अनुवाद_ ने_ विश्व_ साहित्य_ की_ परिकल्पना_ को_ उजागर_ किया_ है_ ।_ भारत की_ पंचतंत्र_ की_ कथा_ के_ अनुवाद_ से_ पश्चिम_ ने_ मौलिक_ कथा_ -_ साहित्य_ लिखने_ की प्रेरणा_ प्राप्त_ की_ ।_ रवीन्द्रनाथ,_ बंकिमचन्द्र,_ धूमकेतु,_ प्रेमचंद,_ टाल्सटॉय,_ अमृता_ प्रीतम आदि_ उपन्यासकार_ अनुवाद_ के_ माध्यम_ से_ पूरे_ देश_ में_ जाने_ जाते_ हैं_ ।_ कथा_ -_ साहित्य के_ अनुवादक_ की_ चार_ बातों_ का_ ध्यान_ रखना_ पड़ता_ हैं_ :

(1) कथातत्त्व

(2) शैली

(3) देशकाल

(4) संस्कृति

कथा-साहित्य के अनुवाद करने में देशकाल और संस्कृति का विशेष महत्त्व होता है, क्योंकि कथा साहित्य जनजीवन का चलता हुआ छायांकन होता है । इसलिए उसमें रीति - रिवाज, त्यौहार, जीवनमूल्य, वनस्पतियाँ, सांस्कृतिक स्थान एवं वस्तुएँ आदि का उसमें विशेष महत्त्व होता है । इस प्रकार के अनुवाद में अनुवादक से अपेक्षा होती है कि वे मूल कृति की संस्कृति एवं परिवेश को पुनः सृजन द्वारा प्रत्यक्ष करा सके।

कथासाहित्य की भाषा जन भाषा से निकट होती है । भाषाशैली की इन परंपराओं और जीवंत मुहावरों को पकड़ना अनुवाद की सफलता के लिए अनिवार्य है ।

(4) **अन्य गद्य विधाओं के अनुवाद :**

अन्य गद्य विधाओं में आत्मकथा, जीवनी, निबन्ध, रेखाचित्र, यात्रा - साहित्य, रिपोर्ताज, डायरी, संस्मरण और आलोचना का समावेश होता है । इन सभी विधाओं में अनुवाद की संभावनाएँ हैं । परंतु ऐसे अनुवाद के सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक पक्ष पर बहुत कम लोगों ने विचार किया है । गांधीजी के कारण भारत में आत्मकथा, डायरी आदि का अनुवाद चल पड़ा था । उदाहरण के लिए रामवृक्ष बेनीपूरी रचित 'माटी की मूरतें' नामक रेखाचित्र का अनुवाद कई भाषाओं में साहित्य अकादमी द्वारा कराया गया और वह काफी लोकप्रिय भी हुआ ।

(2) **साहित्येतर अनुवाद :**

(1) **वैज्ञानिक एवं तकनीकी अनुवाद :**

विकसित एवं विकासशील देशों में वैज्ञानिक एवं तकनीकी अनुवाद की आवश्यकता बनी रहती है । वैज्ञानिक एवं तकनीकी अनुवाद की व्याख्या इस प्रकार से की जा सकती है कि - "स्रोत भाषा में व्यक्त वैज्ञानिक सूचनाओं का लक्ष्य भाषा में इस तरह अंतरण करना कि मूल की सूचनाएँ अनुवाद में नष्ट न हो ।"

साहित्यिक और वैज्ञानिक तकनिकी अनुवाद के बीच मूल अंतर यह है कि साहित्यिक अनुवाद में शैली, अभिव्यंजना, भाव-भंगिमा की प्रमुखता है जब कि वैज्ञानिक अनुवाद में 'कैसे' की अपेक्षा 'क्या' का अधिक महत्त्व होता है । वैज्ञानिक एवं तकनीकी साहित्य का अनुवाद वैज्ञानिक एवं तकनीकी विषय के विद्वानों एवं छात्रों के लिए होता है ।

वैज्ञानिक अनुवाद में अभिव्यक्त विचार ही प्रमुख होता है । इस प्रकार के अनुवाद की पहली विशेषता है कि इस विषय का जानकार ही इसका अनुवाद कर सकता है। इसकी भाषा वस्तुनिष्ठ एवं तथ्यपरक होती है ।

(2) **वाणिज्य अनुवाद :**

एक भाषा की वाणिज्य विषयक सामग्री का दूसरी भाषा में अनुवाद करना वाणिज्य अनुवाद कहलाता है । इसमें व्यापार, उद्योग धन्धे, बैंक, फिल्म, विज्ञापन, पर्यटन आदि क्षेत्र से संबंधित सामग्री का अनुवाद आता है । आधुनिक युग में इस प्रकार के अनुवाद की आवश्यकता बढ़ती जा रही है । वाणिज्य अनुवाद का क्षेत्र राष्ट्र के सभी प्रदेशों में फैला होने के कारण इस अनुवाद को काफी महत्त्व प्राप्त हुआ है । इस प्रकार के अनुवाद में विज्ञापन का विशेष महत्त्व होता है । विज्ञापन के अतिरिक्त फिल्म डबिंग,

व्यावसायिक_ पत्र,_ नियमावली,_ सूचनाएँ,_ निर्देश_ सभी_ प्रकार_ की_ सामग्री_ आती_ है_ ।_ इस प्रकार_ की_ सामग्री_ का_ सम्बन्ध_ प्रशासन_ एवं_ कानून_ से_ भी_ होता_ है_ ।_ उसके_ अनुवाद में_ पारिभाषिक_ शब्दों_ का_ प्रयोग_ भी_ होता_ है_ किन्तु_ जनभाषा_ का_ प्रयोग_ ही_ अपेक्षित है_ ।_ यूनेस्को,_ विश्वबैंक,_ संयुक्त_ राष्ट्रसंघ,_ बहुराष्ट्रीय_ कम्पनियाँ_ जैसी_ अनेक_ अंतराष्ट्रीय संस्थाओं,_ फिल्म_ महोत्सवों_ तथा_ ओलम्पिक_ जैसे_ खेलों_ आदि_ के_ कारण_ वाणिज्य_ अनुवाद की_ माँग_ में_ बढ़ोतरी_ हो_ रही_ है_ ।

(3) **मानविकी,_ समाजशास्त्रीय_ विषयों_ का_ अनुवाद_ :**

मानविकी_ और_ समाजशास्त्रीय_ विषयों_ का_ अनुवाद_ शैक्षणिक_ दृष्टि_ से_ आवश्यक_ होता है ।_ इस_ प्रकार_ के_ अनुवाद_ में_ अनुवादक_ के_ पास_ विषय_ का_ सम्यक_ ज्ञान_ आवश्यक है_।_समाजशास्त्र,_अर्थशास्त्र,_इतिहास_आदि_विषयों_के_लिए_पारिभाषिक_शब्दों_की_जानकारी आवश्यक_ है_ ।_ आज_ भारत_ के_ विभिन्न_ विश्वविद्यालयों_ में_ मातृभाषा_ में_ शिक्षा_ दी_ जाने लगी_ है_ ।_ ऐसे_ समय_ में_ समाजशास्त्रीय_ विषयों_ के_ अनुवाद_ मातृभाषा_ में_ करना_ आवश्यक हो_ गया_ है_ ।_ इस_ प्रकार_ के_ अनुवाद_ में_ अनुवादक_ को_ पाठक_ के_ मानसिक_ स्तर_ का पूरा_ ध्यान_ रखना_ चाहिए_ ।_ भाषा_ सरल_ और_ विषयलक्षी_ होनी_ चाहिए_ तभी_ अनुवाद लोकप्रिय_ हो_ सकता_ है_ ।

(4) **सूचना_ एवं_ दूर_ संचार_ में_ अनुवाद_ :**

सूचना_ एवं_ दूर_ संचार_ में_ अनुवाद_ में_ राजनीति_ एवं_ कूटनीति_ से_ लेकर_ व्यापार_ तथा_ जीवन के_ तमाम_ कार्य_ -_ कलापों_ एवं_ विषयों_ से_ सम्बन्धित_ सामग्री_ का_ अनुवाद_ करना_ होता है_ ।_ इस_ प्रकार_ के_ अनुवाद_ में_ अन्य_ अनुवादों_ की_ अपेक्षा_ समय_ प्रबंधन_ की_ अपेक्षा रहती_ है_ ।_ चाहे_ दैनिक_ पत्रों_ का_ अनुवाद_ हो_ या_ दूरदर्शन,_ रेडियो_ आदि_ का_ अनुवादक के_ पास_ कम_ समय_ होता_ है_ और_ उन्हें_ उतने_ ही_ समय_ में_ सारी_ सामग्री_ का_ अनुवाद करना_ होता_ है_ ।_ इस_ प्रकार_ का_ अनुवाद_ एक_ साथ_ करोड़ों_ पाठकों_ एवं_ श्रोताओं_ के पास_ पहुँचता_ है,_ इसलिए_ उसमें_ रोचकता,_ संप्रेषणीयता,_ प्रभावोत्पादकता_ आदि_ गुण_ होने चाहिए_।_विषयों_का_व्यापक_ज्ञान,_व्यापक_अध्ययन,_समकालीन_घटनाओं_के_प्रति_सजगता, शब्दों_ का_ भंडार,_ शीघ्र_ अनुवाद_ करने_ की_ क्षमता_ आदि_ अनुवादकों_ के_ लिए_ अपेक्षित गुण_ है ।

दूर_ संचार_ के_ अनुवाद_ में_ अनजान_ जगहों_ के_ नामों,_ व्यक्ति_ के_ नामों,_ संक्षेपों_ के_ अनुवाद आदि_ की_ भी_ समस्याएँ_ सामने_ आती_ हैं_ ।_ आज_ कल_ अंग्रेजी_ रुप_ की_ जगह_ प्रचलित भारतीय_ रुप_ लिखने_ की_ प्रवृति_ मिलती_ है_ ।_ जैसे_ -_ सिलोन_ की_ श्रीलंका,_ काइरो_ को काहिरा_ आदि_ ।_ अतः_ अनुवादक_ को_ पर्याप्त_ ज्ञान_ होना_ चाहिए ।

(5) **प्रशासनिक_ एवं_ कानूनी_ अनुवाद_ :**

हमारे_ देश_ में_ अंग्रेजी_ के_ स्थान_ पर_ भारतीय_ भाषाओं_ की_ प्रमुखता_ दी_ जा_ रही_ है_ ।_ अतः हिन्दी_ से_ अंग्रेजी_ और_ अंग्रेजी_ से_ हिन्दी_ में_ अनुवाद_ की_ आवश्यकता_ बढ़ती_ जा_ रही_ है । प्रशासनिक_अनुवाद_के_अंतर्गत_सरकारी_पत्र,_आलेखन,_टिप्पण,_सुचनाएँ,_परिपत्र,_विज्ञापन, रिपोर्ट_इत्यादि_का_समावेश_होता_है_।_भारत_जैसे_बहुभाषिक_देश_में_इस_प्रकार_का_अनुवाद आवश्यक_हो_जाता_है_।_अन्य_देशों_की_शासन_व्यवस्था_के_परिचय_हेतु_यह_अनुवाद_उपयोगी साबित_ होता_ है_ ।_ इस_ प्रकार_ का_ अनुवाद_ सामान्य_ जनों_ के_ लिए_ होने_ के_ कारण_ इसकी भाषा_ सरल_ होनी_ चाहिए_ ।_ इसमें_ अलंकारिता,_ घुमावफिराव_ का_ निषेध_ है_ ।_ इसकी_ भाषा सरल,_सीधी,_स्पष्ट_तथा_सुग्राह्य_हो_।_इसके_वाक्य_यथासंभव_छोटे_हों_।_जटिल_या_पारिभाषिक शब्दों_ के_ स्थान_ पर_ सरल_ एवं_ सुस्पष्ट_ शब्दों_ का_ प्रयोग_ हो_ ।

प्रशासनिक_ शब्दावली_ की_ सबसे_ बडी_ कठिनाई_ है_ कि_ अंग्रेजी_ शब्द_ के_ लिए_ कभी-कभी भारतीय_ भाषाओं_ में_ एक_ से_ अधिक_ मिलते_ -_ जुलते_ शब्द_ प्राप्त_ होते_ हैं_ ।_ जिससे_ शब्द चयन_ में_ समस्या_ आती_ है_ ।_ जैसे_ Interest - गोपनीय,_ अंतरंग_ आदि_ ।_ इसी_ तरह_ हिन्दी के_ कुछ_ शब्दों_ के_ लिए_ अंग्रेजी_ में_ एक_ से_ अधिक_ शब्द_ है_ जिनका_ प्रयोग_ समझकर_ करना चाहिए_ ।_ जैसे_ -_ अनुबंध_ - Annexture, Contract, आधिकारिक_ - Official, Anthoritative, आलेख_ - Writing, draft आदि_ ।_ प्रशासनिक_ अनुवाद_ के_ लिए_ आवश्यक_ है_ कि_ उसके प्राविधिक_ स्वरुप_ को_ बनाये_ रखते_ हुए_ भी_ सरल,_ स्पष्ट_ अभिव्यक्ति_ के_ लिए_ प्रयास_ किया जाय_ ।

- **प्रकृति_ के_ आधार_ पर_ अनुवाद_ के_ प्रकार_ :**

(1) **शब्दानुवाद_ :** 'शब्दानुवाद'_ शब्द_ 'शब्द_ +_ अनुवाद'_ से_ बना_ है_ ।_ स्रोत_ भाषा_ के_ प्रत्येक शब्द_ को_ ध्यान_ में_ रखकर_ किया_ गया_ अनुवाद_ शब्दानुवाद_ कहलाता_ है_ ।_ इसमें_ स्रोत भाषा_ और_ लक्ष्य_ भाषा_ की_ प्रकृति_ को_ दृष्टि_ में_ न_ रखकर_ शब्दश_ :_ अनुवाद_ किया जाता_ है_ ।_ इसमें_ अनुवादक_ किसी_ भी_ शब्द_ की_ उपेक्षा_ नहीं_ करता_ ।_ शब्दनुवाद_ के तीन_ भेद_ किये_ जा_ सकते_ हैं_ :

(I) शब्द_ -_ प्रतिशब्द_ अनुवाद

(II) शब्दक्रम_ मुक्त_ शब्दानुवाद

(III) शाब्दिक_ अनुवाद

(I) **शब्द_ -_ प्रतिशब्द_ अनुवाद_ :_ (Word to Word Transtation)**

शब्द_ प्रतिशब्द_ अनुवाद_ में_ स्त्रोत_ भाषा_ के_ प्रत्येक_ शब्द_ को_ ध्यान_ में_ रखकर_ शब्दश :_ अनुवाद_ किया_ जाता_ है_ ।_ इसमें_ शब्द_ के_ स्तर_ पर_ क्रमबद्ध_ अनुवाद_ किया_ जाता_ है ।

जैसे_ - He is going to school.

वह_ है_ जा_ रहा_ स्कूल_ ।

Rama killed Rawana.

राम_ मारा_ रावण_ को_ ।

इस_ प्रकार_ का_ अनुवाद_ अच्छा_ नहीं_ होता_ है_ ।_ इस_ प्रकार_ के_ अनुवाद_ में_ लक्ष्य_ भाषा की_ प्रकृति_ पर_ ध्यान_ न_ देने_ के_ कारण_ अनुवाद_ हास्यास्पद_ लगता_ है_ ।

(II) **शब्दक्रम_ मुक्त_ शब्दानुवाद_ :** शब्दक्रम_ मुक्त_ शब्दानुवाद_ में_ मूल_ के_ प्रत्येक_ शब्द_ पर ध्यान_ देकर_ अनुवाद_ किया_ जाता_ है,_ लेकिन_ इसमें_ शब्दों_ के_ क्रमानुसार_ अनुवाद_ नहीं किया_ जाता_ ।_ इस_ अनुवाद_ में_ स्रोत_ भाषा_ की_ शैलीगत_ छाया_ स्पष्ट_ रुप_ से_ देखने_ को मिलती है ।

जैसे_ - This is to certifie that....

यह_ प्रमाणित_ किया_ जाता_ है...

Doctor felt my puse.

डॉक्टर_ ने_ मेरी_ नब्ज_ महसूस_ की_ ।

(III) **शाब्दिक_ अनुवाद_ :**

शाब्दिक_ अनुवाद_ में_ प्रत्येक_ शब्द,_ वाक्य,_ उपवाक्य_ आदि_ का_ सूक्ष्मता_ से_ ध्यान_ रखा जाता_ है_ ।_ इसमें_ अर्थ_ तथा_ अभिव्यक्ति_ की_ सभी_ बारीकियों_ को_ देखा_ जाता_ है_ ।_ इस प्रकार_ के_ अनुवादक_ न_ मूल_ की_ कोई_ बात_ छोड़ता_ है_ और_ न_ उसमें_ अपनी_ तरफ_ से

कुछ जोड़ता है । इस तरह का अनुवाद वास्तविक और आदर्श अनुवाद है । विज्ञान, तकनीकी, विधि, ज्योतिष, गणित आदि विषयों के लिए शब्दानुवाद आदर्श माना जाएगा ।

जैसे - Saving Bank - बचत बैंक

Angle of Vision - दृष्टिकोण

(2) **भावानुवाद :**

भावानुवाद में मुख्यत : मूल सामग्री के भावों का अनुवाद होता है । जहाँ स्रोत सामग्री का शब्दानुवाद करना असंभव हो जाता है तब वहाँ भावानुवाद करना पड़ता है । ललित साहित्य के लिए भावानुवाद अधिक उपयुक्त होता है । सृजनात्मक प्रतिभा वाला अनुवादक ही इस प्रकार का अनुवाद कर सकता है । जिससे यह अनुवाद हमें सृजनशील लेखन का अहसास कराता है । भावपूर्ण संप्रेषण ही इसकी प्रमुख विशेषता है ।

जैसे - Home Government - गृह सरकार

Home Signal - निकट चिह्न

(3) **छायानुवाद :**

जिस अनुवाद में मूल की छाया - मात्र होती है उसे छायानुवाद कहते हैं । इसमें अनुवादक मूल पाठ के शब्द भाव, भाषा और शिल्प से मुक्त होकर मूल पाठ की छाया को अनुवाद में ढालता है । इस प्रकार के अनुवाद में नाम, स्थान, पात्र, वातावरण, देशकाल आदि का देशीकरण किया जाता है । भारतेन्दु ने शेक्सपियर के "द मर्चेन्ट ऑफ वेनिस" का अनुवाद करते समय पात्रों के नामों का भारतीयकरण कर दिया है ।

(4) **रुपांतरण :** रुपांतरण शब्द का अर्थ है - रुप को बदलना । इस प्रकार के अनुवाद में अनुवादक स्रोत भाषा के पाठ की अपनी रुचि या आवश्यकतानुसार लक्ष्य भाषा में परिवर्तित कर देता है । इसमें मूल सामग्री को कुछ बढ़ाकर, संक्षिप्त कर, सरल कर अथवा विधा के रुप में परिवर्तित कर प्रस्तुत किया जाता है । जैसे मूल सामग्री के उपन्यास को एकांकी नाटक के रुप में परिवर्तित करना, नाटक को उपन्यास या कहानी या अन्य विद्या के रुप में । प्रेमचंद के 'गोदान' उपन्यास का विष्णु प्रभाकर द्वारा 'होरी' नाम से नाट्य रुपांतरण हुआ है । मन्नू भंडारी के 'महाभोज' उपन्यास का भी नाट्य रुपांतरण हुआ है । आजकल रेडियो और दूरदर्शन पर इस प्रकार के रुपांतरण की प्रवृत्ति देखने मिलती है ।

(5) **सारानुवाद :**

सारानुवाद में मूल सामग्री का संक्षिप्त में अनुवाद किया जाता है । इसमें अनुवादक मूल की समग्र बातों को संक्षिप्त रुप में प्रस्तुत करता है । इस प्रकार के अनुवाद संसद - सभागृह में अधिवेशनों के दौरान राजनेताओं के लंबे भाषण, विविध सभाओं में दिये मंत्रियों, समाज सेवकों, विदेशी प्रमुख अतिथियों, विविध साहित्य सम्मेलनों में साहित्यकारों द्वारा दिये भाषणों का सारानुवाद ही किया जाता है । सारानुवाद का मुख्य उद्देश्य स्रोत भाषा में कही गयी विस्तृत बातों का सार ही प्रस्तुत करना होता है । डॉ. भोलानाथ तिवारी के शब्दों में - "अपनी संक्षिप्तता, सरलता, स्पष्टता तथा लक्ष्य भाषा के स्वाभाविक - सहज प्रवाह के कारण व्यावहारिक कार्यो के सामान्य अनुवाद की तुलना में सारानुवाद अधिक उपयोगी पाया गया है ।"

(6) **भाषा या टीका परक अनुवाद :**

भाषा या टीका परक अनुवाद में स्रोत भाषा की मूल की व्याख्या के साथ अनुवाद किया जाता है । इस प्रकार के अनुवाद में भाष्यकार स्पष्टीकरण के लिए अपनी ओर

से_ उद्धरण,_ उदाहरण_ और_ प्रमाण_ जोड़_ सकता_ है_ ।_ जैसे_ आचार्य_ विश्वेश्वर_ की_ 'हिन्दी अभिनव_ भारती',_ 'हिन्दी_ ध्वन्यालोकलोचन'_ आदि_ की_ विद्वतापूर्ण_ व्याख्याएँ_ या_ संस्कृत की_ काव्यशास्त्रीय_ रचना_ 'साहित्य_ दर्पण'_ पर_ डॉ._ सत्यव्रतसिंह_ की_ व्याख्या,_ गीता_ पर बालगंगाधर_ तिलक_ का_ 'गीतारहस्य'_ आदि_ इसी_ प्रकार_ के_ अनुवाद_ हैं_ ।_ वेदों_ और_ उपनिषदों के_ भाष्य_ इसी_ परंपरा_ में_ आते_ हैं_ ।

(7) **आशु_ अनुवाद_ :**

किसी_ वार्ता_ या_ संभाषण_ आदि_ के_ अनुवाद_ को_ आशु_ -_ अनुवाद_ कहा_ जाता_ है_ ।_ दो भिन्न-भाषा-भाषी_ को_ संवाद_ स्थापित_ करने_ के_ लिए_ दोनों_ के_ बीच_ 'दुभाषिया'_ होना_ जरूरी होता_ है_ ।_ इसी_ दुभाषिये_ के_ जरिए_ विभिन्न_ देशों_ के_ मंत्रीगण,_ नेता_ आदि_ सामाजिक, आर्थिक,_ राजनैतिक,_ सांस्कृतिक_ जैसे_ विषयों_ पर_ वार्तालाप_ कर_ सकते_ हैं_ ।_ यही_ आशु अनुवाद_ या_ वार्तानुवाद_ है_ ।_ आशु_ अनुवाद_ का_ भाषा_ ज्ञान_ प्रामाणिक_ एवं_ गहन_ होना चाहिए ।_ इस_ प्रकार_ का_ अनुवाद_ कार्य_ कठिन_ होता_ है,_ क्योंकि_ दो_ व्यक्तियों_ के_ बीच आमने -_ सामने_ ही_ बिना_ किसी_ कोश,_ संदर्भ-ग्रंथ_ या_ किसी_ साधन_ की_ सहायता_ लिए करना_ पड़ता_ है_ ।_ इसी_ दृष्टि_ से_ उस_ दोनों_ देशों_ के_ इतिहास_ एवं_ संस्कृति_ का_ ज्ञान_ _होना आवश्यक_ है_ ।

2.4 सारबिन्दु

- आशा_ है,_ आप_ अनुवाद_ के_ प्रकारों_ से_ अच्छी_ तरह_ परिचित_ हो_ गये_ होंगे_ ।_ आइये ! इकाई_ में_ आयी_ प्रमुख_ बातों_ को_ एक_ बार_ फिर_ से_ दोहरा_ लें_ -
- अनुवाद_ के_ प्रकार_ का_ वर्गीकरण_ माध्यम,_ प्रक्रिया,_ पाठ_ और_ विषय_ वस्तु_ या_ प्रकृति के_ आधार_ पर_ किया_ जाता_ है_ ।
- माध्यम_ के_ आधार_ पर_ अनुवाद_ के_ तीन_ प्रकार_ -_ प्रतीक,_ भाषा_ और_ लेखन_ हैं_ ।
- प्रक्रिया_ के_ आधार_ पर_ अनुवाद_ के_ दो_ प्रकार_ हैं_ :_ पाठधर्मी_ अनुवाद_ और_ प्रभावधर्मी अनुवाद_ ।
- पाठ_ के_ आधार_ पर_ अनुवाद_ के_ दो_ भेद_ हैं_ :_ अभिव्यक्ति_ और_ अर्थ_ (वाच्य)_ पक्ष
- विषयवस्तु_ एवं_ प्रकृति_ के_ आधार_ पर_ अनुवाद_ के_ प्रकार_ साहित्यिक_ और_ साहित्येतर हैं ।
- साहित्यिक_ अनुवाद_ में_ गद्य_ और_ पद्य_ दोनों_ विधाओं_ का_ अनुवाद_ किया_ जाता_ है ।
- साहित्येतर_ अनुवाद_ में_ वैज्ञानिक_ तकनीकी,_ वाणिज्य,_ मानविकी_ -_ समाजशास्त्रीय, संचार_ सूचना,_ प्रशासन_ कानून_ आदि_ का_ अनुवाद_ किया_ जाता_ है_ ।
- प्रकृति_ के_ आधार_ पर_ अनुवाद_ के_ प्रकारों_ में_ शब्दानुवाद,_ भावानुवाद,_ छायानुवाद, रुपांतरण,_ सारानुवाद,_ भाषा_ या_ टीका_ परक_ अनुवाद,_ आशु_ अनुवाद_ है_ ।
- अनुवादक_ श्रेष्ठ_ अनुवाद_ के_ द्वारा_ दो_ भाषा_ संस्कृतियों_ के_ बीच_ पुल_ का_ कार्य_ करता है_ ।

2.5 परीक्षोपयोगी_ प्रश्नावली

(क) निबंधात्मक_ प्रश्न_ :

(I) अनुवाद_ के_ प्रकारों_ को_ समझाइए_ ।

(II) विषयवस्तु_ या_ प्रकृति_ के_ आधार_ पर_ अनुवाद_ के_ प्रकारों_ की_ चर्चा_ कीजिए_ ।

(III) साहित्येतर_ अनुवाद_ के_ प्रकारों_ पर_ विचार_ कीजिए_ ।

(ख) टिप्पणी लिखिए :

(1) माध्यम के आधार पर अनुवाद के प्रकार ।

(2) कथासाहित्य का अनुवाद

(3) नाटकानुवाद

(4) शब्दानुवाद और छायानुवाद

(ग) वस्तुनिष्ठ प्रश्न :

(अ) रिक्तस्थानों की पूर्ति कीजिए :

(1) माध्यम के आधार पर अनुवाद के ________ प्रकार हैं ।
(तीन / चार)

(2) काव्यानुवाद का समावेश ________ अनुवाद में किया जाता हैं ।
(साहित्येतर / साहित्यिक)

(3) नाटकानुवाद के ________ भेद हैं ।
(दो / तीन)

(4) जिस अनुवाद में मूल की छायामात्र होती है उसे ________ अनुवाद कहते हैं ।
(भावानुवाद / छायानुवाद)

(5) वाणिज्य अनुवाद का समावेश ________ अनुवाद में किया जाता है ।
(साहित्यिक / साहित्येतर)

(ब) जोड मिलाइए :

क	ख
(1) साहित्यिक अनुवाद	(क) वाणिज्य अनुवाद
(2) साहित्येतर अनुवाद	(ख) काव्यानुवाद
(3) शब्दानुवाद का भेद	(ग) भावों का अनुवाद
(4) भावानुवाद	(घ) शाब्दिक अनुवाद

(स) सही गलत बताइए :

(1) माध्यम के आधार पर अनुवाद के तीन प्रकार हैं ।

(2) आशु अनुवाद लिखित होता है ।

(3) साहित्यिक अनुवाद में वाणिज्य अनुवाद का समावेश किया जाता है ।

(4) पद्यानुवाद का पर्याय शब्द काव्यानुवाद है ।

(5) भारतेन्दु ने शेक्सपियर के नाटक 'मर्चेन्ट ऑफ वेनिस' का अनुवाद 'दुर्लभ बन्धु' नाम से किया था ।

2.6 उपयोगी पाठ्य सामग्री

---

(1) प्रयोजनमूलक हिन्दी, डॉ. लक्ष्मीकान्त पाण्डेय, डॉ. प्रतिभा अवस्थी, आशीष प्रकाशन, कानपुर - 2005

(2) अनुवाद_ विज्ञान_ की_ भूमिका,_ कृष्णकुमार_ गोस्वामी,_ राजकमल_ प्रकाशन,_ दिल्ली_ - 2008

(3) अनुवाद_ -_ चिन्तन_ दृष्टि_ और_ अनुदृष्टि,_ डॉ._ सु._ नागलक्ष्मी,_ जवाहर_ पुस्तकालय, सदर_ बाजार,_ मथुरा_ (उ.प्र.)_ - 2009

इकाई 3 अनुवाद का महत्व और चुनौतियाँ

रूपरेखा

3.1 उदेश्य

3.2 प्रस्तावना

3.3 अनुवाद का महत्व

3.3.1 साहित्य के क्षेत्र में अनुवाद का महत्व

3.3.2 विधि और न्याय के क्षेत्र में अनुवाद का महत्व

3.3.3 शिक्षा के क्षेत्र में अनुवाद का महत्व

3.3.4 जनसंचार के क्षेत्र में अनुवाद का महत्व

3.3.5 सांस्कृतिक समन्वय में अनुवाद का महत्व

3.3.6 धर्म के क्षेत्र में अनुवाद का महत्व

3.3.7 फिल्म उद्योग में अनुवाद का महत्व

3.3.8 संसदीय व्यवस्था में अनुवाद का महत्व

3.3.9 विज्ञान,तकनीकी एवं प्रौद्योगिकी में अनुवाद का महत्व

3.3.10 प्रशासन के क्षेत्र में अनुवाद का महत्व

3.4 अनुवाद की चुनौतियाँ

3.4.1 व्याकरण से जुड़ी समस्याएँ

3.4.2. शब्द चयन की समस्याएँ

3.4.3 मुहावरें और लोकोक्ति से जुड़ी समस्याएँ

3.4.4 सांस्कृतिक परिवेश से जुड़ी समस्याएँ

3.4.5 शब्द-शक्तियों के प्रयोग की समस्या

3.4.6 साहित्यिक विधाओं के अनुवाद की समस्या

3.4.7 पौराणिक प्रतिकों के अनुवाद से जुड़ी समस्याएँ

3.4.8 विज्ञापन के अनुवाद की समस्या

3.5 सार-बिंदु

3.6 परीक्षा उपयोगी प्रश्नावली

3.7 उपयोगी पाठ्य सामग्री

3.1 उदेश्य

इस इकाई का विषय 'अनुवाद का महत्व और चुनौतियाँ' है. इस इकाई को पढ़ने के बाद आप –

- अनुवाद के महत्व के बारे में विस्तार से जान सकेंगे.
- विविध क्षेत्रों में अनुवाद के महत्व को समझ सकेंगे.
- अनुवाद कार्य में आने वाली चुनौतियों के बारे में जान सकेंगे.
- साहित्य, विधि, न्याय, शिक्षा, जनसंचार, धर्म, फिल्म उद्योग आदि में अनुवाद की आवश्यकता और उसके महत्व के बारे में विस्तार से जान पाएँगे.
- अनुवाद के विस्तृत कार्यक्षेत्र के बारे में जान पाएँगे.
- आज के आधुनिक युग में अनुवाद की क्या आवश्यकता है उसके बारे में जान सकेंगे.

3.2 प्रस्तावना

अनुवाद भाषाओं और संस्कृतियों के बीच एक पुल की तरह काम करता है. यह विचारों, भावनाओं और ज्ञान को साझा करने का एक महत्वपूर्ण माध्यम है. इसके द्वारा साहित्य, विज्ञान, तकनीक और कला को वैश्विक स्तर पर पहुँचाया जा सकता है. साथ ही, यह अंतर्राष्ट्रीय व्यापार, राजनीति, शिक्षा और सांस्कृतिक आदान-प्रदान के लिए भी आवश्यक है.

अनुवाद केवल शब्दों को बदलने का कार्य नहीं है,अपितु यह संदर्भ, भावना और सांस्कृतिक पहलुओं को भी शामिल करता है. यही कारण है कि यह प्रक्रिया कई कठिनाइयों से घिरी होती है. भाषाओं की संरचना में अंतर, सांस्कृतिक सटीकता बनाए रखना, और तकनीकी शब्दों का सही अर्थ निकालना प्रमुख चुनौतियाँ हैं.

3.3 अनुवाद का महत्व

अनुवाद का महत्व आज अत्यधिक बढ़ चुका है, और यह क्षेत्र पहले से कहीं अधिक विस्तृत हो चुका है. यह शब्द प्राचीन काल से प्रचलित रहा है, लेकिन वर्तमान में इसके अर्थ और कार्यक्षेत्र में व्यापक विस्तार हुआ है. आज के युग में ज्ञान और विज्ञान के प्रत्येक क्षेत्र में अनुवाद की आवश्यकता तेजी से बढ़ रही है. अनेक ऐसे क्षेत्र हैं जहाँ अनुवाद एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है. इन क्षेत्रों में अनुवाद के योगदान को समझना बहुत जरूरी है

3.3.1 साहित्य के क्षेत्र में अनुवाद का महत्व

साहित्य के क्षेत्र में अनुवाद की भूमिका अत्यधिक महत्वपूर्ण है. प्राचीन युग की भाषाओं में रचित साहित्यिक कृतियों को आज के पाठक अनुवाद के माध्यम से ही समझने और सराहने में सक्षम हो पाते हैं. एक क्षेत्र विशेष की भाषा में लिखी गई रचनाएँ जब अन्य भाषाओं में अनुवादित होती हैं, तो न केवल उनका प्रसार बढ़ता है बल्कि उनके रचनाकारों को भी अंतर्राष्ट्रीय मान्यता मिलती है. जहाँ अन्य क्षेत्रों की भाषा मुख्यतः स्पष्ट और सीधी होती है, वहीं साहित्य में लेखक अपनी अभिव्यक्ति को गहराई देने के लिए शब्दों के अर्थ की विभिन्न परतों का उपयोग करता है. इस कारण साहित्य का अनुवाद करते समय विशेष सतर्कता और संवेदनशीलता की आवश्यकता होती है.

साहित्यिक अनुवादक को यह सुनिश्चित करना होता है कि मूल रचना की भावनात्मक गहराई, सांस्कृतिक संदर्भ, और कलात्मक सौंदर्य अक्षुण्ण रहें. गद्य की तुलना में काव्य का अनुवाद अधिक जटिल होता है, क्योंकि इसमें शब्दों की लय, ध्वनि, और भावना को भी सटीकता से व्यक्त करना होता है. इसलिए, साहित्यिक अनुवाद केवल भाषाई कौशल ही नहीं, अपितु रचनात्मकता और संवेदनशीलता की भी माँग करता है. साहित्य के अनुवाद के अंतर्गत गद्यानुवाद, पद्यानुवाद, कथानुवाद, काव्यानुवाद, नाट्यानुवाद, संवादानुवाद, अन्य विधाएँ (आत्मकथा, जीवनी, डायरी, रीपोर्ताज, रेखाचित्र, संस्मरण, निबंध) आदि को समाविष्ट किया जा सकता है.

3.3.2 विधि और न्याय के क्षेत्र में अनुवाद का महत्व

न्याय और कानून समाज के प्रमुख स्तंभ होते हैं, जो सामाजिक व्यवस्था को संचालित करते हैं. न्यायालयों में उपयोग की जाने वाली भाषा और उनके अभिव्यक्तियों की प्रकृति विशिष्ट होती है, जिससे

विधिक अनुवाद एक जटिल कार्य बन जाता है.विधि से जुड़े दस्तावेज़ों में अंग्रेजी के जो वाक्य प्रयोग में लाए जाते हैं, वे अक्सर जटिल और लंबे होते हैं. इन्हें सरल और स्पष्ट हिंदी में परिवर्तित करना अनुवादक की जिम्मेदारी होती है, ताकि समझने में कोई कठिनाई न हो. भारत में उच्चतम न्यायालयों और विधिक कार्यवाहियों में मुख्य रूप से अंग्रेजी भाषा का उपयोग होता है, जबकि निचली अदालतों में हिंदी या क्षेत्रीय भाषाएँ प्रचलित हैं. न्यायिक प्रक्रियाओं को सुचारू रूप से संचालित करने के लिए अनुवाद आवश्यक हो जाता है.

न्यायालय की भाषा यदि जनता की भाषा होगी, तो न्याय को समझना और स्वीकार करना सरल होगा. न्याय का वास्तविक उद्देश्य तभी पूरा होता है, जब सामान्य नागरिक उसे समझ पाए. इसीलिए, विधि और न्याय की भाषा को सरल और जनसामान्य की भाषा में अनुवादित करना आवश्यक है.

3.3.3 शिक्षा के क्षेत्र में अनुवाद का महत्व

हमारे देश में विज्ञान और तकनीकी की शिक्षा मुख्य रूप से अंग्रेजी में दी जाती है,किन्तु अब इसमें धीरे-धीरे बदलाव देखा जा रहा है. वर्तमान समय में विद्यालयों और विश्वविद्यालयों में पढ़ाई का माध्यम हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाएँ भी बन रही हैं. अंग्रेजी से अनुवाद कर विभिन्न विषयों की शिक्षा इन भाषाओं में उपलब्ध कराई जा रही है. इस बदलाव के कारण अंग्रेजी माध्यम की प्राथमिकता धीरे-धीरे कम हो रही है. अनुवाद के इस प्रयास ने भारतीय भाषाओं को शिक्षा के क्षेत्र में एक नई पहचान और सम्मान दिलाने का अवसर प्रदान किया है.

3.3.4 जनसंचार के क्षेत्र में अनुवाद का महत्व

जनसंचार के क्षेत्र में अनुवाद की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है.मुख्य रूप से समाचार पत्र, रेडियो और दूरदर्शन जैसे संचार माध्यमों में अनुवाद का अत्यधिक प्रयोग होता है. आज के समय में ये माध्यम हर भाषा-क्षेत्र में लोकप्रियता प्राप्त कर रहे हैं. अंतर्राष्ट्रीय न्यूज एजेंसियां विभिन्न भाषाओं में प्रकाशित और प्रसारित समाचारों का अनुवाद कर अपने ग्राहकों को उपलब्ध कराती हैं.

जनसंचार में अनुवाद एक अत्यंत प्रभावी और व्यापक क्षेत्र है. यह समाज के हर वर्ग तक सूचनाओं को पहुँचाने का कार्य करता है. रेडियो, टेलीविजन और समाचार पत्रों में अनुवाद की भूमिका विशिष्ट होती है. जनसंचार को मुख्यतः दो वर्गों में बांटा जा सकता है:

1. प्रिंट मीडिया में अनुवाद
2. इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में अनुवाद

प्रिंट मीडिया में समाचार पत्र सम्मिलित होते हैं. समाचार अनुवाद को साहित्यिक अनुवाद से अलग माना जाता है, क्योंकि इसकी भाषा सरल, स्पष्ट और पाठकों के अनुकूल होनी चाहिए. दूसरी ओर, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के अंतर्गत रेडियो और टेलीविजन आते हैं. यहां विभिन्न देशों की खबरों को स्थानीय भाषाओं, जैसे हिंदी या अन्य क्षेत्रीय भाषाओं में अनुवाद कर प्रसारित किया जाता है.

आकाशवाणी का उदाहरण लें तो यह भारत की प्रमुख भाषाओं में कार्यक्रम प्रसारित करती है. रोज़ाना लगभग बाईस भाषाओं में समाचार तैयार किए जाते हैं, जिनका कार्य अनुवादकों द्वारा संपन्न होता है. रेडियो और दूरदर्शन दोनों में अनुवाद की प्रक्रिया अत्यंत आवश्यक है, क्योंकि यह सूचना को व्यापक जनसमूह तक पहुँचाने का आधार है.

3.3.5 सांस्कृतिक समन्वय में अनुवाद का महत्व

सांस्कृतिक समन्वय के संदर्भ में अनुवाद की भूमिका अत्यधिक महत्वपूर्ण हो जाती है. जब किसी देश की सांस्कृतिक धरोहर को दूसरे देशों तक पहुँचाना हो, तो वह उनकी भाषा में ही समझाई जा सकती है. इस प्रक्रिया में अनुवाद एक सेतु की तरह कार्य करता है. सांस्कृतिक आदान-प्रदान के दौरान अक्सर अनुवादकों की सहायता ली जाती है, जो संवाद को सरल और प्रभावी बनाते हैं.

3.3.6 धर्म के क्षेत्र में अनुवाद का महत्व

धार्मिक क्षेत्र में भाषा की भूमिका विशेष होती है. भारत में, उदाहरण के लिए, हिन्दू धर्म से जुड़ी संस्कृत भाषा का एक विशिष्ट स्थान रहा है. लेकिन संस्कृत में लिखे गए ग्रंथों को सामान्य नागरिक तक पहुँचाने के लिए उनका अनुवाद करना आवश्यक हो जाता है.श्रीमद् भगवद् गीता जैसे धर्मग्रंथों को क्षेत्रीय

भाषाओं में अनुवादित किया गया है ताकि सभी लोग उसके संदेश को समझ सकें. इसी प्रकार, प्राचीन संस्कृत ग्रंथों का अनुवाद समय-समय पर किया जाता रहा है और यह प्रक्रिया आज भी जारी है.

3.3.7 फिल्म उद्योग में अनुवाद का महत्व

फिल्मों का अनुवाद तब होता है जब एक भाषा में बनी फिल्म को दूसरी भाषा में प्रस्तुत किया जाता है. यह प्रक्रिया फिल्मों को अधिक से अधिक दर्शकों तक पहुँचाने में सहायक होती है. भारत में कई क्षेत्रीय भाषाओं में फिल्में बनती हैं, जिन्हें हिन्दी में अनुवादित या डबिंग करके पूरे देश के सिनेमाघरों में प्रदर्शित किया जाता है. न केवल क्षेत्रीय बल्कि विदेशी फिल्मों को भी हिन्दी में डब कर दर्शकों के लिए उपलब्ध कराया जाता है. इस क्षेत्र में अनुवाद का कार्य बड़े पैमाने पर किया जाता है. आजकल किसी भी सफल फिल्म को उसकी मूल भाषा से दूसरी भाषाओं में डब कर रिलीज़ करना आम बात हो गई है. इसमें केवल संवादों और भाषा का अनुवाद होता है.

3.3.8 संसदीय व्यवस्था में अनुवाद का महत्व

संसदीय कार्यप्रणाली में अनुवाद की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है. भारत में हिन्दी को राजभाषा का दर्जा प्राप्त है,परन्तु अभी हिंदी पूर्ण रूप से राजभाषा के रूप में लागू नहीं हो पाई है. संसद में प्रस्तुत किए जाने वाले अनेक विधेयक और दस्तावेज अंग्रेजी में तैयार किए जाते हैं, जिन्हें बाद में हिन्दी में अनुवाद कर पेश किया जाता है. संसद में वक्ता अंग्रेजी भाषा का उपयोग कर सकते हैं, लेकिन उनके भाषणों का अनुवाद हिन्दी या अन्य भारतीय भाषाओं में करके जनता के समक्ष रखा जाता है. अनुवाद प्रक्रिया से यह सुनिश्चित होता है कि सभी भाषाओं के बोलने वाले नागरिक संसदीय कार्यों को समझ सकें.

3.3.9 विज्ञान,तकनीकी एवं प्रौद्योगिकी में अनुवाद का महत्व

विज्ञान, तकनीकी और प्रौद्योगिकी में अनुवाद का महत्व अत्यधिक बढ़ता जा रहा है, क्योंकि यह एक ऐसा माध्यम है जो वैज्ञानिक एवं तकनीकी सामग्री को एक भाषा से दूसरी भाषा में इस प्रकार प्रस्तुत करता है कि उसकी मौलिक जानकारी और तथ्यों में कोई परिवर्तन न हो. जहाँ साहित्यिक अनुवाद में भावनाओं और अभिव्यक्ति का ध्यान रखा जाता है, वहीं वैज्ञानिक और तकनीकी अनुवाद में तर्क और विचारों की सटीकता को प्राथमिकता दी जाती है.

विज्ञान की प्रकृति सार्वभौमिक होती है और इसकी सीमाएँ भाषा की बाधाओं से परे होती हैं. छात्रों को शोध, अध्ययन और आविष्कारों के बारे में जानने के लिए अक्सर विदेशी भाषाएँ सीखनी पड़ती हैं. वे

इन विदेशी स्रोतों को अपनी मातृभाषा में अनुवादित कर वैज्ञानिक और तकनीकी ज्ञान प्राप्त करते हैं. आधुनिक युग में नई उपलब्धियों और वैश्विक प्रगति को समझने के लिए अनुवाद आवश्यक उपकरण बन गया है. जैसे-जैसे विज्ञान का महत्व बढ़ रहा है, वैज्ञानिक और तकनीकी अनुवाद की माँग भी तेजी से बढ़ रही है.

इस प्रकार के अनुवाद में विषयवस्तु और जानकारी का विशेष महत्व होता है, जबकि भाषा की सजावट गौण मानी जाती है. यहाँ मुख्य उद्देश्य तथ्य, अवधारणाएँ और सूचनाएँ स्पष्ट और सरल तरीके से प्रस्तुत करना है. इसलिए, एक कुशल अनुवादक के लिए विषय का गहन ज्ञान और तकनीकी दक्षता अनिवार्य होती है.

वैज्ञानिक और तकनीकी अनुवाद के मुख्य तत्व निम्नलिखित हैं:

1. वस्तुनिष्ठता
2. तथ्यपरकता
3. सरलता
4. स्पष्टता
5. जानकारी से भरपूर होना
6. व्यक्तिगत दृष्टिकोण से मुक्त होना
7. अलंकारों से रहित होना
8. संदेह रहित प्रस्तुति
9. पारिभाषिक शब्दावली का प्रयोग

इस क्षेत्र में सफल अनुवाद के लिए विशेष रूप से प्रशिक्षित अनुवादकों की आवश्यकता होती है, जो विज्ञान और तकनीकी विषयों में दक्ष हों.

3.3.10 प्रशासन के क्षेत्र में अनुवाद का महत्व

प्रशासनिक अनुवाद का क्षेत्र साहित्यिक, वैज्ञानिक या तकनीकी अनुवादों की तरह विश्वव्यापी नहीं है. यह मुख्य रूप से भारत की प्रशासनिक प्रणाली, कार्यालयों, बैंकों और सरकारी संस्थानों से जुड़े कार्यों से संबंधित है. इसमें मुख्य रूप से अंग्रेजी से हिंदी और हिंदी से अंग्रेजी में अनुवाद किया जाता है. भारत में प्रशासनिक अनुवाद की आवश्यकता इसलिए बढ़ी है क्योंकि हिंदी को राजभाषा का दर्जा दिया गया है और अंग्रेजी को सहायक भाषा के रूप में अपनाया गया है. प्रशासनिक भाषा सीधी और स्पष्ट होती है, इसलिए इसका अनुवाद अपेक्षाकृत सरल होता है. अनुवाद के दौरान इस बात का ध्यान रखना बेहद जरूरी है कि प्रशासनिक भाषा में लिखे गए वाक्य एक ही अर्थ व्यक्त करें.

इस प्रकार, यह स्पष्ट है कि अनुवाद का महत्व दिन-प्रतिदिन हर क्षेत्र में बढ़ रहा है. आधुनिक समय में ज्ञान और विज्ञान के लगभग सभी क्षेत्रों में अनुवाद आवश्यक हो गया है, और यह अब हर क्षेत्र का अभिन्न अंग बन चुका है.

बोध प्रश्न:

1) गद्य की तुलना में काव्य का अनुवाद जटिल क्यों है?
2) जनसंचार को मुख्यतः किन दो वर्गों में बांटा जा सकता है?
3) भारत में उच्चतम न्यायालयों और विधिक कार्यवाहियों में मुख्य रूप से किस भाषा का उपयोग होता है?
4) शिक्षा के क्षेत्र में अनुवाद का क्या महत्व है.
5) सांस्कृतिक समन्वय में अनुवाद की आवश्यकता क्यों है.

3.4 अनुवाद की चुनौतियाँ

अनुवाद करना एक चुनौतीपूर्ण कार्य है, जो अक्सर उतना सरल नहीं होता जितना पहली नज़र में लगता है. अनुवाद प्रक्रिया के दौरान अनेक कठिनाइयाँ सामने आती हैं, जिनसे निपटना अनुवादक के लिए आवश्यक हो जाता है. एक कुशल अनुवादक इन बाधाओं को पहचानकर उन्हें सुलझाने का प्रयास करता है. अनुवाद करते समय कई दिक्कतें उभरती हैं, लेकिन इनका समाधान निकालने की क्षमता ही अनुवादक की दक्षता को दर्शाती है.

3.4.1 व्याकरण से जुड़ी समस्याएँ

अनुवाद प्रक्रिया में व्याकरण से संबंधित कठिनाइयाँ मुख्य हैं.हर भाषा की अपनी विशेष व्याकरणिक संरचना होती है, जो उसे नियंत्रित करती है. इसलिए, स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा दोनों के व्याकरण का समुचित ज्ञान अनुवादक के लिए बेहद महत्वपूर्ण है. इन भाषाओं के व्याकरणिक नियम, जैसे वाक्य विन्यास, क्रिया रूप, वचन और लिंग निर्धारण, आपस में भिन्न हो सकते हैं. अनुवाद करते समय इन विविधताओं को समझकर और ध्यान में रखकर कार्य करना आवश्यक है.

3.4.2 शब्द चयन की समस्याएँ

किसी भी भाषा में एक शब्द के कई अलग-अलग अर्थ हो सकते हैं, जो संदर्भ पर निर्भर करते हैं. अनुवाद करते समय यह बेहद ज़रूरी है कि शब्द का चयन सावधानीपूर्वक और उचित संदर्भ के अनुरूप किया जाए. यदि अनुवादक विषय को पूरी तरह समझे बिना सीधे शब्दकोश में दिए गए किसी भी अर्थ को चुन लेता है, तो अनुवाद की गुणवत्ता प्रभावित हो सकती है. केवल एक गलत शब्द के चयन से पूरे पाठ का उद्देश्य बदल सकता है. इस कारण, शब्द चयन में अनुवादक को अत्यंत सतर्क और जिम्मेदार होना चाहिए.

3.4.3 मुहावरे और लोकोक्ति से जुड़ी समस्याएँ

किसी भी भाषा के मुहावरे और कहावतें उस भाषा की सांस्कृतिक और क्षेत्रीय विशिष्टताओं को दर्शाती हैं. इन्हें सही तरीके से समझने और अनुवादित करने के लिए उस क्षेत्र की परंपराओं और संदर्भों की जानकारी होना आवश्यक है. केवल शब्दों के आधार पर इनके अर्थ को नहीं समझा जा सकता, क्योंकि उनका वास्तविक अर्थ संदर्भ और उपयोग पर निर्भर करता है. यदि स्रोत भाषा के मुहावरे का समानार्थी मुहावरा लक्ष्य भाषा में मिल जाए, तो अनुवाद अधिक प्रभावी और रोचक हो जाता है. उदाहरण के लिए, नीचे कुछ गुजराती मुहावरे और उनके समकक्ष हिंदी मुहावरे दिए गए हैं:

(क) लीला भेगु सुकु बड़े - गेहूँ के साथ घुन का पिसना.

(ख) धरम करता घाड़ पड़ी - होम करते हाथ जलना.

(ग) उज्जड़ गाममां एरंडो प्रधान - अंधों में काना राजा.

(घ) रांडया पछीनुं डहापण नकामुं - अब पछताए क्या होत, जब चिड़िया चुग गई खेत.

3.4.4 सांस्कृतिक परिवेश से जुड़ी समस्याएँ

प्रत्येक भाषा किसी विशेष क्षेत्र की सांस्कृतिक धरोहर और जीवनशैली से जुड़ी होती है. इस संस्कृति के अनुरूप कुछ पारंपरिक, धार्मिक या सांस्कृतिक शब्द होते हैं, जिनका अर्थ उस विशेष क्षेत्र के लोग ही पूरी तरह से समझ सकते हैं. भारतीय संदर्भ में कुछ शब्द जैसे सती, जौहर, केसरीया, कढ़ी, हुक्का, होली, दीपावली, माधस्नान, रामराज्य, यमराज आदि ऐसे होते हैं, जिनका अन्य भाषाओं में शाब्दिक रूप से अनुवाद नहीं किया जा सकता. इन शब्दों को उसी रूप में रखा जाता है, जैसे वे स्रोतभाषा में होते हैं, अन्यथा उनका विशेष अर्थ खो जाता है. जब ऐसे शब्दों का प्रयोग लक्ष्यभाषा में किया जाता है, तो उन्हें कोष्ठक में या पादटिप्पणी में समझाया जाता है, ताकि स्रोतभाषा के सांस्कृतिक संदर्भ को सही तरीके से प्रस्तुत किया जा सके. उदाहरण स्वरूप, यदि 'सती' शब्द का उपयोग किया जाए तो इसे इस तरह समझाया जा सकता है: "जब पत्नी अपने पति की मृत्यु के बाद उसकी चिता में आग लगाकर आत्महत्या कर लेती है, तो इसे सती कहा जाता है." यह तरीका शब्द के सही अर्थ को स्पष्ट करता है. हालांकि, जब अनुवादक को स्रोतभाषा की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि का ज्ञान नहीं होता है, तो यह कार्य मुश्किल हो सकता है,अनुवादक के लिए यह एक बड़ी समस्या बन जाती है.यदि हम गुजराती गीत को अंग्रेजी में अनुवादित करना चाहें तो यह कार्य बेहद कठिन हो जाता है, उदाहरण के रूप में,

“गौरमा ने पांचे आंगलिए पूज्या ने नागला ओछा पडया रे लोल...

कमखे दोथो भरीने काई टांकया ने आभला ओछा पडया रे लोल...”

यह गीत हिन्दू संस्कृति और गुजरात के आंचलिक परिवेश को दर्शाता है. अतः इसका अंग्रेजी या अन्य विदेशी भाषाओं में अनुवाद करना कठिन, एक तरह से असंभव ही लगता है.

3.4.5 शब्द-शक्तियों के प्रयोग की समस्या

जहाँ लक्षणा और व्यंजना शब्द-शक्ति प्रयुक्त हो तथा जहाँ व्यंग्य किया गया हो, वहाँ शब्दों का सीधा-सरल अर्थ ग्रहण नहीं किया जा सकता है. यदि अनुवादक इन्हें समझे बिना ही शब्दों के अर्थों को ध्यान में रखकर अनुवाद कर दें तो बड़ी दुविधा हो जाएगी.किसी भी बात के व्यंग्यार्थ को समझे बिना उसका तात्पर्य हम नहीं समझ सकते. जैसे यदि किसी को कहा जाए - **"आप तो वैशाखनंदन हैं."**, तो पहली

नजर में यह प्रशंसा प्रतीत हो सकती है, लेकिन जब इसके वास्तविक अर्थ पर ध्यान दिया जाएगा, तो यह समझ में आएगा कि वैशाखनंदन का मतलब 'गधा' है. अत: इसका सही अर्थ होगा, **"आप तो गधे हैं."**

इसलिए अनुवादक को शब्दों के छिपे हुए अर्थों और व्यंग्य को ठीक से समझने की आवश्यकता होती है. तभी वह सही और सटीक अनुवाद कर सकेगा.

3.4.6 साहित्यिक विधाओं के अनुवाद की समस्या

साहित्यिक अनुवाद में उपन्यास, कहानी, नाटक, कविता, निबंध, संस्मरण, आत्मकथा, जीवनी, रेखाचित्र, रिपोर्ताज आदि का अनुवाद शामिल होता है. यह कार्य पहली नजर में सरल लग सकता है, लेकिन वास्तव में यह उतना आसान नहीं है. प्रत्येक लेखक या कवि के विचार और भावनाएँ उनके लेखन में निहित होती हैं, जिन्हें अनुवादक को समझकर, उसी भावनात्मक रूप में अन्य भाषा में प्रस्तुत करना होता है. विशेष रूप से कविता का अनुवाद, जहाँ अलंकार, छंद, और शब्द शक्ति का व्यापक प्रयोग होता है, एक अत्यंत चुनौतीपूर्ण कार्य है.

उदाहरण के तौर पर, गोल्डस्मिथ के **'The Deserted Village'** का श्रीधर पाठक द्वारा ब्रज में किया गया अनुवाद 'उजाड़ ग्राम' देखें. पाठक जी ने इसे रोला छंद में प्रस्तुत किया :

Sweet Auburn Loveliest village of the plain,

Where Health and plenty cheered the labouring swain.

हे प्यारे ओबर्न सकल गामन सौ रूरे.
जहाँ श्रमी कृषिकार बसें सुख संपत्ति पूरे.

Where smiling spring its earliest visit paid,

And parting summer's lingering blooms delayed

जहाँ रसीली ऋतु वसंत पहले ही आवत.
जात समय बिलमाय फूल फल देर लगावत.

यह अनुवाद ब्रज भाषा में किया गया है. साहित्यिक अनुवाद पर चर्चा करते समय, अधिकांशतः कविता का अनुवाद प्रमुख रूप से ध्यान में आता है, लेकिन गद्य रचनाओं का अनुवाद भी अपनी विशिष्ट चुनौतियाँ और समस्याएँ प्रस्तुत करता है. यह धारणा गलत होगी कि उपन्यास या कहानी का अनुवाद

अपेक्षाकृत सरल है. साहित्यिक अनुवाद की प्रक्रिया में अनुवादक को कई प्रकार की कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, जो वास्तविकता को दर्शाती हैं.

3.4.7 पौराणिक प्रतीकों के अनुवाद से जुड़ी समस्याएँ

अनुवाद के दौरान एक महत्वपूर्ण चुनौती पौराणिक प्रतीकों, कथाओं और उनके संदर्भों को व्यक्त करने की होती है. उदाहरण स्वरूप, भीष्म प्रतिज्ञा, नारद विधा, विभीषण, कुंभकर्ण, मंथरा, जयचंद आदि जैसे शब्दों का अर्थ और उनके भीतर छिपी प्रतीकात्मकता को सही रूप से अनुवादित करना मुश्किल हो सकता है. हालांकि, यदि लक्ष्य भाषा में ऐसे प्रतीकों से संबंधित कोई अन्य पात्र या संज्ञा हो, तो उसे अपनाया जा सकता है. अन्यथा, इन शब्दों का विश्लेषण करके प्रतीकों की व्याख्या करने से अनुवाद को स्पष्ट और सटीक बनाया जा सकता है.

3.4.8 विज्ञापन के अनुवाद की समस्या

विज्ञापनों का अनुवाद करते समय भी अनुवादकों को कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है. अक्सर, विज्ञापनों का अनुवाद केवल शब्दों से नहीं, अपितु विचारों और भावनाओं के अनुवाद से होता है. सही पर्यायवाची शब्द का चयन करना और आकर्षक व प्रभावी रूप से उन्हें प्रस्तुत करना एक बड़ी चुनौती होती है. यह विडंबना है कि अंग्रेजी में विज्ञापन लिखने वाले रचनाकारों को बहुत अधिक पारिश्रमिक मिलता है, जबकि उनका अनुवाद करने वालों को कम मेहनताना मिलता है, क्योंकि अनुवाद में शब्दों की संख्या कम होती है. असल में, सीमित शब्दों में विचारों का सही रूप में अनुवाद करना सबसे कठिन कार्य है, चाहे वह शीर्षक का अनुवाद हो या किसी विज्ञापन का. विज्ञापन के अनुवाद में सटीकता, सरलता, और आकर्षक शब्दों का प्रयोग जरूरी होता है, ताकि वह लक्षित दर्शकों पर प्रभाव डाल सके. इस प्रकार, अनुवादक को इन सभी पहलुओं का ध्यान रखते हुए गुणवत्तापूर्ण अनुवाद करना होता है.

बोध प्रश्न

1) 'आप तो वैशाखनंदन हैं' का अर्थ क्या है?

2) गोल्डस्मिथ की 'The Deserted Village' का अनुवाद किसने किया?

3) 'The Deserted Village' का ब्रज भाषा में अनुवाद किस नाम से हुआ?

4) पौराणिक प्रतिकों के अनुवाद में क्या सावधानी रखनी पड़ती है?

5) 'लीला भेगु सुकु बड़े' मुहावरे का हिन्दी अनुवाद क्या होगा?

3.5 सार-बिंदु

विद्यार्थी मित्रो! आशा है आपने पूरी इकाई पढ़कर अच्छी तरह समझ ली होगी. अब आप इकाई के प्रत्येक उपशीर्षक से उसकी आवश्यक बातें एक जगह पर लिख लीजिए, जिससे इस इकाई को सार रूप में याद रखने में आपको सुविधा होगी. हम भी यहाँ यही काम करने जा रहे हैं. आप अपनी सूची से इस सूची का मिलान कीजिएगा और देखिएगा की कहीं हमसे कुछ छूट तो नहीं गया है, या आपसे कुछ रह तो नहीं गया!

- इस इकाई को पढ़कर हमने अनुवाद के महत्व के बारे में विस्तार से जानकारी प्राप्त की.
- विविध क्षेत्रों में अनुवाद के महत्व को जाना.
- अनुवाद कार्य करने में कौन-कौन सी चुनौतियाँ आ सकती है उसके बारे में विस्तार से चर्चा की.
- धर्म,साहित्य,शिक्षा,न्याय आदि क्षेत्रों में अनुवाद की क्या आवश्यकता है और उन क्षेत्रों में अनुवाद का क्या महत्व है उसके बारे में विस्तृत जानकारी प्राप्त की.
- अनुवाद का कार्यक्षेत्र कितना विस्तृत है उसके बारे में जाना.
- वर्तमान में अनुवाद की कितनी आवश्यकता है उसके बारे में जाना.

3.6 परीक्षा उपयोगी प्रश्नावली

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार से दीजिये :

1) अनुवाद के महत्व के बारे में विस्तार पूर्वक समजाइए
2) अनुवाद कार्य में आने वाली चुनौतियों पर सविस्तार चर्चा कीजिए
3) अनुवाद के विभिन्न क्षेत्रों के बारे में चर्चा कीजिए

निम्नलिखित पर टिप्पणी लिखिए :

1) साहित्य के क्षेत्र में अनुवाद
2) धर्म के क्षेत्र में अनुवाद

3) साहित्यिक विधाओं के अनुवाद की समस्या

4) फिल्म उद्योग और अनुवाद

5) मुहावरे और लोकोक्ति से जुड़ी समस्याएँ

एक-दो वाक्य में उत्तर दीजिए

1) साहित्य के अनुवाद के अंतर्गत किन-किन प्रकारों का समावेश होता हैं?

2) जनसंचार को मुख्यतः कौन से दो वर्गों में बांटा जाता हैं?

3) वैज्ञानिक और तकनीकी अनुवाद के मुख्य तत्व कौन कौन से हैं?

4) 'धरम करता धाड़ पड़ी' मुहावरे के लिए हिन्दी में कौन सा मुहावरा प्रयुक्त हो सकता है?

5) 'अंधों में काना राजा' के लिए गुजराती में कौन सा मुहावरा है?

3.7 उपयोगी पाठ्य सामग्री

---

1) प्रयोजनमूलक हिन्दी, डॉ. लक्ष्मी कांत पाण्डेय, डॉ. प्रमिला अवस्थी

2) अनुवाद विज्ञान, डॉ. भोलेनाथ तिवारी

3) अनुवाद की सामाजिक भूमिका, डॉ. रीतारानी पालीवाल

4) अनुवाद और अनुप्रयोग, डॉ. दिनेश चमौला 'शैलेश'

इकाई_ 4 अनुवाद_ प्रक्रिया

रुपरेखा

4.1 उद्देश्य

4.2 प्रस्तावना

4.3 अनुवाद_ की_ प्रक्रिया

4.4 अनुवाद_ पुनरीक्षण_ एवं_ मूल्यांकन

4.5 हिन्दी_ की_ प्रयोजनीयता_ में_ अनुवाद_ की_ भूमिका

4.6 सारांश

4.7 परीक्षोपयोगी_ प्रश्न

4.8 उपयोगी_ पाठ्यसामग्री

4.1 उद्देश्य

यह_ इकाई_ 'अनुवाद_ प्रक्रिया'_ से_ सम्बन्धित_ है_ ।_ इस_ इकाई_ को_ पढने_ के_ बाद_ आप-

- आप_ अनुवाद_ की_ प्रक्रिया_ तथा_ उसके_ स्वरुप_ को_ समझ_ सकेंगे_ ।
- आप_ अनुवाद_ के_ पुनरीक्षण_ एवं_ मूल्यांकन_ की_ आवश्यकताओं_ को_ समझ_ सकेंगे_ ।
- आप_ हिन्दी_ की_ प्रयोजनीयता_ में_ अनुवाद_ की_ भूमिका_ को_ जान_ सकेंगे_ ।
- आप_ अच्छे_ अनुवादक_ बनकर_ वो_ भाषा,_ क्षेत्र_ में_ अपना_ योगदान_ देकर_ भारतीय_ भाषा, साहित्य_ की_ संस्कृति_ का_ संवर्धन_ कर_ सकेंगे_ ।

4.2 प्रस्तावना

इस_ इकाई_ में_ आप_ अनुवाद_ की_ प्रक्रिया_ को_ समझेंगे_ ।_ केवल_ एक_ भाषा_ के_ शब्द के_ स्थान_ पर_ दूसरी_ भाषा_ के_ शब्द_ रख_ देना_ ही_ अनुवाद_ नहीं_ होता_ ।_ अनुवादक_ को_ किसी एक_ भाषा_ में_ कही_ गयी_ बात_ को_ किसी_ दूसरी_ भाषा_ में_ उसी_ प्रभाव_ और_ अर्थव्याप्ति_ के साथ_ कहने_ के_ लिए_ एक_ निश्चित_ प्रक्रिया_ से_ गुजरना_ होता_ है_ ।_ इसी_ प्रक्रिया_ को_ बताने_ का प्रयास_ इस_ इकाई_ में_ किया_ जा_ रहा_ है_ ।_ साथ_ ही_ इस_ इकाई_ में_ अनुवाद_ के_ पुनरीक्षण_ और मूल्यांकन_ के_ बिंदुओं_ को_ भी_ स्पष्ट_ किया_ जाएगा_ ।

4.3 अनुवाद_ की_ प्रक्रिया_ :

'अनुवाद'_ शब्द_ सुनने_ में_ जितना_ सरल_ व_ सहज_ प्रतीत_ होता_ है_ पर_ व्यवहार_ में_ यह_ उतना ही_ जटिल_ एवं_ श्रमसाध्य_ कार्य_ है_ ।_ अनुवाद_ एक_ भाषा_ से_ दूसरी_ भाषा_ में_ पहुँचने_ तक_ एक_ लंबी प्रक्रिया_ से_ गुजरता_ है_ ।_ अनुवाद_ के_ सन्दर्भ_ में_ अनुवाद_ प्रक्रिया_ सर्वाधिक_ महत्त्वपूर्ण_ मुद्दा_ है_ ।_ अनुवाद कार्य_ के_ आरंभ_ बिंदु_ से_ लेकर_ अंतिम_ बिंदु_ तक_ अर्थात्_ कार्यारंभ_ से_ लेकर_ कार्य_ के_ समापन_ तक की_ प्रक्रिया_ अनुवाद_ प्रक्रिया_ कहलाती_ है_ ।_ इसमें_ अनुवादक_ द्वारा_ मूल_ सामग्रीके_ पढ़े_ जाने_ से_ लेकर अनुवाद_ बनकर_ पूरी_ तरह_ तैयार_ होने_ तक_ के_ सारे_ सोपान_ शामिल_ हैं_ ।_ अनुवाद_ प्रक्रिया_ अधिकांश रुप_ से_ अनुवाद_ के_ सैद्धांतिक_ पक्ष_ के_ अंतर्गत_ गिनी_ जाती_ है ।_ यह_ एक_ ऐसा_ पक्ष_ है_ जिसे_ सभी विद्वान_ अतिमहत्त्वपूर्ण_ मानते_ हैं_ ।

अनुवाद_ की_ प्रक्रिया_ के_ सन्दर्भ_ में_ अनेक_ विद्वानों_ ने_ अपने_ अपने_ मत_ रखे_ हैं_ -

जिनमें_ भारतीय_ एवं_ पाश्चात्य_ दोनों_ ही_ विद्वान_ शामिल_ हैं_ ।_ मगर_ नायडा_ द्वारा_ समझाए_ गए अनुवाद_ प्रक्रिया_ के_ निम्नलिखित_ तीन_ चरण_ अध्ययन_ की_ दृष्टि_ से_ अत्यंत_ सरल_ व_ सार्थक लगते_ हैं_ ।_ अतः_ इन्हीं_ के_ तीन_ चरणों_ को_ ध्यान_ में_ रखते_ हुए_ हम_ अनुवाद_ की_ प्रक्रिया_ को समझने_ का_ प्रयास_ करेंगे_ ।

4.3.1 विश्लेषण_ :

स्रोतभाषा_ में_ रचित_ पाठ_ में_ निहित_ संदेश_ सर्वाधिक_ महत्त्व_ रखता_ है_ ।_ इसमें_ अनुवादक को_ व्याकरण_ और_ शब्दार्थ_ का_ विश्लेषण_ करना_ होता_ है_ ।_ इनमें_ से_ व्याकरणिक_ विश्लेषण का_तात्पर्य_केवल_वाक्य,_उपवाक्य,_पद,_पदबंध_के_गठनात्मक_विश्लेषण_से_नही,_बल्कि_व्याकरणिक गठन_ में_ स्थित_ अर्थ_ सर्वाधिक_ मूल्यवान_ वस्तु_ है_ ।_ विश्लेषण_ करते_ समय_ व्याकरण_ के_ साथ अर्थ_ पर_ ध्यान_ देने_ की_ भी_ आवश्यकता_ होती_ है_ ।_ जहाँ_ एक_ से_ ज्यादा_ अर्थ_ निकलने_ की संभावना_हो_वहां_तो_और_भी_सावधानी_से_विश्लेषण_की_जरुरत_रहती_है_।_अर्थ_का_विश्लेषण करते_ समय_ अर्थ_ के_ तीनों_ गुण_ -_ वाच्यार्थ,_ लक्ष्यार्थ,_ व्यंग्यार्थ_ -_ पर_ विशेष_ ध्यान_ देना_ पड़ता है_ ।

4.3.2 संक्रमण_ :

इस_ सोपान_ को_ अंतरण_ भी_ कहा_ जाता_ है_ ।_ पाठ_ विश्लेषण_ से_ हुए_ अर्थबोधन_ को लक्ष्याषा_ में_ ढाल_ देना_ अनुवाद_ प्रक्रिया_ का_ दूसरा_ चरण_ होता_ है_ जो_ संक्रमण_ या_ अंतरण कहलाता_ है_ ।_ अभिव्यक्ति_ के_ स्तर_ पर_ यह_ संदेश_ का_ पुनर्विन्यास_ होता_ है_ ।_ यह_ अनुवाद प्रक्रिया_ का_ केन्द्रबिंदु_ है,_ मध्यबिंदु_ है_ ।_ उसे_ अपने_ कौशल_ का_ प्रयोग_ कर_ विश्लेषण_ से_ प्राप्त तथ्यों_ के_ लिए_ अनुवाद_ विकल्प_ ढूंढने_ होते_ हैं_ ।_ यह_ किसी_ भी_ अनुवादक_ के_ लिए_ परीक्षा का_ क्षण_ होता_ है_ ।_ पाठ_ विश्लेषण_ से_ हुए_ अर्थबोधन_ के_ लिए_ लक्ष्यभाषा_ में_ योग्य_ विकल्प की_ खोज_ साधारण_ कार्य_ नहीं_ है_ ।_ यह_ इसपर_ निर्भर_ करता_ है_ कि_ दोनों_ भाषाओं_ की_ जानकारी में_ अनुवादक_ की_ योग्यता_ कितनी_ है ।_ यहाँ_ यह_ भी_ समझना_ है_ कि_ केवल_ दो_ भाषा_ का ज्ञान_ ही_ पर्याप्त_ नहीं_ है,_ प्रतिभा_ और_ कल्पनाशक्ति_ का_ अंतर्भाव_ भी_ अनिवार्य_ है_ ।_ मुहावरें, कहावतें,_ अनेकार्थता,_ कथन_ भंगिमा_ आदि_ बातें_ ऐसी_ हैं_ जिनके_ अंतरण_ में_ विशेष_ ध्यान_ रखने की_ आवश्यकता_ होती_ है_ ।

4.3.3 पुनर्गठन_ :

इसी_ सोपान_ के_ अंतर्गत_ अनुवाद_ मूर्तिमंत_ रूप_ धारण_ कर_ लेता_ है_ ।_ विश्लेषण_ के माध्यम_ से_ अनुवादक_ अर्थबोध_ कर_ लेता_ है,_ संक्रमण_ के_ माध्यम_ से_ उस_ अर्थ_ को_ लक्ष्यभाषा में_ कैसे_ प्रस्तुत_ किया_ जाए_ यह_ सोच_ लेता_ है_ और_ अंतिम_ सोपान_ 'पुनर्गठन'_ के_ अंतर्गत_ वह लक्ष्यभाषागत_ स्वाभाविकता_ के_ साथ_ कथ्य_ की_ अभिव्यक्ति_ कर_ देता_ है_ ।_ पुनर्गठन_ का_ चरण अत्यंत_ महत्त्वपूर्ण_ है_ क्योंकि_ इसी_ चरण_ में_ प्रत्यक्ष_ रूप_ से_ अनुवाद_ हो_ रहा_ होता_ है_ ।_ अनुवाद करते_ समय_ अनुवादक_ को_ कुछ_ बातों_ का_ खास_ खयाल_ रखना_ चाहिए_ ।_ उसे_ व्याकरणिक संरचना,_ शब्दक्रम,_ भाषाभेद,_ सहप्रयोग_ और_ शौलीगत_ प्रतिमानों_ का_ ध्यान_ रखना_ ही_ चाहिए क्योंकि_ इनके_ अभाव_ में_ अनुवाद_ में_ लक्ष्यभाषागत_ स्वाभाविकता_ आ_ ही_ नहीं_ सकती_ ।

स्रोतभाषा_ एवं_ लक्ष्यभाषा_ की_ प्रकृति_ समान_ नहीं_ होती,_ कभी_ कभी_ अनुवादक_ इस मूल_प्रकृति_को_समझ_नहीं_पाते_और_कभी_कभी_गलत_अनुवाद_हो_जाता_है_।_अतः_अनुवादक को_ चाहिए_ कि_ वह_ स्रोतभाषा_ के_ प्रत्येक_ पद,_ पदबंध_ के_ लिए_ लक्ष्यभाषा_ में_ उसी_ कोटि_ के पद,_ पदबंध_ का_ चुनाव_ सावधानी_ से_ करे_ ।

अनुवाद_करते_समय_अनुवादक_कर्तृवाच्य_संरचना_को_कर्मवाच्य_संरचना_में_और_कर्मवाच्य संरचना_को_कर्तृवाच्य_संरचना_में_बदल_सकता_है_।_पुनर्गठन_के_स्तर_पर_अनुवादक_को_सहप्रयोगों

को_ यथावत_ न_ रखकर_ लक्ष्यभाषा_ की_ प्रकृति_ के_ अनुसार_ रखना_ होता_ है_ ।

नाइडा_ के_ अलावा_ अन्य_ विद्वानों_ में_ न्यूमार्क_ का_ अनुवाद-प्रक्रिया_ को_ लेकर_ चिंतन भी_ विशेष_ महत्त्व_ रखता_ है_ ।_ उन्होंने_ मुख्य_ चार_ सोपान_ बताए_ है_ –_ (1)_ मूलभाषा_ पाठ_ (2) बोधन_ और_ व्याख्या_ (3)_ अभिव्यक्ति_ और_ पुन:सर्जन_ (4)_ लक्ष्यभाषा_ पाठ_ ।

एक_ अन्य_ विद्वान_ बाथगेट_ ने_ अपने_ प्रारुप_ को_ 'संक्रियात्मक_ प्रारुप'_ कहा_ है_ ।_ उन्हों ने_कुल_सात_चरण_माने_हैं_।_(1)_समन्वयन_(2)_विश्लेषण_(3)_बोधन_(4)_पारिभाषिक_अभिव्यक्ति (5)_ पुनर्गठन_ (6)_ पुनरीक्षण_ (7)_ पर्यालोचन_ ।_ इसमें_ से_ अधिकांश_ संकल्पनाओं_ का_ स्वतंत्र अस्तित्व_ नहीं_ था_ लेकिन_ बाथगेट_ ने_ इन्हें_ स्वतंत्र_ रुप_ में_ देखा_ है_ ।_ न_ सिर्फ_ देखा_ है_ बल्कि इन_ के_ स्वतंत्र_ होने_ का_ प्रमाण_ भी_ प्रस्तुत_ किया_ है_ ।

भारतीय_ विद्वानों_ में_ डॉ._ सुरेश_ कुमार_ ने_ भी_ इसकी_ प्रक्रिया_ की_ कुछ_ स्थितियाँ_ बताई है_ ।_ (1)_ अनुवाद_ पूर्व_ स्थिति_ (2)_ अनुवाद_ कार्य_ की_ स्थिति_ (3)_ अनुवादोत्तर_ स्थिति_ । डॉ._ सुरेश_ कुमार_ कहते_ हैं_ कि_ मूल_ भाषा_ पाठ_ के_ अनुवादकीय_ बोध_ से_ निष्पन्न_ वैचारिक संरचना_ ही_ लक्ष्यभाषा_ पाठ_ का_ रूप_ धारण_ कर_ लेती_ है_ ।_ डॉ._ रवीन्द्रनाथ_ श्रीवास्तव_ तथा डॉ._ कृष्णकुमार_ गोस्वामी_ अनुवाद_ की_ प्रक्रिया_ को_ दो_ भाषाओं_ में_ स्थित_ संप्रेषण_ व्यापार_ से संबंधित_ मानते_ हैं_ ।_ इन्होंने_ अनुवाद-प्रक्रिया_ के_ तीन_ चरण_ माने_ हैं_ ।_ (1)_ मूलपाठ_ के_ पाठक की_ भूमिका_ और_ अर्थग्रहण_ की_ प्रक्रिया_ (2)_ द्विभाषिक_ की_ भूमिका_ और_ अर्थांतरण_ की_ प्रक्रिया (3)_अनुदित_पाठ_के_रचयिता_की_भूमिका_और_सम्प्रेषण_की_प्रक्रिया_।_इसमें_अर्थग्रहण_अर्थांतरण और_ सम्प्रेषण_ की_ प्रक्रिया_ ।

- **निम्नांकित_ प्रश्नों_ के_ उत्तर_ एक_ वाक्य_ में_ लिखिए_ ।**

1. 'स्रोतभाषा'_ से_ आप_ क्या_ समझते_ है_ ?
2. मैने_ गुजराती_ नवलकथा_ 'मानवी_ नी_ भवाई'_ का_ हिन्दी_ में_ अनुवाद_ किया_ -_ इस_ वाक्य में_ लक्ष्य_ भाषा_ कौन_ सी_ हुई_ ?
3. पुनर्गठन_ का_ क्या_ अर्थ_ है_ ?
4. किसी_ एक_ पाश्चात्य_ विद्वान_ का_ नाम_ बताइए_ जिन्होंने_ अनुवाद_ प्रक्रिया_ को_ समझाया हो_ ।
5. डॉ._ सुरेश_ कुमार_ ने_ अनुवाद_ प्रक्रिया_ की_ कितनी_ स्थितियाँ_ मानी_ हैं_ ?

4.4 अनुवाद_ परीक्षण_ एवं_ मूल्यांकन

अनुवाद-कार्य_ का_ परीक्षण-समीक्षण-मूल्यांकन_ अनुवाद_ के_ सन्दर्भ_ में_ सर्वाधिक_ महत्त्वपूर्ण मुद्दा_ है_ ।_ अनुवाद_ कार्य_ के_ गुण-दोष,_ सफलता-असफलता_ को_ जाँचने_ के_ लिए_ अनुवाद_ का मूल्यांकन_ किया_ जाता_ है_ ।_ यह_ मूल्यांकन_ परीक्षण_ और_ समीक्षण_ के_ बिना_ अधूरा_ रह_ जाएगा । अत:_ हम_ कह_ सकते_ हैं_ कि_ अनुवाद-कार्य_ की_ सफलता-असफलता_ को_ जाँचने_ की_ प्रक्रिया परीक्षण-समीक्षण-मूल्यांक_ जैसे_ सोपानों_ से_ होकर_ गुजरती_ है_ ।

4.4.1 अनुवाद_ परीक्षण_ :

अनुवाद_करना_अपने_आप_में_एक_कठिन_कार्य_है_।_अनुवादक_द्वारा_किए_गए_अनुवाद का_ परीक्षण_ करना_ भी_ उतना_ ही_ कठिन_ कार्य_ है_ ।_ जिस_ प्रकार_ कोई_ भी_ अनुवादक_ नहीं बन_ सकता,_ उसी_ प्रकार_ कोई_ भी_ परीक्षक_ भी_ नहीं_ बन_ सकता_ ।_ परीक्षण_ के_ द्वारा_ ही_ यह जाना_ जा_ सकता_ है_ कि_ अनुवादक_ अपने_ नियत_ बिंदुओं_ को_ कैसे_ और_ कितना_ पा_ सका_ है ।

अनुवाद_ परीक्षण_ की_ दो_ विधियाँ_ है_ –_ (1)_ प्रभाववादी_ परीक्षण_ (2)_ व्यवहारवादी

परीक्षण_ ।_ प्रभाववादी_ परीक्षण_ में_ परीक्षक_ के_ लिए_ केवल_ उसकी_ अपनी_ प्रतिक्रिया_ महत्त्वपूर्ण होती_ है_ ।_ परीक्षण_ करते_ समय_ वह_ अपनी_ प्रतिक्रिया_ तथा_ अपने_ विचारों_ को_ भूलता_ नहीं है_ ।_ जब_ कि_ व्यवहारवादी_ परीक्षण_ में_ परीक्षक_ स्वयं_ की_ नहीं_ बल्कि_ दूसरों_ की_ अन्य_ संभवित पाठकों_ की_ प्रतिक्रिया_ को_ अहमियत_ देता_ है_ ।

उपर्युक्त_ इन_ दो_ विधियों_ के_ अलावा_ पुनर्नुवाद,_ निष्पादन_ परीक्षण,_ क्लोज_ तकनीक, अनुक्रिया_ परीक्षण,_ प्रतिपाद्य_ की_ व्याख्या,_ वाचन_ परीक्षण_ आदि_ विधियाँ_ भी_ काम_ में_ ली_ जा सकती_ है_ ।

4.4.2 अनुवाद_ समीक्षा_ :

अनुवाद_ समीक्षा_ का_ सीधा_ तात्पर्य_ मूल_ पाठ_ की_ तुलना_ में_ अनुदित_ पाठ_ के_ गुण-दोष_ का_ विवेचन_ है_ ।_ इसके_ अन्तर्गत_ मूल_ पाठ_ की_ तुलना_ में_ अनूदित_ पाठ_ कितना_ योग्य या_ अयोग्य_ है,_ यह_ देखा_ जाता_ है_ ।_ समीक्षण_ अनुवाद_ के_ लिए_ अत्यंत_ आवश्यक_ माना_ जाता है_ ।

4.4.3 अनुवाद_ मूल्यांकन_ :

प्रसिद्ध_ अनुवाद_ सिद्धान्त_ लेखक_ डॉ._ सुरेश_ कुमार_ कहते_ हैं_ कि_ दो_ सममूल्य_ पाठों के_ बीच_ समानता_ के_ इकतरफा_ संबंध_ को_ अनुवाद_ कहा_ जाता_ है_ ।_ ठीक_ इसी_ तरह_ वो_ सममूल्य पाठों_ की_ विश्लेषणात्मक_ तुलना_ की_ जाती_ है_ और_ फिर_ जो_ निष्कर्ष_ निकाला_ जाता_ है,_ उसे मूल्यांकन_ कहते_ हैं_ ।

4.5 हिन्दी_ की_ प्रयोजनीयता_ में_ अनुवाद_ की_ भूमिका_ :

अनुवाद_ के_ संबंध_ में_ सन_ 1960 में_ राष्ट्रपति_ ने_ एक_ आदेश_ पारित_ किया_ जो_ राजभाषा से_ संबंधित_ है_ ।_ राष्ट्रपति_ के_ इस_ आदेश_ में_ कहा_ गया_ है_ कि_ सभी_ प्रशासनिक_ साहित्य_ का अनुवाद_ किया_ जाए_ तथा_ उसमें_ एकरुपता_ हो_ ।_ अनुवाद_ साहित्य_ की_ एक_ विशिष्ट_ विद्या_ है इसके_ द्वारा_ हम_ किसी_ कृति_ को_ अन्य-भाषा-भाषी_ समुदाय_ तक_ पहूँचाते_ हैं,_ वहीं_ दूसरी_ ओर हम_ सृजन_ का_ सुख_ भी_ प्राप्त_ करते_ हैं_ ।_ अतः_ अनुवाद_ साहित्य_ की_ समृद्धि_ तथा_ सृजन_ के क्षेत्र_ में_ भी_ महत्त्वपूर्ण_ काम_ करता_ है_ । 1867 में_ राजभाषा_ अधिनियम_ पारित_ किया_ गया । यह_ अधिनियम_ अनुवाद_ के_ संदर्भ_ में_ है_ ।_ इस_ अधिनियम_ में_ हिंदी-अंग्रेजी_ प्राधिकृत_ अनुवाद पर_ बल_ दिया_ गया_ ।_ इस_ धारा_ में_ स्पष्ट_ किया_ गया_ है_ कि_ संसद,_ केंद्रीय_ सरकार_ क_ अधीन सभी_ मंत्रालयों,_ कार्यालयों_ के_ संकल्पों,_ साधारण,_ आवेशों,_ नियमों,_ अधिसूचनाओं,_ प्रतिवेदनों, प्रेस_ विज्ञप्तियों,_ अनुज्ञप्तियों,_ अनुज्ञापनों,_ सूचनाओं,_ निविधा_ प्रारुपों_ तथा_ निस्वादित_ संविधाओं और_ करारों_ के_ लिए_ अंग्रेजी_ तथा_ हिंदी_ दोनों_ भाषाओं_ का_ प्रयोग_ होता_ है_ ।

हिंदी_ भाषा_ को_ राजभाषा_ की_ स्वीकृति_ मिलने_ के_ बाद_ संविधान_ के_ भाग_ 5 एवं_ भाग 7 में_ हिंदी_ संबंधी_ विभिन्न_ प्रविधानों_ के_ लिए_ संविधान_ द्वारा_ की_ गई_ व्यवस्था_ के_ कारण_ अनुवाद के_ बिना_ सरकारी_ काम_ चलना_ कठिन_ हो_ गया_ था_ ।_ इसलिए_ केंद्र_ सरकार_ के_ कार्यालयों, बैंकों,_ सार्वजनिक_ उपक्रमों_ इत्यादि_ में_ हिंदी_ अधिकारी,_ सहायक_ निर्देशक,_ उप-निर्देशक,_ निर्देशक जैसे_ उच्चस्तर_ के_ अधिकारियों_ की_ नियुक्ति_ की_ गई_ साथ_ ही_ हिंदी_ अधिकारी_ व_ हिंदी_ अनुवादकों की_ अनेक_ नियुक्तियां_ की_ गई_ ।_ शिक्षा_ तथा_ व्यापार_ में_ तो_ इसका_ महत्त्व_ व_ उपयोगिता_ अनिवार्य है_ ।

4.6 सारांश

अध्येता_ मित्रो_ !_ अनुवाद_ प्रक्रिया_ सम्बन्धी_ उपर्युक्त_ सारे_ मुद्दों_ का_ अभ्यास_ करने_ के बाद_ आप_ अब_ 'अनुवाद_ प्रक्रिया'_ को_ अच्छी_ तरह_ से_ जान_ गए_ होंगे_ ।

– अब_ आप_ इस_ बात_ की_ व्याख्या_ कर_ सकते_ हैं_ कि_ अनुवाद_ ऐसी_ प्रक्रिया_ है,_ जिसमें एक_ भाषा_ की_ बात_ दूसरी_ भाषा_ में_ कही_ जाती_ है,_ लेकिन_ इसमें_ भाषा_ का_ बदलाव होता_ है,_ विचार_ और_ भाव_ वही_ रहता_ है_ ।

– अनुवाद_ करते_ समय_ अनुवादक_ दो_ प्रक्रियाओं_ से_ गुजरता_ है_।_ यह_ दो_ प्रक्रिया_ अर्थग्रहण और_ सम्प्रेषण_ की_ है_ ।_ आपने_ जाना_ कि_ 'स्रोत_ भाषा'_ और_ 'लक्ष्य_ भाषा'_ क्या_ होती है_ ।

– अनुवादक_ क्रमशः_ विश्लेषण,_ संक्रमण_ एवं_ पुनर्गठन_ की_ प्रक्रिया_ से_ गुजरता_ है_ ।

4.7 परिक्षोपयोगी_ प्रश्न

- **निम्नांकित_ प्रश्नों_ के_ विस्तृत_ उत्तर_ लिखिए_ ।**

1. नाईडा_ द्वारा_ बताई_ गई_ अनुवाद_ प्रक्रिया_ को_ समझाइये_ ।

- **निम्न_ में_ से_ सही_ को_ चुनिए**

(1) अनुवाद_ का_ महत्त्व_ दिन_ प्रतिदिन_ .....

(अ) कम_ होता_ जा_ रहा_ है_ ।

(ब) घटता-बढ़ता_ जा_ रहा_ है_ ।

(क) बढ़ता_ जा_ रहा_ है_ ।

(ड) कहा_ नहीं_ जा_ सकता_ ।

(2) अनुवाद_ के_ द्वारा_ अन्य_ देशों_ से_ .....

(अ)_ अनुसंधानकार्य_ प्राप्त_ होते_ हैं_ ।

(ब) अनुकूल_ स्थिति_ बनती_ है_ ।

(क)_ आर्थिक_ लाभ_ प्राप्त_ होते_ हैं_ ।

(ड)_ पारिवारिक_ संवेदनाएँ_ मिलती_ हैं_ ।

(3) अनुवाद_ नए_ और_ प्राचीन_ के_ बीच_ .....

(अ)_ भेद_ करता_ है_ ।

(ब)_ कड़ी_ स्थापित_ करता_ है_ ।

(क) वैमनस्य_ बढ़ाता_ है_ ।

(ड) सौहार्द_ बढ़ाता_ है_ ।

(4) अनुवाद_ से_ व्यापारिक_ क्षेत्र_ में_ .....

(अ)_ कटौती_ आती_ है_ ।

(ब)_ बढ़ोतरी_ नहीं_ होती_ है_ ।

(क)_ आदान-प्रदान_ होता_ है_ ।

(ड)_ गड़बड़_ होती_ है_ ।

(5) ...._ प्रतिवर्ष_ पुरस्कृत_ रचनाओं_ का_ अनुवाद_ करवाता_ है_ ।

(अ)_ साहित्यसेतु

(ब)_ भारतीय_ ज्ञानपीठ

(क)_ यूनेस्को

(ड)_ कला_ संस्थान

उत्तर_ : **1-(क), 2-(अ), 3-(ब), 4-(क), 5-(ब)**

- **निम्नांकित_ प्रश्नों_ के_ उत्तर_ एक_ वाक्य_ में_ लिखिए_ ।**

(1) अनुवाद_ मूल्यांकन_ के_ कितने_ पक्ष_ होते_ हैं_ ?

(2) अनुवाद_ समीक्षा_ में_ किस_ का_ विवेचन_ होता_ है_ ?

(3) अनुवाद_ में_ 'परीक्षण'_ का_ अर्थ_ क्या_ होता_ है_ ?

(4) अनुवाद_ परीक्षण_ की_ दो_ विधियों_ को_ बताइए_ ।

(5) अनुवाद_ संबंधित_ आदेश_ कब_ पारित_ हुआ_ ?

4.8 उपयोगी_ पाठ्यसामग्री

(1) अनुवाद_ निरुपण_ -_ डॉ._ भारती_ गोरे,_ विकास_ प्रकाशन-कानपुर

(2) प्रयोजनमूलक_ हिन्दी_ -_ अघुनातन_ आयाम_ -_ डॉ._ अम्बादाल_ देशमुख

(3) अनुवाद_की_व्यावहारिक_समस्याएँ_-_डॉ._भोलानाथ_तिवारी_एवं_ओम_प्रकाश,_शब्दाकार प्रकाशन,_ दिल्ली_ ।

(4) अनुवाद_ सिद्धान्त_ एवं_ स्वरुप_ -_ डॉ._ मनोहर_ सराफ,_ डॉ._ शिवाकान्त_ गोस्वामी

(5) मीडिया_ कालीन_ हिन्दी_ -_ स्वरुप_ और_ संभावनाएँ_ -_ डॉ._ अर्जुन_ चव्हाण

इकाई 5 अनुवाद की शैलियाँ

इकाई की रूपरेखा

5.1 उद्देश्य

5.2 प्रस्तावना

5.3 अनुवाद की शैलियाँ

5.4 सारांश

5.5 परीक्षोपयोगी प्रश्नावली

5.6 उपयोगी पाठ्यसामग्री

5.1 उद्देश्य

विद्यार्थी मित्रो! इस पाठ्यक्रम में आप 'अनुवाद' के सैद्धांतिक पक्ष को समझ रहे हैं. इस क्रम में इस इकाई को पढ़ने के बाद आप अनुवाद की विभिन्न शैलियों से परिचित हो पाएँगे और उनके आपसी अंतर को समझ पाएँगे.

5.2 प्रस्तावना

अनुवाद की आवश्यकता विभिन्न क्षेत्रों में विभिन्न उद्देश्यों की पूर्ति के लिए उत्पन्न होती है, जिसके कारण अनुवाद की अलग अलग शैलियाँ बनती हैं. इस इकाई में आप इन शैलियों का परिचय प्राप्त करेंगे, जिससे आगे अनुवाद कार्य करते समय आप सही शैली का चुनाव कर पाएँ.

5.3 अनुवाद की शैलियाँ

अनुवाद एक जटिल और सूक्ष्म प्रक्रिया है, जिसमें मूल पाठ को लक्ष्य भाषा में प्रस्तुत करते समय उसके अर्थ, लहजे और संदर्भ को संतुलित करना आवश्यक होता है. अनुवाद शैलियाँ इस संतुलन को प्राप्त करने के लिए अनुवादकों द्वारा अपनाए गए विभिन्न तरीकों और रणनीतियों को संदर्भित करती हैं. ये शैलियाँ अनुवाद के उद्देश्य, पाठ की प्रकृति और पाठकों की अपेक्षाओं के आधार पर भिन्न होती हैं.

यहाँ प्राथमिक अनुवाद शैलियों का विस्तृत विवरण दिया जा रहा है :

1. शाब्दिक अनुवाद (शब्द-दर-शब्द अनुवाद)

शाब्दिक अनुवाद अनुवाद का सबसे सीधा रूप है जहाँ अनुवादक प्रत्येक शब्द या वाक्यांश का सीधे अनुवाद करके मूल अर्थ बताने का प्रयास करता है. यह विधि स्रोत पाठ में इस्तेमाल किए गए सटीक शब्दों पर जोर देती है, जिससे मूल और अनुवादित पाठ के बीच घनिष्ठ अनुरूपता बनती है.

इसका प्रयोग प्रायः तकनीकी या कानूनी दस्तावेजों में किया जाता है, जहां परिशुद्धता और शुद्धता महत्वपूर्ण होती है. इसके साथ ही भाषा सीखने में, व्याकरण और शब्दावली को समझने में भी यह शैली उपयोगी होती है.

- लाभ :
  - मूल की सटीक संरचना और शब्दावली को संरक्षित रखता है.
  - वैज्ञानिक या तथ्यात्मक सामग्री के लिए उपयोगी.

- नुकसान :
  - लक्ष्य भाषा में यह अस्वाभाविक लग सकता है.
  - मुहावरेदार अभिव्यक्तियाँ और सांस्कृतिक बारीकियाँ खो सकती हैं या गलत समझी जा सकती हैं. उदाहरण के लिए हिंदी की अभिव्यक्ति – “मेरा सर चक्कर खा रहा है.” का अंग्रेजी में शाब्दिक अनुवाद होगा – “My head is eating circles.” जो पूरी तरह गलत और हास्यास्पद है.

2. विश्वासनीय अनुवाद

विश्वसनीय अनुवाद का उद्देश्य मूल पाठ के अर्थ, शैली और लहजे को संरक्षित रखना है, साथ ही लक्ष्य भाषा के वाक्यविन्यास और सांस्कृतिक मानदंडों के अनुरूप आवश्यक समायोजन करना है. इसका लक्ष्य स्रोत के जितना संभव हो सके उतना करीब रहना है, लेकिन मूल पाठ के इरादे अथवा पठनीयता को खोए बिना.

इस शैली का उपयोग साहित्यिक कृतियों, विज्ञापनों या भाषणों का अनुवाद करते समय किया जाता है, जब अर्थ और शैली दोनों को बनाए रखना आवश्यक होता है. साथ ही कानूनी दस्तावेजों में, जहाँ मूल पाठ के आशय और भावना को संरक्षित रखना महत्वपूर्ण है.

- लाभ :
  - मूल की विषय-वस्तु और शैलीगत तत्वों दोनों को संरक्षित रखता है.
  - सटीकता और पठनीयता के बीच संतुलन प्रदान करता है.
- नुकसान :
  - कुछ सांस्कृतिक तत्वों को पूरी तरह से व्यक्त करना अभी भी चुनौतीपूर्ण हो सकता है. उदाहरण के लिए अंग्रेजी के वाक्य “It’s raining cats and dogs.” का हिंदी अनुवाद – “बिल्लियों और कुत्तों की बारिश हो रही है.” सार्थक वाक्य नहीं है और वास्तविक अर्थ जरा भी संप्रेषित नहीं कर रहा है, जो है – “बहुत तेज बारिश हो रही है.”

3. मुक्त अनुवाद (अर्थ-दर-अर्थ अनुवाद)

मुक्त अनुवाद में अनुवादक स्रोत पाठ के साथ पुनर्लेखन और पुनर्संरचना के मामले में अधिक स्वतंत्रता लेता है. यह सटीक शब्दों या संरचना के बजाय समग्र अर्थ को व्यक्त करने पर अधिक ध्यान केंद्रित करता है. यह दृष्टिकोण रचनात्मक लचीलेपन की अनुमति देता है. इसका प्रयोग रचनात्मक लेखन, कविता या विज्ञापन में, जहाँ भावनात्मक स्वर और समग्र संदेश शाब्दिक सटीकता से अधिक महत्वपूर्ण होते हैं, वहाँ होता है. ऐसे मामलों में जहाँ शाब्दिक अनुवाद के परिणामस्वरूप लक्ष्य भाषा में निरर्थक या अजीब वाक्य उत्पन्न हो रहे हों, तो वहाँ भी मुक्त अनुवाद की सहायता लेनी होती है.

- लाभ :
  - लक्ष्य भाषा में अधिक स्वाभाविक एवं प्रवाहपूर्ण होना.
  - सांस्कृतिक भिन्नताओं के प्रति बेहतर अनुकूलन की अनुमति देता है.
- नुकसान :
  - मूल पाठ की कुछ बारीकियों को खोने का जोखिम.

○ मूल से बहुत दूर भटक सकता है, जिससे गलत व्याख्या हो सकती है. उदाहरणार्थ अंग्रेजी वाक्य "I'm feeling under the weather." का हिंदी में मुक्त अनुवाद होगा - "मैं थोड़ा बीमार महसूस कर रहा हूँ." (शाब्दिक अनुवाद की जगह मुहावरेदार अनुवाद अर्थ को अच्छी तरह से अभिव्यक्त कर रहा है.)

4. सिमेंटिक अनुवाद

सिमेंटिक अनुवाद, स्रोत पाठ के सटीक अर्थ को स्थानांतरित करने पर केंद्रित होता है, जबकि लक्ष्य भाषा की भाषाई और व्याकरणिक संरचनाओं का बारीकी से पालन किया जाता है. हालाँकि, यह शाब्दिक अनुवाद की तुलना में अधिक लचीलापन देता है ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि अंतिम उत्पाद मुहावरेदार और स्वाभाविक हो. इसका प्रयोग तब होता है जब साहित्यिक अनुवादों में बारीकियों और गहरे अर्थ को सावधानीपूर्वक व्यक्त करने की आवश्यकता होती है. शैक्षिक ग्रंथों या दार्शनिक कार्यों के लिए भी यह शैली अपनाई जाती है, जहाँ परिशुद्धता महत्वपूर्ण है.

- लाभ :
  - यह सुनिश्चित करता है कि मूल का अर्थ पूरी तरह से संरक्षित रहे.
  - अनुवाद की संरचना में अधिक छूट प्रदान करता है, जिससे यह अधिक पठनीय हो जाता है.
- नुकसान :

○ यह हमेशा मुक्त अनुवाद जितना स्वाभाविक नहीं हो सकता, यह भाषा युग्म पर निर्भर करता है. उदाहरण के लिए अंग्रेजी वाक्य : "He was in two minds about going." का सिमेंटिक अनुवाद हिंदी में होगा - "वह जाने के बारे में दुविधा में था।" यह अनुवाद अर्थ को सुरक्षित रखते हुए भाषा की प्रकृति के अनुसार वाक्य को अनुकूलित करता है.

5. सांस्कृतिक अनुवाद

सांस्कृतिक अनुवाद मूल पाठ के सांस्कृतिक संदर्भ और महत्व को स्थानांतरित करने पर केंद्रित है. इसमें पाठ को लक्षित दर्शकों के लिए प्रासंगिक बनाने के लिए सांस्कृतिक संदर्भों को अनुकूलित या प्रतिस्थापित करना शामिल है. इस प्रकार का अनुवाद तब आम होता है जब लक्ष्य भाषा में सांस्कृतिक संदर्भ या प्रथाएँ मौजूद नहीं होती हैं. इसका प्रयोग साहित्य, विज्ञापन और फिल्मों में सांस्कृतिक संदर्भ संदेश को समझने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है. मुहावरों, कहावतों या संस्कृति-विशिष्ट संदर्भों का अनुवाद भी इस शैली में किया जाता है.

- लाभ :
  - अनुवाद को लक्षित दर्शकों के लिए सांस्कृतिक रूप से प्रासंगिक बनाता है.
  - यह सुनिश्चित करता है कि सांस्कृतिक अर्थ नष्ट न हो जाएं.
- नुकसान :
  - मूल संदेश या विषय-वस्तु में परिवर्तन हो सकता है, जिससे उसकी प्रामाणिकता प्रभावित हो सकती है.
  - स्रोत और लक्ष्य दोनों संस्कृतियों का गहन ज्ञान आवश्यक है.

उदाहरण के लिए अंग्रेजी वाक्य – “He brought home the bacon.” का हिन्दी में सांस्कृतिक अनुवाद होगा "वह परिवार का पालन-पोषण करता है." (मुहावरे का सीधे अनुवाद करने के बजाय, सांस्कृतिक रूप से अधिक प्रासंगिक वाक्यांश का उपयोग किया गया है.)

6. ट्रांसपोज़िशन

ट्रांसपोज़िशन में अनुवाद के दौरान वाक्य की व्याकरणिक संरचना को बदलना शामिल है. इसमें शब्द क्रम बदलना, भाषण के भागों को बदलना या अन्य संरचनात्मक परिवर्तन शामिल हो सकते हैं ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि अनुवाद लक्ष्य भाषा में स्वाभाविक लगे. इसका प्रयोग लक्ष्य भाषा में पठनीयता और सहज प्रवाह को सुनिश्चित करने के लिए किया जाता है. जब स्रोत भाषा में शब्द क्रम भिन्न होता है और शाब्दिक अनुवाद कठिन हो जाता है, तब इस शैली के अनुवाद का उपयोग किया जाता है.

- लाभ :
  - यह सुनिश्चित करता है कि अनुवादित पाठ स्वाभाविक रूप से संप्रेषित हो.
  - वाक्य संरचना को लक्ष्य भाषा की परंपराओं के अनुरूप ढालता है.
- नुकसान :
  - इसके परिणामस्वरूप वाक्य की मूल संरचना नष्ट हो सकती है.
- उदाहरण :
  - अंग्रेजी : " He is going to the market."
  - ट्रांसपोज़िशन (हिंदी में): " वह बाज़ार जा रहा है." (हिन्दी में शब्द क्रम को अधिक स्वाभाविक बनाने के लिए समायोजित किया गया है.)

7. पैराफ्रास्टिक अनुवाद

पैराफ्रास्टिक अनुवाद में मूल पाठ को फिर से लिखना शामिल है ताकि उसका अर्थ स्पष्ट या सरल हो सके. ऐसा अक्सर तब किया जाता है जब प्रत्यक्ष अनुवाद ठीक से काम नहीं करता है, या जब मूल भाषा अत्यधिक जटिल या पुरानी होती है. इसका प्रयोग गहन, तकनीकी या काव्यात्मक पाठों का अनुवाद करते समय किया जाता है. भाषा की स्पष्टता के लिए, विशेष रूप से शैक्षिक सामग्री में भाषिक स्पष्टता के लिए भी इसका प्रयोग किया जाता है.

- लाभ :
  - जटिल विचारों या तकनीकी शब्दावली को सरल बनाने में सहायता करता है.
  - यह सामग्री को लक्षित दर्शकों के लिए अधिक सुलभ बनाता है.
- नुकसान :
  - इससे मूल पाठ का अति सरलीकरण हो सकता है, जिससे कुछ गहराई या जटिलता समाप्त हो सकती है.

- उदाहरण के लिए, अंग्रेजी वाक्य - "The contract stipulates that payment is due in thirty days." का हिंदी में पैराफ्रास्टिक अनुवाद होगा - "समझौते के अनुसार, भुगतान तीस दिनों में किया जाना चाहिए।"

8. व्याख्यात्मक अनुवाद

व्याख्यात्मक अनुवाद अनुवाद का एक अधिक गहन रूप है जो अंतर्निहित अर्थ को व्यक्त करने पर ध्यान केंद्रित करता है, जिसमें संदर्भ, भावनाएँ और सूक्ष्मताएँ शामिल हैं, जब शब्दों या वाक्यांशों का सीधा अनुवाद आसानी से संभव न हो. इस शैली का उपयोग अक्सर जटिल दार्शनिक, काव्यात्मक या भावनात्मक विषयों वाले ग्रंथों का अनुवाद करते समय किया जाता है. साहित्य, कविता और भाषणों जैसी भाषिक अभिव्यक्तियों, जिनमें अर्थ की परतें निहित होती हैं, के लिए व्याख्यात्मक अनुवाद की आवश्यकता होती है. भावनात्मक या आलंकारिक विषय-वस्तु, जिसके लिए गहन समझ की आवश्यकता होती है, का अनुवाद करते समय भी यही अनुवाद कारगर होता है.

- लाभ :
  - यह सुनिश्चित करता है कि भावनात्मक और सांस्कृतिक गहराई सुरक्षित रहे.
  - यह अधिक सूक्ष्म अनुवाद प्रदान करता है.
- नुकसान :
  - मूल पाठ से कुछ विचलन हो सकता है.
  - अनुवाद में व्यक्तिपरकता आ सकती है.

उदाहरण के लिए "She was feeling blue." का व्याख्यात्मक अनुवाद हिन्दी में "वह उदास महसूस कर रही थी." होगा.

अनुवाद शैली का चुनाव अनुवाद किए जा रहे पाठ के प्रकार, संदर्भ, लक्षित दर्शकों और अनुवाद के उद्देश्य पर निर्भर करता है. एक कुशल अनुवादक अनुवाद कार्य की विशिष्ट आवश्यकताओं के आधार पर इन शैलियों के संयोजन का उपयोग कर सकता है.

5.4 सारांश

इस इकाई में आपने अनुवाद की विभिन्न शैलियों के विषय में जाना, जो विभिन्न परिस्थितियों में विभिन्न प्रकार के विषयों का अनुवाद करने के लिए उपयोगी होती हैं. उदाहरणों के माध्यम से आपने जाना कि अनुवाद केवल एक भाषा के शब्द की जगह दूसरी भाषा का शब्द रख देना ही नहीं है. अपेक्षित परिणाम के लिए अनुवाद की विभिन्न शैलियों का उपयोग आवश्यक है, जो अनुवाद को सार्थक, संप्रेष्य और सरस बनाता है.

5.5 परीक्षोपयोगी प्रश्नावली

निम्नलिखित प्रश्न का विस्तृत उत्तर लिखिए :

1) अनुवाद की विभिन्न शैलियों का परिचय दीजिए.

निम्नलिखित पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए :

1) शाब्दिक अनुवाद
2) मुक्त अनुवाद
3) व्याख्यात्मक अनुवाद

निम्नलिखित में रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए :

1) _________ शैली का प्रयोग प्रायः तकनीकी या कानूनी दस्तावेजों में किया जाता है.
2) _________ अनुवाद का उद्देश्य मूल पाठ के अर्थ, शैली और लहजे को संरक्षित रखना है.
3) _________ अनुवाद का दृष्टिकोण रचनात्मक लचीलेपन की अनुमति देता है.
4) _________ अनुवाद स्रोत पाठ के सटीक अर्थ को स्थानांतरित करने पर केंद्रित होता है.
5) _________ अनुवाद मूल पाठ के सांस्कृतिक संदर्भ और महत्व को स्थानांतरित करने पर केंद्रित है.

5.6 उपयोगी पाठ्य सामग्री

1. साहित्यानुवाद – संवाद और संवेदना, आरसू, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली
2. अनुवाद विज्ञान की भूमिका, के. के. गोस्वामी, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली
3. अनुवाद सिद्धांत और प्रयोग, जी. गोपीनाथन, लोकभारती, इलाहाबाद
4 . Art of translation - R. Raghunath. - Bharatiya Anuvad parished , New Delhi

5. Art of translation - Theodare Savary - Cape, London

इकाई 6 अनुवादक की योग्यता और सफल अनुवाद

<u>रूपरेखा</u>

6.1 उद्देश्य

6.2 प्रस्तावना

6.3 अनुवादक की योग्यता

- स्रोत भाषा का ज्ञान
- लक्ष्य भाषा का ज्ञान
- अनुवाद-प्रक्रिया का ज्ञान
- व्याकरण एवं शब्दावली का ज्ञान
- सांस्कृतिक परिवेश का ज्ञान

6.4 सफल अनुवाद

- स्रोत सामग्री की स्पष्टता
- प्रासंगिक शब्दावली का उपयोग
- शैली और प्रवाह
- संस्कृति के अंतर को जानना
- मुहावरे और कहावतों के प्रयोग में ध्यातव्य बातें
- स्वचालित (मशीनी)अनुवाद पर पूरी तरह निर्भर न रहें
- अनुवादित कृति की समीक्षा

6.5 सार बिंदु

6.6 परीक्षा उपयोगी प्रश्नावली

6.7 उपयोगी पाठ्य सामग्री

6.1 उद्देश्य

विद्यार्थी मित्रो! हिंदी भाषा के प्रति आपकी रुचि को और अधिक विकसित और प्रगाढ़ करने के लिए एवं आधुनिक युग में हिंदी भाषा के विविध क्षेत्रों में हो रहे प्रयोग के बारे में आपको अवगत कराने के

लिए 'अनुवादक की योग्यता और सफल अनुवाद' विषय इस इकाई में रखा गया है इस इकाई को पढ़ने के बाद आप–

- अनुवादक की योग्यता के बारे में जान सकेंगे।
- अनुवाद प्रक्रिया में अनुवादक की क्या भूमिका रहती है इसके बारे में जान सकेंगे।
- अनुवाद कार्य में सांस्कृतिक परिवेश का क्या महत्व रहता है वह समझ सकेंगे।
- सफल अनुवाद किसे कहते है इसके बारे में विस्तृत जानकारी प्राप्त कर पाएंगे।
- अनुवाद कार्य में प्रासंगिक शब्दावली का उपयोग क्यों आवश्यक है इसके बारे में जानेंगे।

6.2 प्रस्तावना

आज के युग में अनुवाद अपना एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। आज प्रत्येक क्षेत्र में अनुवाद की आवश्यकता है, किन्तु इस आवश्यकता की पूर्ति के लिए एक योग्य अनुवादक का होना भी अनिवार्य है । यदि अनुवादक में योग्य क्षमता ना हो तो समग्र अनुवाद कार्य निष्फल हो जाता है। इस प्रकार किसी भी कृति या पाठ के अनुवाद की सफलता या असफलता उसके अनुवादक पर निर्भर रहती है। इस इकाई में हम अनुवाद-कर्ता की योग्यता एवं एक सफल अनुवाद किसे कहा जाए इस सन्दर्भ में चर्चा करेंगे।

6.3 अनुवादक की योग्यता

एक योग्य अनुवादक में निम्नलिखित गुण होना आवश्यक है।

स्रोत भाषा का ज्ञान :

अनुवाद की प्रक्रिया में सबसे महत्वपूर्ण तत्व स्रोत भाषा की समझ होती है, क्योंकि यही इसकी पहली आवश्यकता होती है। यदि अनुवादक को मूल भाषा का समुचित ज्ञान नहीं होगा, तो वह उसके भाव और संदर्भ को सही तरीके से नहीं पकड़ पाएगा। बिना स्रोत भाषा को पूरी तरह समझे, किसी भी पाठ को लक्ष्य भाषा में सटीक रूप से प्रस्तुत करना कठिन हो जाता है। जब अनुवादक को स्रोत भाषा का सम्पूर्ण बोध होता है, तभी वह उसके व्याकरण, मुहावरों, कहावतों और सांस्कृतिक पहलुओं को सही रूप में आत्मसात कर सकता है। इसलिए, सफल अनुवाद के लिए स्रोत भाषा की गहरी पकड़ अनिवार्य होती है।

लक्ष्य भाषा का ज्ञान

जिस भाषा में मूल पाठ का अनुवाद किया जाता है, उसे लक्ष्य भाषा कहा जाता है। केवल स्रोत भाषा की समझ से अनुवाद संभव नहीं हो सकता। अनुवादक के लिए स्रोत भाषा के साथ-साथ लक्ष्य भाषा का ज्ञान भी उतना ही अनिवार्य होता है। क्योंकि जब तक अनुवादक लक्ष्य भाषा में पूरी पकड़ नहीं रखेगा, तब तक वह मूल लेखक की भावनाओं और विचारों को सटीक रूप से पाठकों तक नहीं पहुँचा पाएगा। लेखक जिन संवेदनाओं और अर्थों को अभिव्यक्त करना चाहता है, उन्हें उसी प्रभाव के साथ प्रस्तुत करना आवश्यक होता है।

यदि अनुवादक लक्ष्य भाषा में दक्ष नहीं होगा, तो आशय विकृत हो सकता है, जिससे अनुवाद का मूल उद्देश्य प्रभावित होगा। इसलिए, स्रोत भाषा की ही तरह लक्ष्य भाषा की संरचना, व्याकरण, मुहावरे, कहावतें और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि की समझ अनिवार्य होती है। इन तत्वों की सही पकड़ के बिना कोई भी अनुवाद पूर्ण और प्रभावी नहीं हो सकता।

अनुवाद-प्रक्रिया का ज्ञान

अनुवाद एक क्रमबद्ध प्रक्रिया है, जिसके कुछ निश्चित नियम और चरण होते हैं। अनुवादक को इन्हीं चरणों का पालन करते हुए कार्य करना पड़ता है, तभी भावों और अर्थों का सही संप्रेषण संभव हो पाता है। यदि किसी व्यक्ति को अनुवाद प्रक्रिया की समुचित समझ नहीं होगी, तो वह एक सफल अनुवादक नहीं बन सकता। यह ठीक उसी तरह है जैसे अर्जुन को चक्रव्यूह में प्रवेश और उससे बाहर निकलने की पूरी विधि ज्ञात थी, लेकिन उनके पुत्र अभिमन्यु को केवल प्रवेश करने का ज्ञान था, अंतिम द्वार को भेदने की विधि वह नहीं जानता था। इसी कारण वह चक्रव्यूह में फँस गया। इसी प्रकार, यदि अनुवादक को अनुवाद की संपूर्ण प्रक्रिया की जानकारी नहीं होगी, तो वह भी एक सफल अनुवाद नहीं कर पाएगा। इसलिए, अनुवादक के लिए इस प्रक्रिया की सम्पूर्ण समझ आवश्यक है।

व्याकरण एवं शब्दावली का ज्ञान

एक कुशल अनुवादक के लिए स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा, दोनों के व्याकरण का गहरा ज्ञान आवश्यक होता है। जब अनुवादक व्याकरणिक नियमों से परिचित होगा और साथ ही दोनों भाषाओं की समृद्ध शब्दावली पर उसकी पकड़ होगी, तब ही अनुवाद भाषा और व्याकरण की दृष्टि से प्रभावी एवं शुद्ध बन सकेगा। यदि व्याकरण में गलती होगी या अनुवादक के पास उपयुक्त शब्दों का पर्याप्त भंडार नहीं होगा, तो अनुवाद की गुणवत्ता प्रभावित होगी और उसमें त्रुटियाँ रह जाएँगी। इसलिए, सफल अनुवाद के लिए इन दोनों पहलुओं का ज्ञान अनिवार्य माना जाता है।

सांस्कृतिक परिवेश का ज्ञान

एक अनुवादक के लिए सांस्कृतिक परिवेश की समझ भी आवश्यक होती है। प्रत्येक क्षेत्र की भाषा वहाँ की विशिष्ट संस्कृति से प्रभावित होती है, जिससे लोगों की जीवनशैली, परंपराएँ और सामाजिक रीति-रिवाज निर्मित होते हैं। इन परंपराओं का असर भाषा पर भी स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। कई बार ऐसे विशिष्ट शब्द, मुहावरे या लोकोक्तियाँ प्रयोग में आती हैं, जिनका सही अर्थ वही व्यक्ति समझ सकता है, जो उस क्षेत्र की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से परिचित हो। यदि अनुवादक को इस सांस्कृतिक ज्ञान का अभाव होगा, तो वह मूल भावों को सही ढंग से नहीं समझ पाएगा और अनुवाद भी प्रभावशाली नहीं बन सकेगा। इसलिए, सटीक अनुवाद के लिए भाषा के साथ-साथ उसकी सांस्कृतिक जड़ों की जानकारी भी आवश्यक है।

6.4 सफल अनुवाद

अनुवाद शब्द सुनने में जितना सरल लगता है, वास्तव में उसका कार्य उतना ही जटिल और चुनौतीपूर्ण होता है। अनुवादक के गुणों को समझने के बाद यह आवश्यक हो जाता है कि हम सफल अनुवाद किसे कह सकते है उसके बारे में जानकारी प्राप्त कर उसकी विशेषताओं पर गहराई से विचार करें।

सफल अनुवाद केवल भाषा का रूपांतरण नहीं, बल्कि भावनाओं, विचारों और संदर्भों का संप्रेषण भी है। अनुवादक को केवल दोनों भाषाओं का ज्ञाता ही नहीं, बल्कि एक कुशल संप्रेषक भी होना चाहिए। यदि मूल कृति के भाव, रस और संवेदनाएँ लक्ष्य भाषा में उसी प्रभाव के साथ प्रस्तुत नहीं हो पाते, तो अनुवाद अधूरा रह जाता है। यही कारण है कि अनुवाद में सबसे महत्वपूर्ण पहलू 'संदेश का सही संप्रेषण' होता है। यदि अनुवादक इस कार्य में सफल होता है, तो उसका अनुवाद भी सफल माना जाता है।

अनुवाद के कई प्रकार होते हैं- गद्यानुवाद ,पद्यानुवाद , छायानुवाद, आशु अनुवाद आदि। प्रत्येक प्रकार की अपनी विशिष्टताएँ होती हैं और अनुवाद करते समय इन्हें ध्यान में रखना अनिवार्य होता है। विशेष रूप से, शब्द चयन को लेकर अत्यधिक सावधानी बरती जानी चाहिए। गद्य के लिए शब्दावली सीधी और सरल होती है, जबकि पद्य में अलंकार, व्यंजना और गूढ़ता का प्रयोग अधिक होता है। यदि कोई कृति पद्य में लिखी गई है और उसका अनुवाद किसी अन्य भाषा में किया जा रहा है, तो उस भाषा में ऐसे शब्दों का चयन करना आवश्यक होगा जो मूल रचना की काव्यात्मकता को बनाए रखें। यदि अनुवाद में वह भावनात्मक प्रवाह नहीं रह जाता, तो मूल कृति का प्रभाव भी समाप्त हो जाता है।

एक कुशल अनुवादक को इस बात का विशेष ध्यान रखना चाहिए कि वह किस प्रकार की कृति का अनुवाद कर रहा है और मूल पाठ के लेखक की संवेदनाओं को कैसे संप्रेषित कर सकता है। अनुवाद का उद्देश्य केवल शब्दों का स्थानांतरण नहीं, बल्कि मूल रचना की आत्मा को सुरक्षित रखते हुए पाठकों को वही अनुभव प्रदान करना है, जो मूल कृति के पाठकों को प्राप्त होता है।

अब, जैसे हमने अनुवादक के गुणों की चर्चा की, वैसे ही सफल अनुवाद को समझने के लिए इसके प्रमुख तत्वों को अलग-अलग बिंदुओं में विभाजित कर उसका गहराई से विश्लेषण करेंगे।

स्रोत सामग्री की स्पष्टता:

अनुवाद की सटीकता मुख्य रूप से इस बात पर निर्भर करती है कि स्रोत सामग्री कितनी स्पष्ट और सुगठित है। यदि मूल पाठ अस्पष्ट हो या उसमें द्विअर्थी वाक्य हों, तो अनुवाद में त्रुटियों की संभावना बढ़ जाती है। अनुवादक के लिए यह अनिवार्य होता है कि वह सामग्री को सही संदर्भ में समझे, ताकि अनुवाद न केवल अर्थपूर्ण बल्कि प्रभावी भी हो। उदाहरण के तौर पर, यदि किसी कानूनी दस्तावेज़ में अस्पष्ट शब्दों का

उपयोग किया गया हो, तो गलत अनुवाद से गंभीर कानूनी समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं। इसी प्रकार, तकनीकी या चिकित्सा से जुड़े दस्तावेज़ों में यदि जानकारी स्पष्ट नहीं है, तो गलतफहमी पैदा हो सकती है, जिससे महत्वपूर्ण जानकारियों का गलत संप्रेषण हो सकता है। साहित्यिक अनुवाद में यदि मूल पाठ की अस्पष्टता बनी रहे, तो भावनात्मक अभिव्यक्ति प्रभावित हो सकती है और अर्थ का ह्रास हो सकता है। इसलिए, अनुवादक को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि यदि कोई वाक्य संदिग्ध लगे, तो वह लेखक या विशेषज्ञ से परामर्श ले और संदर्भ को समझकर अनुवाद करें। स्पष्ट और संगठित स्रोत सामग्री के बिना उच्च गुणवत्ता वाला अनुवाद प्राप्त करना कठिन हो सकता है।

प्रासंगिक शब्दावली का उपयोग:

अनुवाद में सही शब्दावली का चयन करना अत्यंत आवश्यक होता है, खासकर तकनीकी, कानूनी, चिकित्सा और साहित्यिक अनुवाद के मामले में। हर क्षेत्र की अपनी विशिष्ट भाषा होती है, जो विषय की स्पष्टता और प्रामाणिकता बनाए रखने में सहायक होती है। उदाहरण के लिए, चिकित्सा अनुवाद में 'डायग्नोसिस' को 'निदान' और कानूनी अनुवाद में 'एफिडेविट' को 'शपथ पत्र' कहना जरूरी होता है, ताकि सही अर्थ बना रहे। इसी तरह, तकनीकी अनुवाद में जटिल प्रक्रियाओं और शब्दों को स्पष्ट रूप में प्रस्तुत करना आवश्यक होता है, जिससे उपयोगकर्ता को कोई भ्रम न हो। साहित्यिक अनुवाद में भावनात्मक अभिव्यक्ति, लेखन शैली और संदर्भ को बनाए रखना आवश्यक होता है, ताकि पाठक मूल रचना के भाव को महसूस कर सके। यदि किसी अनुवाद में गलत या असंगत शब्दों का उपयोग किया जाता है, तो संचार में अस्पष्टता आ सकती है। इसलिए, अनुवादक को विषय-विशेष की भाषा और संदर्भ की अच्छी समझ होनी चाहिए, ताकि अनुवाद न केवल अर्थपूर्ण बल्कि प्रभावशाली भी हो।

शैली और प्रवाह:

सफल अनुवाद कार्य में शैली और प्रवाह का बहुत बड़ा महत्व होता है, क्योंकि इसके माध्यम से पाठ प्रभावी और पाठकों के लिए सहज बनाता है।

• शैली का महत्व

शैली किसी भी भाषा की लेखन पद्धति, तकनीकी विवरण, औपचारिक या अनौपचारिक स्वरूप को निर्धारित करती है। यदि अनुवाद के दौरान मूल रचना की शैली सुरक्षित नहीं रहती, तो उसकी वास्तविक अभिव्यक्ति प्रभावित हो सकती है। उदाहरण के लिए:

साहित्यिक अनुवाद में कल्पनाशीलता और सांस्कृतिक पहलुओं का विशेष ध्यान दिया जाता है।

वहीं, तकनीकी या विधिक अनुवाद में हर शब्द की सटीकता और स्पष्ट प्रस्तुति अत्यंत महत्वपूर्ण होती है।

• प्रवाह का महत्व

प्रवाह का महत्व यह है कि अनुवादित सामग्री पढ़ते समय किसी प्रकार की अड़चन महसूस न हो और वह स्वाभाविक रूप से मूल पाठ की तरह प्रतीत हो। यदि अनुवाद में वाक्य रचना असंगत हो, तो पाठक को अर्थ ग्रहण करने में दिक्कत हो सकती है। अनुचित प्रवाह वाला अनुवाद पाठक के अनुभव को प्रभावित कर सकता है, जिससे वह मूल संदर्भ से भटक सकता है। एक कुशल अनुवादक वह होता है, जो मूल पाठ का भाव, संदर्भ और लय को बनाए रखते हुए उसे लक्षित भाषा में सहज और प्रभावशाली रूप में ढाल सके।

संस्कृति के अंतर को जानना:

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, और प्रत्येक समाज की अपनी विशिष्ट संस्कृति होती है। दुनिया के विभिन्न कोनों में फैले समाज अपनी परंपराओं, रीति-रिवाजों और सांस्कृतिक विशेषताओं के आधार पर पहचाने जाते हैं। कुछ देशों में, जहाँ जनसंख्या अधिक होती है, या जिनका क्षेत्रफल बड़ा होता है वहाँ एक ही देश के भीतर कई संस्कृतियों का समावेश देखने को मिलता है। साहित्यकार, जो स्वयं समाज का अभिन्न अंग होता है, अपनी रचनाओं में उस समाज की झलक स्वाभाविक रूप से प्रस्तुत करता है।

साहित्य केवल शब्दों का संकलन नहीं, अपितु संस्कृति और सभ्यता का दर्पण होता है। अनेक साहित्यकारों ने अपने लेखन के माध्यम से अपने समाज और उसकी परंपराओं का इतिहास संजोकर रखा है। उनकी कृतियाँ न केवल पाठकों का मनोरंजन करती हैं, बल्कि समाज की पहचान और उसकी सांस्कृतिक विशेषताओं को भी विश्व के समक्ष प्रस्तुत करती हैं। इस प्रकार, साहित्यकार केवल रचनाकार नहीं, बल्कि संस्कृति और परंपराओं का संरक्षक भी होता है। जब कोई साहित्यिक कृति प्रसिद्धि प्राप्त करती है, तो अन्य भाषाओं के साहित्यकार उसे अपने पाठकों तक पहुँचाने के लिए उसका अनुवाद करना चाहते हैं। अनुवाद केवल भाषा का स्थानांतरण नहीं, बल्कि एक संस्कृति से दूसरी संस्कृति के बीच पुल बनाने की कला है। अनुवादक को इस बात की समझ होनी चाहिए कि मूल लेखक की संस्कृति और उसकी अपनी संस्कृति में अंतर हो सकता है। इसलिए, अनुवादित कृति को इस प्रकार प्रस्तुत किया जाना चाहिए कि वह नए पाठकों के लिए भी उतनी ही प्रभावशाली और सार्थक बनी रहे।

सफल अनुवाद वही होता है, जो न केवल मूल कृति के भावों और विचारों को सुरक्षित रखे, बल्कि उसे नए सांस्कृतिक संदर्भ में सहज और आकर्षक बनाए। जब अनुवादक अपने समाज और पाठकों की संवेदनाओं को ध्यान में रखते हुए अनुवाद करता है, तो उसकी कृति व्यापक स्वीकार्यता प्राप्त करती है। एक कुशल अनुवादक भाषा की सीमाओं को मिटाकर साहित्य को वैश्विक मंच प्रदान करता है, और यही उसकी सफलता का प्रमाण होता है।

मुहावरे और कहावतों के प्रयोग में ध्यातव्य बातें:

अनुवाद में मुहावरे और कहावतों का सटीक प्रयोग करना जटिल कार्य होता है, क्योंकि वे भाषा के साथ-साथ संस्कृति से भी गहरे जुड़े होते हैं। यदि इन्हें शब्दशः अनुवाद किया जाए, तो कई बार उनका अर्थ विकृत हो सकता है या संदर्भ से हटकर लग सकता है। उदाहरण के लिए, अंग्रेज़ी कहावत "Kick the bucket" का सीधा हिंदी अनुवाद "बाल्टी को लात मारना" किया जाए, तो इसका कोई सार्थक अर्थ नहीं निकलता, जबकि इसका सही भावानुवाद "मृत्यु को प्राप्त होना" होगा। इसी तरह, हिंदी कहावत "नाच न जाने आँगन टेढ़ा" को अगर ज्यों का त्यों अंग्रेज़ी में बदल दिया जाए, तो अर्थ स्पष्ट नहीं होगा, लेकिन इसका भावानुवाद "A bad workman blames his tools" होगा, जिससे आशय बना रहेगा।

मुहावरे और कहावतों का अनुवाद करते समय यह जरूरी है कि केवल शब्द न बदले जाएँ, बल्कि उनकी भावना और संदर्भ को भी ध्यान में रखा जाए। हर भाषा की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि अलग होती है, इसलिए अनुवादक को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि अनुवादित मुहावरे या कहावतें न केवल अर्थपूर्ण हों, बल्कि लक्षित भाषा के पाठकों के लिए स्वाभाविक भी लगें। यदि किसी भाषा में समानार्थी मुहावरे या कहावत उपलब्ध न हो, तो उसके भाव को स्पष्ट करने के लिए व्याख्यात्मक अनुवाद किया जाना चाहिए, ताकि संदेश की प्रभावशीलता बनी रहे।

स्वचालित (मशीनी) अनुवाद पर पूरी तरह निर्भर न रहें:

स्वचालित अनुवाद सहायक अवश्य है, लेकिन उस पर पूरी तरह भरोसा करना जोखिम भरा साबित हो सकता है, क्योंकि यह संदर्भ को कई बार गलत ढंग से प्रस्तुत करता है और शब्दों का सीधा अनुवाद करने के कारण मूल आशय बदल सकता है। भाषा केवल शब्दों का समूह नहीं होती, बल्कि उसमें संस्कृति, भावनाएँ और सामाजिक संदर्भ भी शामिल होते हैं, जिन्हें मशीनें सटीक रूप से समझने में सक्षम नहीं होतीं। इसके अतिरिक्त, स्वचालित अनुवाद में व्याकरण संबंधी त्रुटियाँ और शैलीगत विसंगतियाँ देखने को मिल सकती हैं, जिससे वाक्य स्वाभाविक और सहज नहीं लगते। जटिल क्षेत्रों जैसे कि विधि, चिकित्सा और तकनीकी विषयों में यह प्रणाली कई बार भ्रम उत्पन्न कर सकती है। साथ ही, इन सेवाओं के उपयोग से डेटा की गोपनीयता और सुरक्षा को भी खतरा हो सकता है। इसलिए, स्वचालित अनुवाद को केवल एक सहायक साधन के रूप में अपनाना चाहिए और महत्वपूर्ण दस्तावेज़ों या संचार के लिए मानव विशेषज्ञों की समीक्षा आवश्यक है।

अनुवादित कृति की समीक्षा:

अनुवाद की गुणवत्ता बनाए रखने के लिए उसकी समीक्षा बेहद जरूरी होती है। चाहे अनुवाद मशीन द्वारा किया गया हो या व्यक्ति द्वारा, इसमें संदर्भगत त्रुटियाँ, व्याकरणिक गलतियाँ और सांस्कृतिक असमानताएँ आ सकती हैं, जिससे मूल भाव में बदलाव संभव है। समीक्षा करने से यह तय किया जाता है कि

अनुवादित सामग्री न केवल अर्थपूर्ण हो, बल्कि भाषा की स्वाभाविकता भी बनी रहे। खासतौर पर कानूनी, चिकित्सा, तकनीकी और साहित्यिक दस्तावेजों में यह प्रक्रिया महत्वपूर्ण हो जाती है, क्योंकि इन क्षेत्रों में की गई मामूली चूक भी गंभीर असर डाल सकती है। साथ ही, अनुवाद को स्थानीय जरूरतों और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के अनुरूप ढालना आवश्यक होता है, जिससे लक्षित पाठक उसे आसानी से समझ सकें। इस कारण, किसी भी अनुवाद को अंतिम रूप देने से पहले उसकी विस्तृत समीक्षा जरूरी है, ताकि उसकी सटीकता और प्रभाव सुनिश्चित किया जा सके।

6.5 सार बिंदु

विद्यार्थी मित्रो! आशा है आपने पूरी इकाई पढ़कर अच्छी तरह समझ ली होगी। अब आप इकाई के प्रत्येक उप-शीर्षक से उसकी आवश्यक बातें एक जगह पर लिख लीजिए। जिससे इस इकाई को सार रूप में याद रखने में आपको सुविधा होगी। हम भी यहां यही काम करने जा रहे हैं। आप अपनी सूची से इस सूची का मिलन कीजिएगा और देखिएगा की कहीं हमसे कुछ छूट तो नहीं गया है, या आपसे कुछ रह तो नहीं गया!

- इस इकाई को पढ़कर हमने अनुवादक की योग्यता के बारे में विस्तार से जानकारी प्राप्त की।
- अनुवाद प्रक्रिया में अनुवादक की क्या भूमिका रहती है इसके बारे में जाना।
- सांस्कृतिक परिवेश का अनुवाद कार्य में क्या महत्व रहता है इसके बारे में जाना।
- सफल अनुवाद किसे कहते है इसके बारे में विस्तृत जानकारी प्राप्त की।
- प्रासंगिक शब्दावली का उपयोग अनुवाद कार्य में कितना आवश्यक है यह जाना।
- मुहावरे और कहावतों का अनुवाद करते समय कौन सी बातों का ध्यान रखना चाहिए इसके बारे में विस्तृत जानकारी प्राप्त की।
- मशीनी अनुवाद पर हमें पूरी तरह निर्भर नहीं रहना चाहिए यह जाना।

6.6 परीक्षा उपयोगी प्रश्नावली

- **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार से दीजिये:**

1)अनुवादक की योग्यता के बारे में विस्तृत चर्चा कीजिए।

(2सफल अनुवाद के तत्वों पर प्रकाश डालिए।

(3सफल अनुवाद किसे कहते है? सविस्तार समझाइए।

- **निम्नलिखित पर टिप्पणी लिखिए**

(1 अनुवादक को स्रोत भाषा का ज्ञान आवश्यक है।

(2 अनुवादित पाठ की समीक्षा क्यों आवश्यक है?

(3 मुहावरे और कहावतों के अनुवाद में ध्यातव्य बातें

(4 अनुवादक को अनुवाद-प्रक्रिया का ज्ञान आवश्यक

(5 मुहावरे और कहावतों से जुड़ी समस्याएँ

- **एकदो वाक्य में उत्तर दीजिए-**

1) स्रोत भाषा किसे कहते है?

2) लक्ष्य भाषा किसे कहते है?

3) 'KICK THE BUCKET' का क्या अर्थ है?

4)'नाच न जाने आँगन टेढ़ा' कहावत का अँग्रेजी अनुवाद क्या होगा?

5) स्वचालित अनुवाद का क्या अर्थ है?

6.7 उपयोगी पाठ्य सामग्री

1. प्रयोजनमूलक हिन्दी, डॉ. लक्ष्मीकांत पाण्डेय, डॉ. प्रमिला अवस्थी
2. अनुवाद विज्ञान, डॉ. भोलानाथ तिवारी
3. अनुवाद की सामाजिक भूमिका, डॉ. रीतारानी पालीवाल
4. अनुवाद और अनुप्रयोग, डॉ. दिनेश चमौला 'शैलेश'

इकाई 7 सर्जनात्मक अनुवाद का एक नमूना 'कंकू'

रूपरेखा

7.1 उद्देश्य

7.2 प्रस्तावना

7.3 लेखक परिचय

7.3.1 जीवन परिचय

7.3.2 कृतित्व परिचय

7.4 अनुवादक का परिचय

7.4.1 जीवन परिचय

7.4.2 कृतित्व परिचय

7.5 सर्जनात्मक अनुवाद का अर्थ

7.6 कंकू कहानी का कथानक

7.7 अनुवाद की सार्थकता

7.8 सार बिंदु

7.9 परीक्षा उपयोगी प्रश्नावली

7.10 उपयोगी पाठ्यसामग्री

7.1 उद्देश्य

विद्यार्थी मित्रो ! आप तृतीय वर्ष बी.ए. के लिए ______हिंदी विषय के पाठ्यक्रम में ______ प्रश्नपत्र की 7वीं इकाई पढ़ने जा रहे हैं, हिंदी भाषा के प्रति आपकी रुचि को और अधिक विकसित और प्रगाढ़ करने के लिए गुजराती एवं हिंदी साहित्य के प्रसिद्ध रचनाकार पन्नालाल पटेल की एक अनुदित रचना इस इकाई में रखी गयी है। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप–

– लेखक पन्नालाल पटेल के जीवन एवं कृतित्व से परिचित हो सकेंगे।

– अनुवादक आलोक गुप्त जीवन एवं कृतित्व से परिचित हो सकेंगे।

– सर्जनात्मक अनुवाद का परिचय प्राप्त कर सकेंगे।

– कंकू कहानी का कथानक जान सकेंगे।

– रचना के अनुवाद की सार्थकता को जानेंगे।

7.2 प्रस्तावना

हिन्दी साहित्य के आधुनिक काल को गद्य काल के नाम से भी जाना जाता है। आधुनिक काल में गद्य की अनेक विधाओं का आविर्भाव हुआ। जिसने हिंदी साहित्य को समृद्ध किया। आधुनिक काल से पूर्व आदिकाल और मध्यकाल में गद्य साहित्य की अपेक्षा पद्य साहित्य अधिक लिखा जाता था। उस समय भी गद्य साहित्य की रचना हुई थी किंतु उसकी मात्रा कम थी। आधुनिक काल में यदि गद्य साहित्य की बात करें तो गद्य की अनेक विधाएं देखने को मिलती है जैसे उपन्यास, नाटक, कहानी, एकांकी, जीवनी, संस्मरण, रेखाचित्र, आत्मकथा, निबंध,पत्र लेखन,रिपोर्ताज राक्षात्कार आदि।

हिंदी साहित्य को इन सभी गद्य रचनाओं ने तो समृद्ध किया ही है इसके अतिरिक्त यदि हम बात करें तो अनुवाद के माध्यम से हिंदी साहित्य वैश्विक साहित्य से जुड़ गया हैं। अनुवाद वह माध्यम बन गया है जो हिंदी भाषा को विश्व की लगभग सभी भाषाओं के साथ जोड़ सके। अन्य भाषाओं के साहित्य का अनुवाद हिंदी में होता है जिस से हम केवल भारत ही नहीं अपितु समग्र विश्व के साहित्य एवं संस्कृति से परिचित हो सकते है। तो साथ ही साथ हिंदी साहित्य की कई प्रसिद्ध पुस्तकों का विदेशी भाषाओं में अनुवाद हुआ है, जिससे वैश्विक स्तर पर हिंदी साहित्य का प्रचार हुआ है। जैसे गोदान,मधुशाला,कामायनी, सूरत का सातवां घोड़ा, मृत्युंजय, राग दरबारी आदि।

इसी तरह जिस प्रकार विश्व साहित्य का हिंदी में अनुवाद हुआ उसी प्रकार भारत के विभिन्न राज्य की अनेक भाषाओं के साहित्य का भी हिंदी में अनुवाद हुआ जो बहुचर्चित रहा। आज हम इसी ही एक अनुदित रचना की बात करने वाले है। जिसका गुजराती भाषा से हिंदी भाषा में अनुवाद हुआ है। जिसके लेखक हैं गुजरती गद्य साहित्य के सुप्रसिद्ध साहित्यकार पन्नालाल पटेल। उनकी जिस रचना की बात आज हम करने वाले है उसका नाम है 'कंकू'।

'कंकू' कहानी का हिंदी भाषा में सर्जनात्मक अनुवाद किया प्रो. आलोक गुप्त ने। जिसकी आगे हम विस्तार से चर्चा करेंगे।

7.3 लेखक परिचय

7.3.1 जीवन परिचय

पन्नालाल पटेल का जन्म गुजरात एवं राजस्थान की सीमा पर स्थित मांडली नामक गाँव में हुआ था। यह गाँव डूंगरपुर जिल्ले के सीमलवाड़ा तालुके में स्थित हैं। उनके पिता का नाम 'नानालाल' था। वे नानशा के नाम से भी जाने जाते थे। पन्नालाल के पिता गाँव के लोगों को रामायण एवं महाभारत का पाठ पढ़कर सुनाते थे, तथा प्रतिदिन सुबह वे 'ओखाहरण' की कथा भी गाकर सुनाया करतें थें। अतः लोग उन्हें 'भगत' (भक्त) कहकर पुकारते थे। उनका घर 'विद्या का घर' नाम से प्रसिद्ध था।

पन्नालालजी की माँ का नाम हीराबा था । पिता की मृत्यु के पश्चात उनकी माँ हीराबा ने ही बच्चों का पालन-पोषण किया था। सभी भाइयों में पन्नालाल सबसे छोटे थे। अतः उन्हे माँ का विशेष स्नेह मिला था।लोग उन्हें 'माँ का लाडला' कहकर पुकारते थें। वे अपना अधिक समय माँ के साथ ही बिताते थें। माँ अपना काम करती जाती और साथ में पन्नालाल को कहानियां सुनाया करती। लेखक ने अपनी माँ से 'छप्पनिया अकाल' की अनेक बातें सुनी थीं। उन्हीं स्मरणों के आधार पर उन्होंने 'मानवी नी भवाई' नामक उपन्यास में अकाल का जीवंत चित्रण किया।

पन्नालालजी का जन्म ग्राम्य परिवेश में हुआ था । इसी कारण उनके साहित्य में हमे आंचलिकता के दर्शन होते हैं । उनके गाँव का प्राकृतिक सौंदर्य भी अद्‌भुत था। वृक्ष-लताएँ, जँगल, हरी-भरी पहाड़ियां तथा पास ही में बहती वात्रक नदी, इन सभी दृश्यों के बीच पन्नालाल घुमा करते थें। उनकी रचनाओं में प्रकृति का जो वर्णन चित्रित है, वह इसी परिवेश का प्रतिबिम्ब है।

शिक्षा एवं व्यवसाय:

उन्होंने अपनी प्राथमिक शिक्षा मांडली में ही ली थी। उनकी गाँव की पाठशाला बंध हो जाने के कारण आगे की शिक्षा उन्होंने (मेघरज)# और ईडर से ली। किन्तु घर की आर्थिक स्थिति खराब होने के कारण वे बहुत आगे तक नही पढ़ पाए। जब वे ईडर की बोर्डिंग में थे, तब उनकी मुलाकात उमाशंकर जोशी से भी होती है।

उनका जीवन संघर्षमय रहा। उन्होंने अपने जीवन के संघर्ष के दिनों को 'वासंती दिन' कहा है। घर की जिम्मेदारियां उठाने के लिए उन्हें अनेक संघर्षो का सामना करना पड़ा। उन्होंने किसी भी काम को छोटा नही समजा।उन्होंने गाँव आकर एक कपड़े की दुकान भी खोली पर वह कुछ खास चली नही। डूंगरपुर के पास एक शराब की भट्ठी में भी काम किया। अहमदाबाद में उन्होंने अनेक जगहों पर नौकरी की थी। एक शेठजी के यहाँ इलेक्ट्रिसिटी कंपनी में वे ओयलमैन के रूप में काम करते थे, घर पर रसोई का काम करते थे और साथ ही उनके बच्चों को भी पढ़ाना पड़ता था। पन्नालालजी ने कपड़े की दुकान में भी काम किया। एक शेठ के यहा झाड़ू-पोछा लगाने से लेकर क्लार्क तक के अनेक काम उन्होंने पूरी निष्ठा से किए। इस प्रकार उन्होंने अपने परिवार के पालन-पोषण के लिए अनेक प्रकार के संघर्षो का सामना किया।

किशोरावस्था के सहपाठी श्री उमाशंकर जोशी बहुत बड़े कवि बन गए है यह जानकर पन्नालाल उन्हें छंद में पत्र लिखते है। उमाशंकर जोशी ने पत्र का प्रत्युत्तर भी दिया और पन्नालालजी को लिखते रहने की प्रेरणा भी दी। उन्होंने कहानी लिखने का प्रयत्न किया। 'शेठ की शारदा' नाम से एक

कहानी लिखकर उसे फुलछाब दैनिक में प्रकाशन हेतु भेजी, और झवेरचंद मेघाणी जी ने सहर्ष उस कहानी को प्रकाशित भी किया।

मेघाणी जी ने पन्नालाल के पास फुलछाब के लिए एक भेटपुस्तक लिखने का प्रस्ताव रखा। जिसके परिणाम स्वरूप पन्नालाल की कलम से मात्र बीस-बाईस दिनों की सीमित अवधि में ही 'मळेला जीव' श्रेष्ठतम रचना का निर्माण हुआ।

समय के साथ साथ साहित्य जगत में पन्नालाल पटेल को एक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त हुआ। 1985 में उनके प्रसिद्ध उपन्यास 'मानवी नी भवाई' को भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त हुआ। इसके उपरांत उनको रणजीतराम सुवर्ण चंद्रक भी प्राप्त हुआ।

7.3.1 कृतित्व परिचय

गुजराती भाषा के एक बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न साहित्यकार एसे श्री पन्नालाल पटेल का साहित्य-सृजन एक विशाल सागर जैसा है। वे मूल रूप से एक उपन्यासकार के रूप में प्रसिद्ध है। उनको ज्ञानपीठ पुरस्कार भी उनके उपन्यास के लिए ही मिला था। उन्होंने उपन्यास विधा को एक नई दिशा प्रदान कि। पन्नालाल के उपन्यासों के विषय वैविध्यपूर्ण रहे है। ग्राम्य प्रदेश के निम्न और मध्यम वर्ग के लोग उनके उपन्यास के केंद्रीय पात्र है।

प्रमुख उपन्यास:

उनके प्रमुख उपन्यासों में, 'वळामणा','मानवी नी भवाई','मळेला जीव','भाँगया ना भेरू','घम्मर वलोणु','मनखावतार','नछुटके','यौवन',सुरभि',फकीरों',अमे बे बहेनो','अल्लड़ छोकरी','आंधी आषाढ़ नी','पार्थ ने कहो चढ़ावे बाण','रामे सीता ने मार्या जो','देवयानी','ययाति','जेणे जीवी जाणयू','उर्वशी-पुरुरवा', 'जिंदगी संजीवनी' आदि समाविष्ट है।

पन्नालाल के कहानी-सर्जन की यदि बात करे तो, ग्राम्य परिवेश, ग्राम्य भाषा,ग्राम्य संस्कृति के साथ सहज रूप से मानव मन की संवेदनाओं को व्यक्त करते हुए उन्होंने बहुत ही मार्मिक कथावस्तु के साथ कहानियों का निर्माण किया है। उनकी कहानियों में प्रेम,विरह,दाम्पत्य-जीवन,ग्राम्य-चेतना,परिवार जैसे अनेक पहलुओं का चित्रण हुआ है।

प्रमुख कहानी-संग्रह:

'सुख-दुख ना साथी','जिंदगी ना खेल','लख चौरासी','साचा समणा','वात्रक ने काँठे', 'पन्नालाल नो वार्ता वैभव','औरता','पारेवडा','पन्नालाल नी श्रेष्ठ वार्ताओं', 'मनना मोरला','पानेतर ना रंग','चितरेली दिवालो','मोरली ना मूंगा सूर', 'माळो','वट नो कटको' आदि समाविष्ट है।

उपन्यास एवं कहानी के उपरांत उन्होंने नाटक, एकांकी एवं बाल साहित्य भी लिखा है। 'जमाइराज' उनका एकांकी संग्रह हैं। उनका बाल साहित्य भी उत्कृष्ट है। 'अलप-जपल' और 'अलक-मलक' उनके आत्मकथात्मक संस्मरण ग्रंथ है। इस प्रकार उनका साहित्य सृजन बहुत ही विस्तृत है। वे गुजराती साहित्य के एक अपूर्व साहित्य-सर्जक है

•बोध प्रश्न

1)पन्नालाल पटेल का जन्म कहा हुआ था?

2) 'शेठ की शारदा' कहानी किस दैनिक में प्रकाशित हुई थी।

3)पन्नालाल पटेल को ज्ञानपीठ पुरस्कार किस कृति के लिए मिला था?

4)पन्नालाल पटेल के पिता का नाम क्या था?

5) पन्नालाल पटेल के एकांकी संग्रह का नाम क्या है?

7.4 अनुवादक का परिचय

7.4.1जीवन परिचय

कंकू कहानी के अनुवादक प्रो. आलोक कुमार गुप्त का जन्म 17 नवंबर , सन् 1956 ई. में सिरसागंज ,जिला फिरोजाबाद, उत्तर प्रदेश में हुआ था। उनके पिताजी का नाम छोटेलाल गुप्त एवं माताजी का नाम रामश्री देवी था। उनकी आरंभिक शिक्षा सिरसागंज में हुई। प्रो. आलोक कुमार गुप्त ने अपने जीवन में अनेक उच्चस्तरीय पदों को ग्रहण कर उन्हे विभूषित किया। उनकी बात करें तो
अवकाश प्राप्त वरिष्ठ प्रोफेसर एवं पूर्व अध्यक्ष, हिंदी अध्ययन केंद्र, पूर्व अधिष्ठाता(डीन), भाषा, साहित्य एवं अध्ययन संस्थान एवं पूर्व कुलसचिव (रजिस्ट्रार) गुजरात केंद्रीय विश्वविद्यालय, गांधीनगर आदि पदों पर अपनी सेवा दी। उनको स्नातक एवं स्नातकोत्तर कक्षाओं में 40 वर्ष का शैक्षणिक अनुभव रहा है। कई प्रतिष्ठित साहित्यिक पत्रिकाओं में उनकी कविताएं प्रकाशित हो चुकी है।

7.4.2 कृतित्व परिचय:

शोध रूचि एवं विशेष अध्ययन : आधुनिक साहित्य, तुलनात्मक साहित्य, भारतीय साहित्य एवं अनुवाद अध्ययन

प्रकाशित ग्रंथ समीक्षा – 5

साहित्य के सरोकार,

रचना और आलोचना का वर्तमान परिदृश्य,

साहित्यनो सामाजिक संदर्भ,

मुक्तिबोध : युगचेतना और अभिव्यक्ति,

साहित्य : केन्द्र और परिधि

अनुवाद -गुजराती से हिंदी में - 8

सरस्वती चंद्र, खंड-1 (गोवर्धनराम त्रिपाठी)

सरस्वती चंद्र, खंड-4 पूर्वार्द्ध (गोवर्धनराम त्रिपाठी)

सरस्वती चंद्र, खंड-4 उत्तरार्द्ध (गोवर्धनराम त्रिपाठी)

प्रेमतीर्थ (कहानी संग्रह), नरेन्द्र मोदी,

गोकुल-मथुरा-द्वारिका (उपन्यास त्रयी), रघुवीर चौधरी,

धूल पर पदचिह्न , चन्द्रकांत शेठ,

आगनी हसी (रामदरश मिश्र),

आधुनिक भारतीय कविता संचयन

भारतीय साहित्यना निर्माता गुरू गोविंद सिंह,

भारतीय साहित्यना निर्माता अमृतलाल नागर,

चूंटेली कविता : विश्वनाथ प्रताप तिवारी

संपादित ग्रंथ : 13

21वीं सदी के दो दसकों की गुजराती कहानी,

गांधी और 1980 के बाद का हिंदी,

भारतीय साहित्य एवं संस्कृति: अंत संवाद,

गद्य संचयन , वाणी प्रकाशन ,

भारतीय साहित्य की अवधारणा और स्वरूप,

समकालीन हिन्दी कविता, गद्य प्रभा, कथा यात्रा,

छायावादोत्तर हिन्दी कविता,

श्रेष्ठ निबंध, गुजरात का स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी लेखन (डॉ. रघुवीर चौधरी के साथ)

आधुनिक हिन्दी कविता

पुरस्कार:

1. डॉ. रामविलास शर्मा आलोचना सम्मान 2006
2. हिंदी गौरव पुरस्कार 2018- हिंदी साहित्य अकादमी, गांधीनगर
3. साहित्य अकादमी अनुवाद पुरस्कार 2019,साहित्य अकादमी, दिल्ली

•बोध प्रश्न

1)आलोक गुप्त का जन्म कहा हुआ था?

2) आलोक गुप्त की माता का नाम क्या था?

3) आलोक गुप्त किस विश्वविद्यालय के कुलसचिव रहे थे?

4)आलोक गुप्त के संपादित ग्रंथ कितने है?

5)आलोक गुप्त को साहित्य अकादमी अनुवाद पुरुस्कार कब मिला था?

7.5 सर्जनात्मक अनुवाद का अर्थ:

सर्जनात्मक अनुवाद को समझने के लिए अनुवाद के कुछ मुख्य प्रकार की हम चर्चा करेंगे। वैसे तो अनुवाद के कई प्रकार होते है जिसमें मुख्य रूप से तीन प्रकार हैं:

1. शाब्दिक अनुवाद : इसमें शब्दों का सीधे-सीधे एक भाषा से दूसरी भाषा में अनुवाद किया जाता है। इसमें व्याकरण और वाक्य रचना का पालन किया जाता है, लेकिन कभी-कभी यह अनुवाद सही अर्थ नहीं दे पाता है।

इसमें वाक्य की संरचना और भावनात्मक अर्थ का ध्यान कम रखा जाता है और शब्दों का सीधा अनुवाद किया जाता है। उदाहरण:

– अंग्रेजी से हिंदी:

अंग्रेजी वाक्य: "I have a book."

शाब्दिक अनुवाद: "मैं पास एक पुस्तक है।"

सही अनुवाद: "मेरे पास एक पुस्तक है।"

शाब्दिक अनुवाद में वाक्यों की संरचना और व्याकरण की त्रुटियां हो सकती हैं, इसलिए इसे संपूर्ण अनुवाद मानना सही नहीं होता।

2. भावानुवाद : इसमें शब्दों के बजाय भाव का अनुवाद किया जाता है। इसमें अनुवादक मूल पाठ के भाव या विचार को ध्यान में रखते हुए उसे दूसरी भाषा में प्रस्तुत करता है, जिससे पाठक को सही अर्थ समझ में आए। उदाहरण:

मूल वाक्य
"उसके शब्दों में जादू है।"

शाब्दिक अनुवाद:

"There is magic in his words."

भावानुवाद:

"His words have a magical charm."

3.सर्जनात्मक अनुवाद: सर्जनात्मक अनुवाद में अनुवादक केवल भावों का अनुवाद नहीं करता, बल्कि रचनात्मक रूप से नए संदर्भ, विचार या शैली को प्रस्तुत करता है। यहाँ अनुवादक को और अधिक स्वतंत्रता होती है, बस पाठ का उद्देश्य और सृजनात्मकता बनाए रखी जाए। उदाहरण:

"Every cloud has a silver lining."

साधारण अनुवाद: "हर बादल की एक चांदी जैसी किनारी होती है।"

सर्जनात्मक अनुवाद: "हर कठिनाई में आशा की एक किरण छिपी होती है।"

सर्जनात्मक अनुवाद का उद्देश्य किसी पाठ या वाक्य का अर्थ और भावना बरकरार रखते हुए, उसे अधिक प्रभावी और सांस्कृतिक रूप से प्रस्तुत करना होता है।

•बोध प्रश्न

1.अनुवाद को अंग्रेजी में क्या कहते है?

2. शाब्दिक अनुवाद किसे कहते है?

3. भावानुवाद किसे कहते है?

4. सर्जनात्मक अनुवाद का उदाहरण दीजिए।

5. सर्जनात्मक अनुवाद किसे कहते हैं?

7.6 कंकू कहानी का कथानक:

कंकू कहानी की शुरुआत, 'न करे नारायण पर यदि मैं मर जाऊं तो तू अपना जीवन मत बिगाड़ना... किसी अच्छे आदमी का घर ढूंढ लेना...।' से होती है। जो कंकू के पति खुमा की मृत्यु का सूचक है।

'कंकू' अपने बेटे हीरिया के पालन-पोषण के लिए शादी न करने का निर्णय लेती है और खुमा की जिंदगी भर का कर्ज अकेले ही चुकाती है। गाँव के कई पुरुष उससे शादी करना चाहते थे, किंतु समय बीतने और कंकू के दृढ़ निश्चय के साथ, सभी की उम्मीदें टूट गईं। इस कठिन समय में, कंकू को पास के गाँव के शेठ

'मलकचंदकाका' ने आर्थिक रूप से सहायता की। कंकू और खूमा का खाता उनके पास था और खुमा की मृत्यु के बाद, उन्होंने कंकू को हल-खेत-बेल को जोड़ने के लिए धन भी प्रदान किया। कंकू के विधवा जीवन का एक ही लक्ष्य था कि हीरिया कल बड़ा हो जायेगा और यह दुख खुशी में बदल जाएगा।'

कहानी 'कंकू' में कंकू के अलावा एक मुख्य पात्र है 'मलकचंदशेठ' का। मलकचंदशेठ खुद चालीस साल के होने के बावजूद पैंतालीस के दिखते हैं। मलकचंदशेठ ने दो बार शादी की परंतु दोनों बार असफल रहे इसलिए वह निःसंतान रहे। वह अपनी बूढ़ी मां के साथ रहते है। कंकू और उसकी खुमारी के प्रति विशेष प्रेम के कारण वे उसकी मदद करने में कभी नहीं हिचकिचाते। इतना ही नहीं, जब सेठ कंकू को शादी के लिए जोड़ा खरीदते समय अपने लिए पैसे बचाते हुए देखता है, तब सेठ ने उसकी पसंद के कपड़े निकाल दीये और कंकू के लिए साड़ी तो उसके मना करने पर भी महंगी बांध दी। लेकिन जैसे-जैसे कंकू की सुंदरता आगे बढ़ती है यह एहसास एक नया रूप ले लेता है।

कंकु के प्रति इस आकर्षण को मलकचंदशेठ ने बहुत छुपाया हालांकि वह प्रयत्न करता है, किंतु कंकू की नजरें कुछ संदिग्ध जरूर होती हैं। फिर वह संदेह को दूर करते हुए मलकचंदशेठ से कहती है, "मलकचंदकाका! तुम तो देवता आदमी हो, नहीं तो इतने कर्ज़ के बाद कौन औरत-जात को और कर्ज़ देता है?" मलकचंदशेठ के सुझाव पर कंकू अपने बेटे हीरिया की शादी धूमधाम से करने की तैयारी करती है। उस तैयारी के हिस्से के रूप में, कंकू, हीरिया की शादी से एक दिन पहले, मलकचंदसेठ से पैसे लेने के लिए वहां गयी, दुकान पर पैसे नहीं थे, तो वे दोनों मलकचंदसेठ के घर के लिए निकल गए।

कंकू से बात करते समय, मलकचंदशेठ एक बिच्छू की तरह उलझन महसूस करता है और इतनी सुंदर कंकू की किस्मत को हांफते हुए देखता रहता है। आज कंकू को भी कई सालों में पहली बार अकेलापन महसूस हो रहा है। कोठी जाकर पैसे निकालते समय दोनों अपनी भावना और संवेदना में अपने होश खो बैठते हैं। और गलत कदम उठा लेते है। इसके बाद कंकू अपना मुंह छुपाती गांव तक पहुंचती है और अपने बेटे की शादी के कामों में लग जाती है। लेकिन उसके चेहरे पर खुशी की झलक नहीं दिखती।

गांव की अनुभवी वृद्ध महिला 'गला डामोर की बहु' को कंकू के शरीर में बदलाव का पता हीरिया की शादी के चौथे-पांचवें महीने बाद चलता है। गांव के सभी लोग इस बच्चे के पिता का नाम जानने की कोशिश करते हैं, लेकिन कंकु उसके बारे में एक शब्द नहीं बोलती।

गांव के बुजुर्गों के आग्रह पर और बेटे की खातिर, वह 'कालू' जैसे विधुर और काले व्यक्ति से शादी कर लेती है। इतनी सुंदर और बुद्धिमान कंकू का पति बनना कालू को स्वर्ग जैसा सुखद लगता है। रातोंरात हुई इस शादी से गांव के कई पुरुष हैरान हैं, कई तरह की टिप्पणियां किए जा रहे हैं।

कंकु और कालू के घर में बेटे के जन्म के बाद, गला डामोर की बहू बच्चे का सूक्ष्मनिरीक्षण करती हुई देखती है और महसूस करती है कि बच्चे का पिता मलकचंदशेठ हैं। तभी तो पन्नालाल पटेल की कहानी 'कंकू' में वृद्धा अंत में कहती हैं, नासपीटे मलका..."अरे मलका! यह तो लाखों में एक कंकू जैसी औरत मिली; नहीं तो..."
और यहाँ कहानी समाप्त होती है।

•बोध प्रश्न

1.कहानी की नायिका का नाम क्या है?

2. कंकू के बेटे का नाम क्या है?

3. कंकू की दूसरी शादी किस से होती है?

4. बच्चे के बारे में सबसे पहले किसे पता चला?

5. सेठ का नाम क्या था?

7.7 अनुवाद की सार्थकता:

अनुवाद कार्य अति कठिन कार्य हैं। किसी कृति का सर्जन करना और किसी कृति का अनुवाद करना इन दोनों में से अधिक कठिन कार्य निश्चित रूप से कृति के अनुवाद का ही रहेगा। क्योंकि कृति के सर्जन में रचनाकार को पर्याप्त स्वतंत्रता मिलती हैं। रचनाकार किसी भी विषय पर लिख सकता है या अपने विचार व्यक्त कर सकता हैं। अपनी रचना में किसी विषय पर अधिक लिखना किसी विषय पर कम लिखना यह उसके अधिकार में होता हैं। परंतु यह अधिकार अनुवादक को नहीं मिलता।

अनुवादक चाहकर भी मूल कृति में अपने विचारों का हस्तक्षेप नहीं कर सकता। हा मूल कृति में उसके विचारों के अनुरूप बात की गई हो तो सर्जनात्मक अनुवाद के माध्यम से वह अपने विचारों की अभिव्यक्ति कर सकता हैं। साहित्य में इसी कारण अनुवाद के कई प्रकार देखने को मिलते हैं। यदि किसी कृति के अनुवाद में शब्दानुवाद से काम नहीं चल रहा तो भावानुवाद से काल चलाना पड़ता हैं और यदि भावानुवाद से भी

काम न चल सके तो सर्जनात्मक अनुवाद के माध्यम से कृति का अनुवाद किया जाता हैं। क्योंकि तब ही किसी भी कृति का अन्य भाषा में सार्थक अनुवाद हो पाता हैं।

कंकू कहानी का भी अनुवादक द्वारा सर्जनात्मक अनुवाद किया गया है क्योंकि मूल रचना गुजराती भाषा में लिखी गई है और अनुवाद हिन्दी भाषा में किया गया हैं। अब मूल पाठ के लेखक ने गुजरात के समाज और संस्कृति के अनुरूप भाषा का प्रयोग किया है। जब की अनुवादक उसे हिंदी भाषा में अनुवादित करेगा तो वहा के समाज और संस्कृति का रूप भिन्न हो सकता हैं। इसी कारण अनुवादक को मूल पाठ के मुहावरे, कहावते आदि का अनुवाद करते समय
विशेष ध्यान रखना होता हैं।

कुछ कुछ शब्द या वाक्य ऐसे होते है जिसका ज्यों का त्यों अनुवाद नहीं हो सकता। जैसे कंकू जब मलकचंद सेठ के पास पैसे लेने जाती है तब का एक संवाद है। मलकचंद कंकू से पूछता है– કંકુ ચાર વસિોએ નહિ થિાય? ('कंकू, 'चार विसोए नहीं थाय?) यानी की चार बार बीस यानी अस्सी रूपये से नहीं चलेगा? अब ऐसे शब्द का चलन गुजराती भाषा में देखने को मिलता है जबकि हिंदी भाषा में इस प्रकार नहीं कहा जाता। इसी कारण अनुवादक ने भी सरल भाषा में ही लिखा है कि 'कंकू अस्सी रूपये से नहीं चलेगा?
वही आगे कहानी में फिर एकबार यही उल्लेख होता है। जिसमे છ વસિું પૂરા કરતાં પૂછ્યું : ' ગણું વધારે'
(छ विसु पूरा करता पुछ्यु : 'गणु वधारे?)' छ वीसु यानी छह बार बीस यानी सो रूपये। तो यहां भी अनुवादक ने सरलता अपनाते हुए सो रुपये ही लिखा है।
इस प्रकार की परिस्थिति में अनुवादक सदा सरलता का ही मार्ग चुनता है। ताकी पाठक को समझने में आसानी रहें।

अनुवादक ने गुजराती भाषा के लोकगीत की पंक्तियों का भी हिंदी अनुवाद किया है जैसे–

'જરા ધીમે પગ મેલ ધીમે'

" ज़रा धीरे से पैर रख धीरे...।"

और दूसरी पंक्तियां है –

'માતાના બોલ વીરે વસિારી મેલ્યા,

સાસુના બોલ વા'લા લાગ્યા,

હીરાભાઈ વીરા! મે'લોમાં રે'જો.'

" माता के बोल भाई भूल गये

सास के बोल मीठे लागे...

हीरा भाई, वीरा महलों में रहना...।"

इस प्रकार गुजराती भाषा के लोकगीत का अनुवाद हिंदी भाषा में इस प्रकार से करना भी एक अच्छे अनुवादक के गुण है।

कहानी में कुछ स्थान पर गुजरती कहावत का अनुवाद करना लेखक के लिए कठिन हो जाता है तो लेखक उसके स्थान पर अन्य प्रचलित कहावत का उपयोग करता है।
जैसे कहानी में एक जगह पर एक बात चलती है की
એ જ અંધારી રાતે ગામના બેચાર બુઢ્ઢા ભેગા થયા અને એકમેકના 'કાન કરડી ખાતા' વાત કરવા લાગ્યા.
इसका अनुवाद कुछ इस प्रकार से किया गया है–
उसे अँधेरी रात को गांव के कुछ बूढ़े एकत्र हुए और कुछ 'घुसपुस करने लगे'।
तो इस प्रकार गुजराती ग्रामीण परिवेश की भाषा में लिखी गई इस कहानी का हिंदी अनुवाद अति कठिन कार्य है और इस कार्य में पूर्णतः सफलता प्राप्त करना तो संभव ही नहीं। फिर भी अनुवादक द्वारा इस कठिन कार्य को उचित न्याय दिया गया है। अनुवाद के बाद जिस प्रकार गुजराती कहानी में ठेठ ग्रामीण परिवेश का वर्णन है वहां तक भले ही ना पहुंच पाएं फिर भी यह अनुदित रचना कई हद तक उसे न्याय दिलाने में सार्थक सिद्ध हुई है।

•बोध प्रश्न

1) पन्नालाल पटेल की कहानी कंकू मूल किस भाषा में लिखी गई थी?

2) कंकू कहानी का अनुवाद किस प्रकार का है?

3) छ विसु का अर्थ कितना होता है?

4) कंकू कहानी में किस परिवेश को दिखाया गया है?

5) 'જરા ધીમે પગ મેલ ધીમે' का हिंदी अनुवाद क्या होगा?

7.8 सार बिंदु:

विद्यार्थी मित्रों! आशा है आपने पूरी इकाई पढ़कर अच्छी तरह समझ ली होगी। अब आप इकाई के प्रत्येक उपशीर्षक से उसकी आवश्यक बातें एक जगह पर लिख लीजिए, जिससे इस इकाई को सार रूप में याद रखने में आपको सुविधा होगी। हम भी यहां यही काम करने जा रहे हैं। आप अपनी सूची से इस सूची

का मिलान कीजिएगा और देखिएगा की कहीं हमसे कुछ छूट तो नहीं गया है, या आपसे कुछ रह तो नहीं गया!

– 'कंकू' कहानी के लेखक पन्नालाल पटेल संवेदनशील साहित्यकार थे।

– कहानीकार ने अपनी कहानी में भारतीय समाज के ठेठ ग्रामीण परिवेश का चित्रण किया है।

– कंकू कहानी में लेखक ने यथार्थवादी शैली का सफलतापूर्वक निर्वहन किया है।

– प्रो. आलोक गुप्त ने सफल अनुवादक की भूमिका निभाई हैं।

– इस कहानी में मुख्य पात्र कंकू है। साथ ही मुख्य पुरुष पात्र के रूप में सेठ मलकचंद को देख सकते है।

– रचना का गुजराती भाषा से हिन्दी भाषा में सर्जनात्मक अनुवाद देखने को मिलता है।

–अनुवादक द्वारा रचना का सफल अनुवाद हुआ है।

– 'गूंगे सूर बांसुरी के' कहानी संग्रह की 'कंकू' कहानी सर्जनात्मक अनुवाद का श्रेष्ठ नमूना है।

– 'कंकू' कहानी की नायिका कंकू पाठक के मन में विशेष छाप छोड़ती है।

– कहानी की भाषा सरल, सटीक एवम् प्रवाहमय हैं।

7.9 परीक्षा उपयोगी प्रश्नावली

•निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार से दीजिये:

1.पन्नालाल पटेल के व्यक्तित्व और कृतित्व पर प्रकाश डालिए।

2.कंकू कहानी का कथानक लिखिए।

3. सर्जनात्मक अनुवाद की सार्थकता के रूप में कंकू पर चर्चा कीजिए।

•निम्नलिखित पर टिप्पणी लिखिए:

1.कंकू के पात्र का चरित्र चित्रण

2.अनुवादक के रूप में आलोक गुप्त

3.'मलकचंदशेठ’

4. सर्जनात्मक अनुवाद

5.अनुवाद के प्रकार

7.10 उपयोगी पाठ्यसामग्री

1.पन्नालालनी श्रेष्ठ वार्ताओ (गुजराती भाषा में)

2. गूंगे सूर बांसुरी के

3. जिंदगी संजीवनी (आत्मकथा – पन्नालाल पटेल)

4.

યુનિવર્સિટી ગીત

સ્વાધ્યાયઃ પરમં તપઃ
સ્વાધ્યાયઃ પરમં તપઃ
સ્વાધ્યાયઃ પરમં તપઃ

શિક્ષણ, સંસ્કૃતિ, સદ્‌ભાવ, દિવ્યબોધનું ધામ
ડૉ. બાબાસાહેબ આંબેડકર ઓપન યુનિવર્સિટી નામ;
સૌને સૌની પાંખ મળે, ને સૌને સૌનું આભ,
દશે દિશામાં સ્મિત વહે હો દશે દિશે શુભ-લાભ.

અભણ રહી અજ્ઞાનના શાને, અંધકારને પીવો ?
કહે બુદ્ધ આંબેડકર કહે, તું થા તારો દીવો;
શારદીય અજવાળા પહોંચ્યાં ગુર્જર ગામે ગામ
ધ્રુવ તારકની જેમ ઝળહળે એકલવ્યની શાન.

સરસ્વતીના મયૂર તમારે ફળિયે આવી ગહેકે
અંધકારને હડસેલીને ઉજાસના ફૂલ મહેંકે;
બંધન નહીં કો સ્થાન સમયના જવું ન ઘરથી દૂર
ઘર આવી મા હરે શારદા દૈન્ય તિમિરના પૂર.

સંસ્કારોની સુગંધ મહેંકે, મન મંદિરને ધામે
સુખની ટપાલ પહોંચે સૌને પોતાને સરનામે;
સમાજ કેરે દરિયે હાંકી શિક્ષણ કેરું વહાણ,
આવો કરીયે આપણ સૌ
ભવ્ય રાષ્ટ્ર નિર્માણ...
દિવ્ય રાષ્ટ્ર નિર્માણ...
ભવ્ય રાષ્ટ્ર નિર્માણ

○

DR. BABASAHEB AMBEDKAR OPEN UNIVERSITY
(Established by Government of Gujarat)
'Jyotirmay' Parisar,
Sarkhej-Gandhinagar Highway, Chharodi, Ahmedabad-382 481
Website : www.baou.edu.in